॥ओ३म्॥

# आयुर्वेद जड़ी-बूटी रहस्य

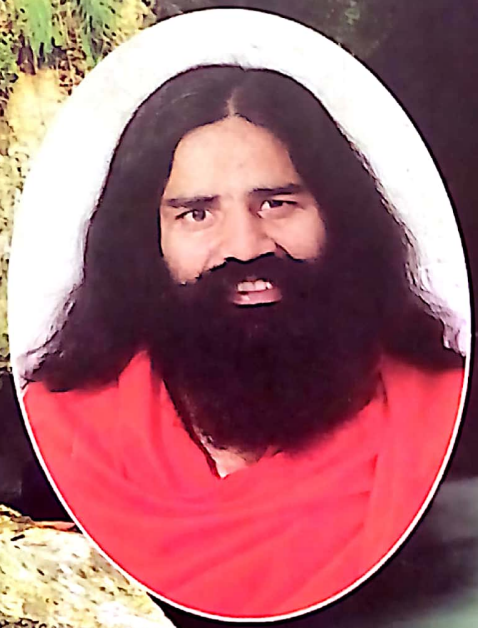



आचार्य बालकृष्ण

Scanned by CamScanner

| जीरा श्वेत | |
|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | *Cuminum cyminum* L. |
| कुलनाम | Apiaceae |
| अंग्रेजी नाम | Cumin seed |
| संस्कृत | जीराक, जरण, अजाजी, दीर्घ जीरक |
| हिन्दी | सफेद जीरा, जीरा |
| गुजराती | जीरू |
| मराठी | जिर्रे |
| बंगाली | जीरा |
| फारसी | जीरए सफेद |
| तेलगु | जीलकरी |
| अरबी | कम्मून, अव्यज |

| जीरा स्याह | |
|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | *Cuminum cyminum* L. |
| कुलनाम | Apiaceae |
| अंग्रेजी नाम | Black caraway |
| संस्कृत | कृष्णा जीरक, कश्मीर जीरक |
| हिन्दी | स्याह जीरा |
| गुजराती | शाह जीरा |
| मराठी | शाह जिर्रे |
| फारसी | जीरए स्याह |
| तेलगु | शीमा जिलकर |
| अरबी | कमून, अरमनी |
| तमिल | शिमाई, शिरगम |

## परिचय

वर्ण भेद से जीरा, श्वेत और श्याम दो प्रकार का होता है। सफेद जीरे से सब परिचित हैं क्योंकि इसका प्रयोग मसाले के रूप में किया जाता है। कृष्ण जीरा भी इसी की भांति होता है। कार्वी और स्याह जीरे में इतनी समानता होती है कि इनमें भेद करना कठिन होता है। स्याह जीरा महंगा होने की वजह से इसमें अन्य कई प्रजातियाँ और मिला दी जाती है।

## बाह्य–स्वरूप

जीरक और कारवी के क्षुप सौंफ के समान, पुष्प श्वेत रंग के क्षत्रकों में लगते हैं जो पकने पर फलों में बदल जाते हैं। कृष्ण जीरा की जड़ कन्दाकर होती है। जीरा की खेती समस्त भारत, विशेषकर उत्तर प्रदेश, राजस्थान और पंजाब में की जाती है। कृष्ण जीरा, गढ़वाल, कुमाँऊ, कश्मीर, अफगानिस्तान और व ब्लूचिस्तान में 6,000 से 11,000 फुट की ऊंचाई तक पाया जाता है।

## रासायनिक संघटन

सफेद जीरे में अजवायन की तरह एक उड़न शील तेल, खनिज द्रव्य तथा विटामिन पाये जाते हैं। काले जीरे में भी उड़नशील तेल पाया जाता है। जिसके कारण इसकी गंध तीक्ष्ण होती है। कार्वी में उड़नशील तेल, स्थिर तेल और राल होती है।

## गुण–धर्म

तीनों प्रकार के जीरे, रूखे चरपरे, उष्ण, दीपन, हल्के, ग्राही, पित्त–कारक मेध्य, गर्भाशय को शुद्ध करने वाले, ज्वरनाशक, पाचक, वीर्यवर्धक, बलकारक, रूचिकारक, कफनाशक, चक्षुष्य और आध्मान, गुल्म, वमन तथा अतिसार को नष्ट करने वाले हैं।[1]

### सफेद जीरा

कड़वा, ग्राहि, पाचन, दीपन, हल्का, किंचित उष्ण, मधुर, नेत्रों को हितकारी, रूचिकारक, गर्भाशय की शुद्धि करने वाला, रूखा, बलकारी, सुगंधित, तिक्त, वात, कुष्ठ, विष, ज्वर नाशक है।[2]

Scanned by CamScanner

# औषधीय प्रयोग

दंतशूल : काले जीरे के क्वाथ से कुल्ले करने से दंतशूल मिटता है।

जुकाम : काले जीरे को जलाकर उसका धुआं सूंघने से जुकाम और पीनस का रोग मिटता है।

नेत्र रोग : 7 ग्राम स्याह जीरे को आधा लीटर खौलते हुए जल में डालकर इसका हिम फांट बनाकर उस जल से नेत्रों को धोने से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है। नाखूना, रतौंधी और नेत्रों से पानी का बहना बंद हो जाता है। काले जीरे के स्थान पर सफेद जीरा भी ले सकते हैं।

रतौंधी : जीरा, आंवला तथा कपास के पत्तों को शीतल जल में पीसकर, सिर पर 21 दिन तक बांधने से लाभ होता है।

मुखरोग : 5 ग्राम जीरे को पीसकर जल में मिला लें। इस जल में चंदन घिसकर इलायची 2½ ग्राम एवं फूली हुई फिटकरी का चूर्ण 2½ ग्राम मिला लें। इस जल से कुल्ला करने से मुखगत रोगों में लाभ होता है।

हिचकी : 5 ग्राम जीरे को घी में चुपड़कर उसको चिलम में रखकर धूम्रपान करने से हिचकी बंद हो जाती है।

स्तन्यजनन :

1. प्रसूतिकाल में दूध बढ़ाने के लिए जीरे को घी में भूनकर भुने हुए आटे के लड्डूओं में डालकर, प्रसूता को खिलाने से माताओं के दूध में वृद्धि होती है। प्रसूतिकाल में घी में सेके हुए जीरे की कुछ अधिक मात्रा दाल में डालकर स्त्री को खिलाने का रिवाज है।
2. जीरे को घी में भूनकर इसका हलुआ बनाकर खिलाने से भी दूध बढ़ता है।

अतिसार :

1. अतिसार में 5 ग्राम जीरे को भूनकर तथा पीसकर दही या दही की लस्सी में मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।
2. बच्चों के दस्तों में जीरे को भूनकर पीसकर एक चम्मच जल में 500 मिलीग्राम घोलकर दिन में दो तीन बार पिलाने से लाभ होता है।

संग्रहणी :

1. भांग 100 ग्राम, सौंठ 20 ग्राम और जीरा 400 ग्राम तीनों को बारीक कूटकर छान लें और छने हुए चूर्ण की 80 खुराक बना लें। इनमें से एक–एक खुराक सुबह–शाम खाने से आधा घण्टा पहले 1–2 चम्मच दही के साथ सेवन करने से पुरानी से पुरानी संग्रहणी जड़ से समाप्त हो जाती है। पथ्य में दही, चावल, खिचड़ी, मट्ठा, हलका भोजन लेवें।
2. जीरा भुना हुआ और कच्ची पक्की सौंफ दोनों को बराबर

Scanned by CamScanner

मिलाकर एक–एक चम्मच की मात्रा में दो या तीन घण्टे बाद ताजे पानी के साथ फंकी लेने से मरोड़ के साथ पतले दस्त बंद हो जाते हैं।

बवासीर :

1. अर्श के मस्से जब गूदा से बाहर आकर सूज जायें, तब कृष्ण जीरे को पानी में उबालकर इस पानी से सेक करने से अच्छा लाभ होता है।
2. 5 ग्राम सफेद जीरे को पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष रहने पर उसमें मिश्री मिलाकर दोनों समय पीने से बवासीर की वेदना पूर्ण सूजन कम हो जाती है।
3. अर्श पर इसको पानी के साथ पीसकर लेप करना चाहिए।

उदरकृमि : 15 ग्राम जीरे को 400 ग्राम पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष काढा पिलाने से आंतों के कृमि मर जाते हैं।

वमन : जीरे को रेशमी कपडे में लपेट कर बत्ती बनाकर उसका धुआं नाक में सुंघाने से बहुत दिनों की वमन बंद होती है।

जी मिचलाना : 3 ग्राम जीरे को 3 ग्राम नीबूं के रस में भिगोकर 3 ग्राम नमक मिलाकर खटाई का जीरा बनाते हैं, यह जीरा गर्भवती स्त्री को देने से उसका जी मिचलाना बंद हो जाता है।

मंदाग्नि :

1. जीरे और धनिये के कल्क से सिद्ध किये हुए घी का प्रातः–सायं भोजन से आधा घण्टा पहले सेवन करने से मंदाग्नि और वातपित्त के रोग मिटते हैं।
2. 100 ग्राम जल में 100 ग्राम जीरा डालकर, क्वाथ करें, 25 ग्राम जल शेष रहने पर उतारकर छान ले, इसमें काली मिर्च चूर्ण 4 ग्राम, तथा नमक 4 ग्राम डालकर पीने से खट्टी डकार आनी बंद होती है तथा अंजीर्ण ठीक होकर मल शुद्धि होती है।

गर्भाशय की सूजन : गर्भाशय की सूजन में काले जीरे के क्वाथ में बैठने से लाभ होता है। काला जीरा के स्थान पर सफेद जीरा भी उपयोग में लाया जा सकता है।

मूत्रकृच्छ : स्याह जीरे को उबालकर उसमें मिश्री मिलाकर पीने से मूत्रवृद्धि होती है।

श्वेत प्रदर व रक्त प्रदर : 5 ग्राम जीरा चूर्ण तथा मिश्री चूर्ण 10 ग्राम दोनों को मिलाकर चावलों के पानी के साथ दोनों समय लेने से लाभ होता है।

मकड़ी का विष : सौंठ और जीरे को पानी के साथ पीसकर लगाने से मकड़ी का विष उतरता है।

अलर्क विष : 4 ग्राम जीरा और 4 ग्राम काली मिर्च को घोंट छानकर दोनो समय पिलाने से कुत्ते के विष मे लाभ मिलता है।

बिच्छू का विष : जीरे और नमक को पीसकर घी और शहद में मिलाकर थोडा सा गरम करके बिच्छू के डंक पर लगाने से बिच्छू का विष उतरता है।

पामा खुजली : 40 ग्राम जीरा और 20 ग्राम सिन्दूर को 320 ग्राम कडवे तेल में पकाकर लगाने से खुजली मिटती है।

ज्वर :

1. 5 ग्राम जीरे के चूर्ण को कचनार की छाल के 20 मिलीग्राम रस में मिला कर दिन में तीन बार लेने से ज्वर उतरता है।
2. जीर्ण ज्वर में 5 ग्राम जीरे को गाय के दूध में भिगोकर सुखा लें, इसका चूर्ण बनाकर मिश्री मिलाकर दिन में तीन बार खाने से दुर्बलता दूर होती है।

मलेरिया :

1. मलेरिया ज्वर में करेले के 10 ग्राम रस में जीरे का चूर्ण 5 ग्राम मिलाकर दिन में तीन बार पिलाने से लाभ होता है।
2. इसके 4 ग्राम चूर्ण को गुड़ में मिलाकर भोजन से 1 घण्टा पहले खाने से विषम ज्वर, मंदाग्नि और वातरोग शांत होते हैं।

1. जीरकत्रितयं रूक्षं कटूष्णं दीपनं लघु।
संग्राहि पित्तलं मेध्यं गर्भाशयविशुद्धिकृत्।।
ज्वरघ्नं पाचनं वृष्यं बल्यं रूच्यं कफापहम्। (भाव प्रकाश)
2. चक्षुष्यं पवनाध्मान गुल्मच्छर्द्यतिसार हृत्।।
शुभ्रजीरं कटु ग्राहि पाचनं दीपनं लघु।
किंचित् उष्णं च मधुरं, चक्षुष्यं रूचिकृन्मतम्।।
गर्भाशयशुद्धिकरं रूक्षं बल्यं सुगन्धिकम्।
तिक्तं वमिक्षयाध्मानं वातं कुष्ठं विषं ज्वरम्।
अरोचकं रक्तदोषं अतिसारं कृमींस्तथा।
पित्तं च गुल्मरोगं च नाशयेदिति कीर्त्तितम्।। (नि०र०)

Scanned by CamScanner

# 72 कचनार

| | | |
|---|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : | *Bauhinia variegata* L. |
| कुलनाम | : | Caesalpiniaceae |
| अंग्रेजी नाम | : | Bouhinia |
| संस्कृत | : | कांचनार, गण्डारि, कर्बुदार, चमरिक, कुद्दाल, युग्मपत्र |
| हिन्दी | : | कचनार, कचनाल, लाल कचनार |
| गुजराती | : | चंपाकाटी |
| मराठी | : | कोरल, कांचन |
| बंगाली | : | काञ्चन |
| पंजाबी | : | कचनाल, कुलाड़ |
| तेलगु | : | देवकांचनमु |
| मलयालम | : | चुवन्नमंदारम् |

## परिचय

सम्पूर्ण भारतवर्ष के जंगलों में हिमालय के तराई प्रदेश में तथा निचली पहाडियों पर कचनार के स्वयं–जात वृक्ष पाये जाते हैं। पुष्प भेद से कचनार की तीन जातियां पायी जाती हैं। रक्त पुष्पी, श्वेत पुष्पी तथा पीत पुष्पी/पीले कचनार के वृक्ष वृहदाकार तथा पर्वतीय प्रदेशों में होते हैं। इसके पत्र तथा पुष्प दोनो से बडे होते हैं। औषध्यर्थ व्यवहार में प्रायः लाल फूल वाले रक्त कचनार का ही प्रयोग किया जाता है, परंतु गुण–धर्मों में सभी प्रकार के कचनार समान है, इसलिए एक के अभाव में दूसरे को प्रयुक्त किया जा सकता है।

## बाह्य–स्वरूप

कंचनार के वृक्ष 15–20 फुट ऊंचे, शाखाएं नाजुक झुकी हुई, कांडत्वक 1 इंच मोटी, खुरदरी, भूरी व श्वेत वर्ण, पत्र एकान्तर 2–6 इंच लम्बे, 3–7 इंच चौड़े, द्विखंडित, खंड गोलाभ, हृदयाकार पत्र के अग्रभाग में चीरा इतना गहरा होता है कि 2 पत्र एक साथ जुड़े हुए मालूम होते हैं। पुष्प बडे, श्वेत, बैंगनी या गुलाबी जिनमें एक अंतर्दल किंचित पीतवर्ण होता है। फली आधे से एक फिट तक लम्बी, चपटी,

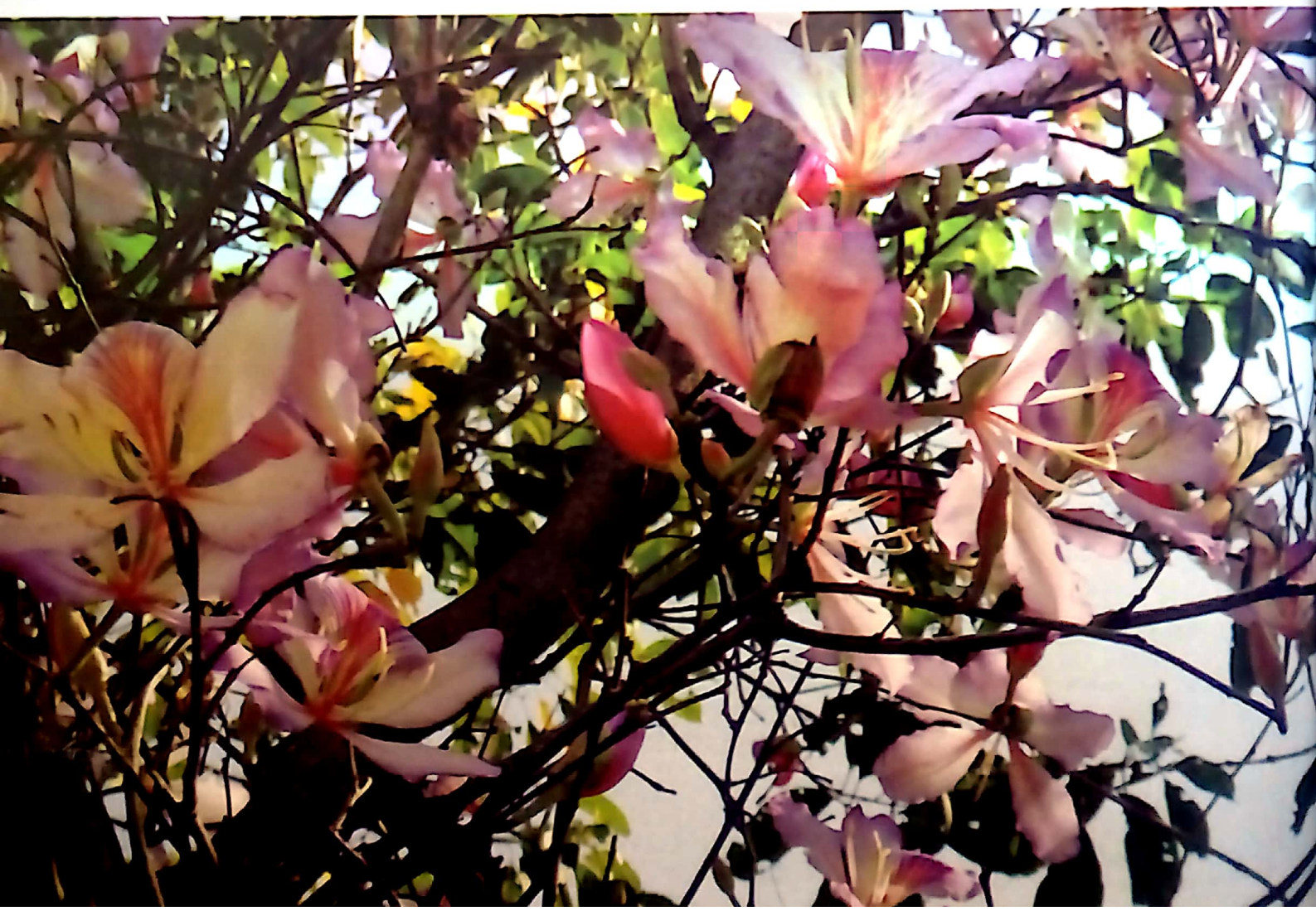

Scanned by CamScanner

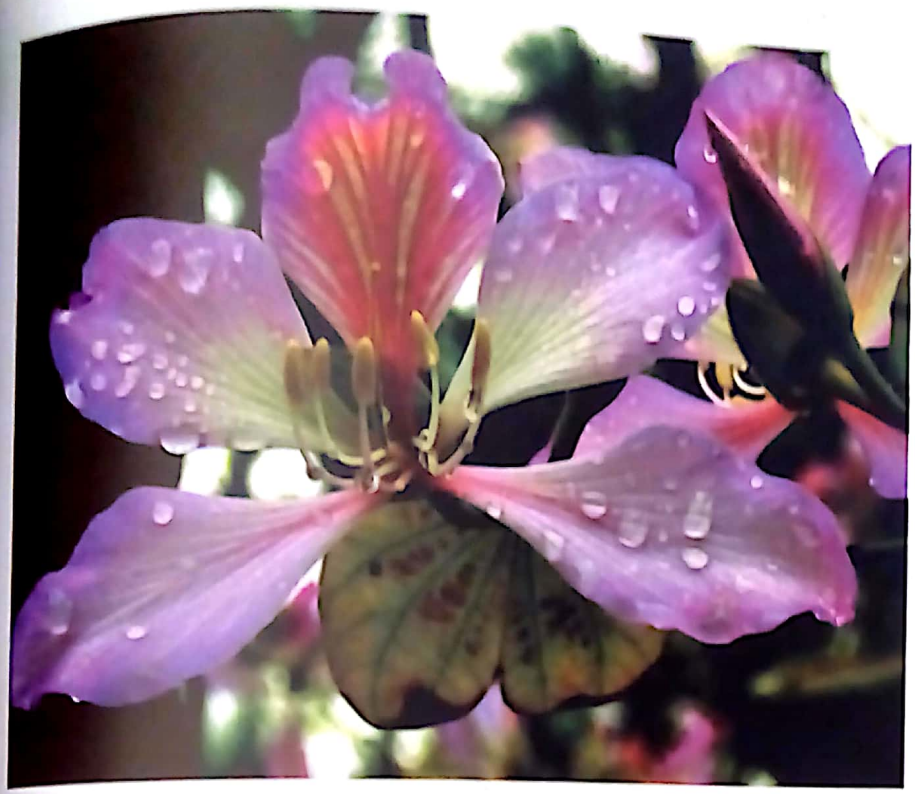

कचनार (बैंगनी)

चिकनी, कड़ी और मुड़ी हुई होती है। फरवरी–मार्च में पत्ररहित वृक्ष में पुष्प लगते हैं और फलागमन अप्रैल–मई में होता है।

## रासायनिक संघटन

कचनार की छाल में टैनिन, शर्करा और एक भूरे रंग का गोंदीय पदार्थ पाया जाता है।

## गुण–धर्म

व्रणशोधन, रोपण, स्तम्भन, मूत्र संग्रहणीय, रक्तस्तम्भन, मेदोरोग, कुष्ठ, प्रमेह, रक्तपित्त, गंडमाला एवं लसीका ग्रंथिशोथ नाशक।[1] कचनार फल हलके, रूखे, ग्राही, पित्त, प्रदर, क्षय, कास तथा रूधिर विकार को नष्ट करने वाले हैं।[2]

## औषधीय प्रयोग

### श्वेत/पीला कचनार

मुखपाक : इसकी छाल के क्वाथ, फांट या हिम के कुल्ले करने से मुखपाक मिटता है।

यकृतशोथ : पीले कंचनार की 10–20 ग्राम जड़ की छाल का क्वाथ सुबह–शाम पिलाने से जिगर का शोथ उतरता है।

मूत्रकृच्छ : इसके सूखे फल के चूर्ण का 5–10 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से मूत्रकृच्छ मिटता है।

आमातिसार :

1. पीले कचनार के शुष्क पत्रों के 5 ग्राम चूर्ण को फांककर अनुपान में सौंफ का अर्क 2 चम्मच पीने से आमातिसार मिटता है।
2. इसके 10 ग्राम पुष्पों को अधखिली अवस्था में उबाल–छानकर दिन में दो बार पिलाने से भी आम अतिसार मिटता है।

आंव–दस्त : इसके शुष्क फल के 2 से 5 ग्राम चूर्ण को पानी के साथ दिन में 3–4 बार सेवन करने से अतिसार बंद होते हैं।

आंत्रकृमि : पीले कचनार की छाल 20 को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ पिलाने से आंत्रकृमि मर जाते हैं।

व्रणकृमि : पीले कचनार के बीजों को सिरके में पीसकर लेप करने से घाव के अन्दर के कीड़े मर जाते हैं।

### लाल कचनार

दंतशूल : इसकी सूखी टहनियों की राख को या कोयलों को घिसकर दांतों पर मंजन करने से दंतशूल में कुछ दिनों में आराम हो जाता है।

मुख के छाले :

1. कचनार वृक्ष की छाल और अनार के फूल इन दोनों के क्वाथ से कुल्ले करने से मुंह के छालों में लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

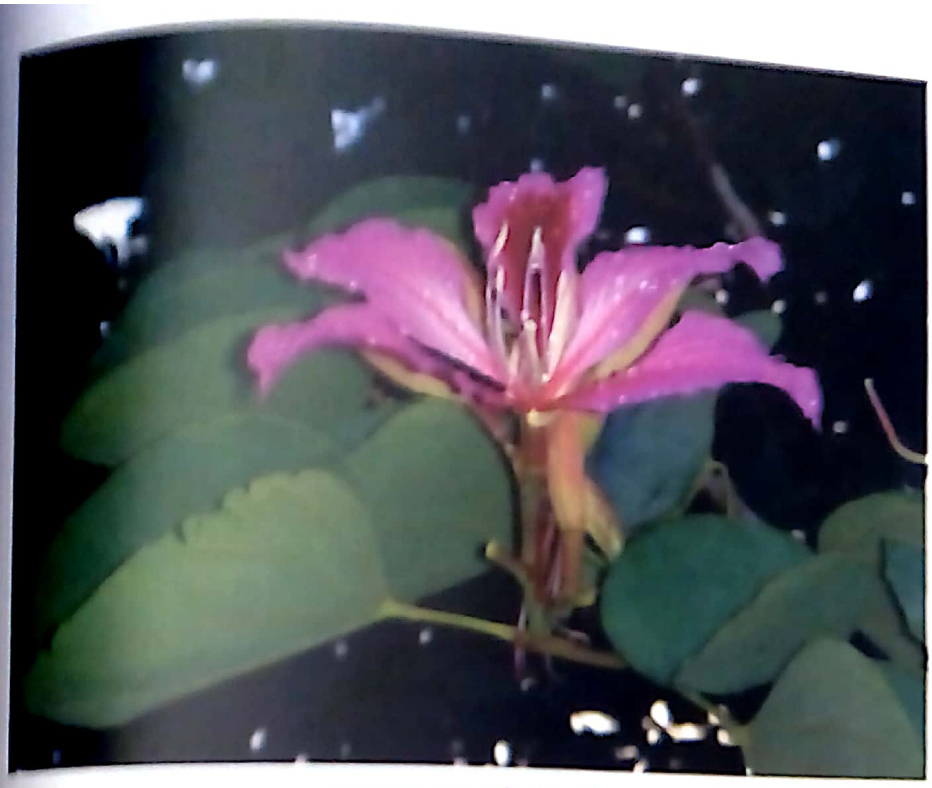

कचनार (गुलाबी-बैंगनी)

ग्राम की मात्रा में खाने से लाभ होता है।

2. इसके सूखे पुष्पों के चूर्ण की 2–5 ग्राम मात्रा को शक्कर के साथ फंकी देने से मल ढीला हो जाता है।

रक्तार्श :

1. लाल कचनार की शुष्क कलियों के 2–5 ग्राम चूर्ण में बराबर मिश्री मिलाकर मक्खन के साथ दिन में तीन बार सेवन करने से रक्तार्श मिटता है।[2]
2. जामुन, रीठा, और कचनार तीनों की छाल को पानी में उबालकर गुदा को धोने से रक्तार्श मिटता है।
3. कचनार की कलियों के गुलकन्द से भी लाभ होता है।

अतिसार : कचनार की कलियां शीतल और ग्राही है, इनका साग खाने से अतिसार मिटता है।

2. कचनार वृक्ष की अंतर छाल 50 ग्राम लेकर आधा किलो पानी में उबालें, जब आधा पानी शेष रह जाये तो इस पानी से कुल्ले करने चाहिए। किसी भी औषधि से ठीक न होने वाले छाले ठीक हो जाते हैं। सूतिका रोगग्रस्त स्त्रियों के छाले भी ठीक हो जाते हैं।

गंडमाला

1. इसकी 10–20 ग्राम छाल का 400 मिलीलीटर पानी में उबालकर चतुर्थांश बचे क्वाथ को पिलाने से गंडमाला मिटती है।
2. रक्त कचनार की छाल के 20 ग्राम क्वाथ में शुंठी चूर्ण 1 ग्राम घुरक कर सुबह–शाम पिलाने से भी गंडमाला मिटती है।
3. इसकी छाल या फूल के क्वाथ को ठंडा करके शहद मिलाकर 10–20 ग्राम दिन में दो बार सेवन करने से गंडमाला मिटती है तथा खून साफ होता है।
4. कचनार की छाल का चूर्ण 250 ग्राम इसमें 250 ग्राम चीनी मिलाकर प्रातः–सायं 5–10 ग्राम चूर्ण जल या दूध के साथ लाभकारी होता है।

मंदाग्नि : लाल कचनार की 10–20 ग्राम जडों का क्वाथ दिन में दो बार पिलाने से मंदाग्नि मिटती है।

अफारा : 3 ग्राम अजवायन के चूर्ण के साथ इसका मूल क्वाथ पिलाने से अफारा यानि पेट का फूलना बंद हो जाता है।

जीर्ण विबंध :

1. कचनार की कलियों के गुलकन्द को 5–10

दाह : इसकी छाल के 5 ग्राम रस में 20 ग्राम जीरे का चूर्ण या 250–500 मिलीग्राम कपूर मिलाकर दिन में दो बार पिलाने से दाह मिटती है।

रक्तपित्त : इसके शुष्क पुष्पों का 2–5 ग्राम चूर्ण को 1 चम्मच मधु के साथ दिन में तीन बार चाटने से रक्त पित्त मिटता है।

व्रण : कचनार की जड़ को चावलों के धोवन के साथ पीसकर पुल्टिस बनाकर बांधने से फोड़े जल्दी पक जाते हैं। घाव और अर्बुद पर इसकी छाल को पीसकर घाव पर लगाने से लाभ होता है।

1. इसकी छाल का 20 ग्राम क्वाथ 250 मिलीग्राम प्रवाल भस्म के

कचनार (श्वेत)

Scanned by CamScanner

कचनार (श्वेत–बैंगनी)

साथ दिन में 3–4 बार कुछ समय तक लगातार सेवन से लाभ होता है।

2. कचनार के पुष्प या पत्रों का चूर्ण ढाई ग्राम तथा प्रवाल भस्म 1/16 ग्राम चीनी के साथ दिन में तीन बार सेवन करने से लाभ होता है। इसके सेवन के पश्चात् दूध पिलाना चाहिए।

### विविध उपयोग :

1. इसकी कलियों का काढ़ा खांसी, खूनी बवासीर, पेशाब की राह से खून आना तथा अत्यधिक रक्तस्राव पर उपयोगी है। इस काढ़े की 20 मि०ली० मात्रा में दिन में दो बार पीना चाहिये।
2. इसकी छाल को उबालकर गंडूष करने से मसूड़ों की पीड़ा मिटती है।

### सफेद कचनार

दूषित पृथ्वी, जलवायु और सड़े हुए फल से पैदा हुए ज्वर में जो मस्तक पीड़ा होती है, उसको मिटाने के लिए सफेद कचनार के 10–20 ग्राम पत्तों को 400 ग्राम जल में उबालकर चतुर्थांश बचा क्वाथ पिलाना चाहिए।

1. कांचनारो हिमो ग्राही तुवरः श्लेष्मपित्तनुत्।
कृमिकुष्ठगुदभ्रंशगण्डमालाव्रणापहः।।
कोविदारोऽपि तद्वत्, स्यात् तयोः पुष्पं लघु स्मृतम्।
रूक्षं संग्राहि पित्तास्रप्रदरक्षयकासनुत्।। (भाव प्रकाश)

2. कोविदारपुष्पाणि मधुराणि मधुरविपाकानि,
रक्तपित्तहराणिच। (सुश्रुत)

3. कोविदारस्य.....। पुष्पं ग्राहि प्रशस्तं च रक्तपित्ते विशेषतः।। (चरक)

Scanned by CamScanner

# कनेर



| | | |
|---|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : | *Thevetia peruviana* (Pers.) Schum. |
| कुलनाम | : | Apocynaceae |
| अंग्रेजी नाम | : | Oleander, Sweet Scented |
| संस्कृत | : | करवीर, हयमार, शतकुम्भ, अश्वमारक |
| हिन्दी | : | कनेर, कनैल |
| गुजराती | : | कणेर, करेण |
| मराठी | : | कण्हेर |
| बंगाली | : | करवी |
| पंजाबी | : | कनिर |
| तेलगु | : | गन्नेस, कस्तूरिपिट्टे |
| कन्नड़ | : | काणिगद, गिड़ |
| अरबी | : | दिफली |
| फारसी | : | खरजहरा |

## परिचय

कनेर के पौधे भारतवर्ष मे मंदिरो, उद्यानो और गृहवाटिकाओं में फूलों के लिए से लगाये जाते है। इसकी तीन प्रजातियां पायी जाती है: लाल, श्वेत और पीली कनेर। इस पर वर्ष पर्यन्त फूल आता है। श्वेत और पीली कनेर जहां सात्विक भाव जगाती है, वही लाल (गुलाबी) कनेर को देखकर ऐसा भम होता है कि जैसे यह बसंत और सावन का मिलन तो नहीं।

## बाह्य–स्वरूप

यह 10–12 फुट तक ऊंचा झाड़ीनुमा पेड़ होता है, जिसका कांड छोटा बहुशाखीय और शाखाओं पर दोनो ओर 3–3 के जोड़े में 6–9 इंच लम्बे, नोकदार, 1 इंच चौड़े पत्ते लगते है। सफेद और लाल कनेर के पत्ते रूखे, परंतु पीले कनेर के पत्ते बिल्कुल हरे, चिकने चमकीले और कुछ छोटे होते है।

## रासायनिक संघटन

इस पौधे का सर्वांग विषाक्त होता है। इसके मूल, त्वक, बीज में हृदय पर कार्य करने वाले ग्लाइकोसाइडों का पता चला है। इनमें नेरिओडोरिन तथा कैरोबिन स्कोपोलिन है। पत्तियों मे मुख्य हृद्य पदार्थ ओलिएंड्रीन पाया जाता है। पीले कनेर मे पेरूवोसाइड

Scanned by CamScanner

लाल कनेर

आदि पाये जाते हैं। कनेर की भस्म में पौटेशियम लवण अधिक होते हैं।

## गुण–धर्म

बाह्यकर्म में यह कुष्ठघ्न, व्रणशोधन, व्रणरोपण तथा शोथहर है। कुष्ठ, व्रण तथा शोथ में एवं विशेषतः उपदंश और फिरंग में लाभकारी है। यह कफवात शामक है तथा दीपन, विदाही तथा भेदन है इसलिए उदर रोग में यह प्रयुक्त होता है। कनेर की हृदय पर तुरंत क्रिया होती है, उचित मात्रा में यह अमृत है, परंतु अधिक लेने पर हृदय के लिए यह विष है। यह रक्तशोधक भी है। यह श्वांसहर है, हृदयजनित श्वांस विकारों में यह प्रयुक्त होता है। ज्वरघ्न और विषम ज्वर प्रतिबंधक है, यह तीव्र विष है। यह मूत्रल है, मूत्रकृच्छ्र और अश्मरी में प्रयुक्त होता है।

# औषधीय प्रयोग

शिरोवेदना : कनेर के पुष्प तथा आंवले को कांजी में पीसकर मस्तक पर लेप करने से शिरोवेदना हट जाती है।'

सफेद कनेर के पीले पत्तों को सुखा महीन पीस जिस ओर पीडा हो उसी ओर के नासिकाछिद्र में एक दो चावल भर सुंघाने से छींके आकर और नाक टपक कर मस्तक पीड़ा मिट जाती है।

नेत्र रोग : पीले कनेर की जड़ को सौंफ और करंज के रस के साथ पीसकर आंख में लगाने से नजला, पलकों की मुटाई जाला, फूली इत्यादि नेत्र रोगों में आराम होता है।

दातुन : सफेद कनेर की डाली से दातुन करने से हिलते हुए दांत मजबूत होते हैं और दांतों को बड़ा लाभ होता है।

उबटन : सफेद कनेर के फूलों को पीसकर चेहरे पर मलने से सुन्दरता बढ़ती है।

हृदय शूल : कनेर के जड़ की छाल 100–200 मिलीग्राम अल्प मात्रा में भोजन पश्चात सेवन से मूत्र होता है तथा हृदय वेदना कम हो जाती है।

अर्श : इसकी जड़ को ठंडे पानी के साथ पीसकर दस्त जाते समय जो अर्श बाहर निकल जाते हैं उन पर लगाने से वे मिट जाते हैं।

कामेन्द्रिय–शैथिल्य :

1. सफेद कनेर की 10 ग्राम जड़ पीसकर 20 ग्राम वनस्पति घी में पकायें, फिर ठंडा करके जमने पर कामेन्द्रिय पर मालिश करने से लाभ होता है।
2. कनेर के 50 ग्राम ताजे फूलों को 100 ग्राम मीठे तेल में पीसकर एक हफ्ते तक रख दें। फिर 200 ग्राम जैतून के तेल में मिलाकर कुष्ठ, सफेद दाग, पीठ का दर्द, बदन दर्द तथा कामेन्द्रिय पर उभरी नसों की कमजोरी दूर करने के लिए 2–3 बार नियमित मालिश करें।

उपदंश : सफेद कनेर की जड़ को पानी के साथ पीसकर उपदंश के घावों पर लगाने से लाभ होता है।

पक्षाघात में : सफेद कनेर की जड़ की छाल, सफेद गुंजा की दाल

श्वेत कनेर

Scanned by CamScanner

तथा काले धतूरे के पत्ते इनको समान मात्रा में लेकर इनका कल्क बना लेना चाहिए, इसके पश्चात, चार गुने जल में तथा कल्क के समभाग तेल मिलाकर कलई वाले बर्तन में मंदाग्नि पर पकाना चाहिए, जब केवल तेल शेष रह जाये, तब कपड़ छानकर इस तेल की मालिश करने से पक्षाघात ठीक हो जाता है।

जोडों की पीडा :

1. इसके पत्तो को पीसकर तेल में मिलाकर लेप करने से जोड़ों की पीड़ा मिटती है।
2. सफेद कनेर के पत्तों के क्वाथ से उपदंश के व्रणों को धोना चाहिए।

दाद : सफेद कनेर की जड़ की छाल का तेल बनाकर लगाने से कई प्रकार के दाद और कोढ़ मिटते हैं।

चर्मरोग : सफेद कनेर की जड़ के क्वाथ को राई के तेल में उबालकर त्वचा रोगों में लेप करते हैं।

खुजली :

1. कनेर के पत्रों से सिद्ध तेल खुजली को 1 घण्टे के अंदर कम कर देता है।
2. पीले कनेर के पत्ते या फूलों का जैतून के तेल में बनाया हुआ मलहम, हर प्रकार की खुजली में लाभदायक है।

कुष्ठ :

1. सफेद कनेर की जड़, कुटज फल, करंज के फल, दारू हल्दी की छाल और चमेली की नयी पत्तियों का लेप कुष्ठनाशक है।[1]
2. कनेर के पत्तों के क्वाथ से नियमित रूप से कुछ काल तक स्नान करने से कुष्ठ रोग में बहुत लाभ होता है।
3. इसकी छाल का लेप करने से चर्म कुष्ठ मिटता है।

संक्रामक कीटाणु : इसके पत्तों के तेल की मालिश करने से जिन जीवों से संक्रामक रोग लगते हैं वैसे कोई भी जीव शरीर पर नहीं

श्वेत कनेर

लाल कनेर

बैठते हैं।

कृमि :

1. इसके पत्तों का तेल में पुल्टिस बनाकर बांधने से घाव के कीड़े मरते हैं।
2. कीड़ों के खाये अंगों पर कनेर की मूल, वायविडंग उनको गोमूत्र में पीसकर लेप करें। इस पर गोमूत्र का परिषेक करें।

अफीम : कनेर की जड़ का महीन चूर्ण 100 मिलीग्राम की मात्रा में दूध के साथ कुछ हफ्ते तक दिन में दो बार खिलाते रहने से अफीम की आदत छूट जायेगी।

सर्पदंश : सर्पदंश में इसकी जड़ की छाल 125 से 250 मिलीग्राम की मात्रा या पत्ते 1–2 थोड़े–थोड़े अंतर पर देते हैं, जिसके कारण वमन होकर विष उतर जाता है।

विशेष : कनेर का सर्वांग विषैला होता है। इसलिए इसका आंतरिक प्रयोग कभी खाली पेट नहीं करना चाहिए। इसका प्रयोग किसी चतुर वैद्य की निगरानी में ही करना चाहिए।

Scanned by CamScanner

# कटेरी (कण्टकारी) डोरली

74

| | | |
|---|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : | *Solanum surattense* Burm. f |
| कुलनाम | : | Solanaceae |
| अंग्रेजी नाम | : | Yellow berried night shade |
| संस्कृत | : | कण्टकारी, श्वेता, क्षुद्रा, चन्द्रहासा, लक्ष्मणा, क्षेत्रदूतिका, चन्द्रपुष्पा, व्याघ्री |
| हिन्दी | : | कटेरी, लघुकाई, भटकटैया |
| मराठी | : | भुईरिंगणी |
| बंगाली | : | कण्टिकारी |
| पंजाबी | : | कण्डियारी |
| तेलगु | : | कूदा |
| द्रविड़ी | : | कनकत्तरि |
| कन्नड़ | : | मल्लुचि, रगुल |

## परिचय

कटेरी भारतवर्ष में प्रत्येक स्थान पर पाई जाती है। इसका पौधा झाड़ी के रूप में जमीन पर फैला हुआ होता है। इसको देखने से ऐसा लगता है, जैसे कोई क्रोधित नागिन शरीर पर अनेकों कांटो का वस्त्र ओढे गर्जना करती हुई मानो कहती हो, मुझे कोई छूना मत। कटेरी में इतने कांटे होते है कि इसे छूना दुष्कर है इसीलिये इसका एक नाम दुःस्पर्शा है। हरे रंग की पत्तियों पर पीले रंग के कांटे बहुत अच्छे लगते है।

## बाह्य–स्वरूप

कटेरी की चमकीले हरे रंग की बहुवर्षीय झाड़ी होती है। अपने चारों ओर भूमि पर 1–4 फुट के व्यास में फैली हुई पाई जाती है। इसका रंग चमकीला हरा और उस पर पीले रंग के डेढ़ इंच लम्बे या इससे कुछ छोटे कांटे होते है। पत्र 4–6 इंच लम्बे कटे फटे खण्डित या दंतुर होते है। किनारे वाले श्वेत रेखांकित होते हैं तथा उनपर ऊपर नीचे असंख्य कांटे होते है। मध्य शिरा श्वेत होती है। पुष्प नीले या बैंगनी रंग के, पुंकेसर पीले रंग के होते है। फल गोल, हरे श्वेत रेखांकित होते है। पकने पर यह पीले हो जाते

Scanned by CamScanner

है। कटेरी दो जातियां होती है : 1. नील पुष्पी तथा 2. श्वेत पुष्पी। श्वेत पुष्पी में सफेद फूल लगते है, इसका रंग भी श्वेत ही होता है। यह कम पाई जाती है। बसन्त ऋतु में इसमें फूल आते है, वर्षा ऋतु में यह गोल–गोल फलों से लद जाती है। और शरद ऋतु में फल पक जाते है। दिसम्बर–जनवरी में जाकर इसकी बेल प्रायः जीर्ण–शीर्ण थकी हारी हो जाती है।

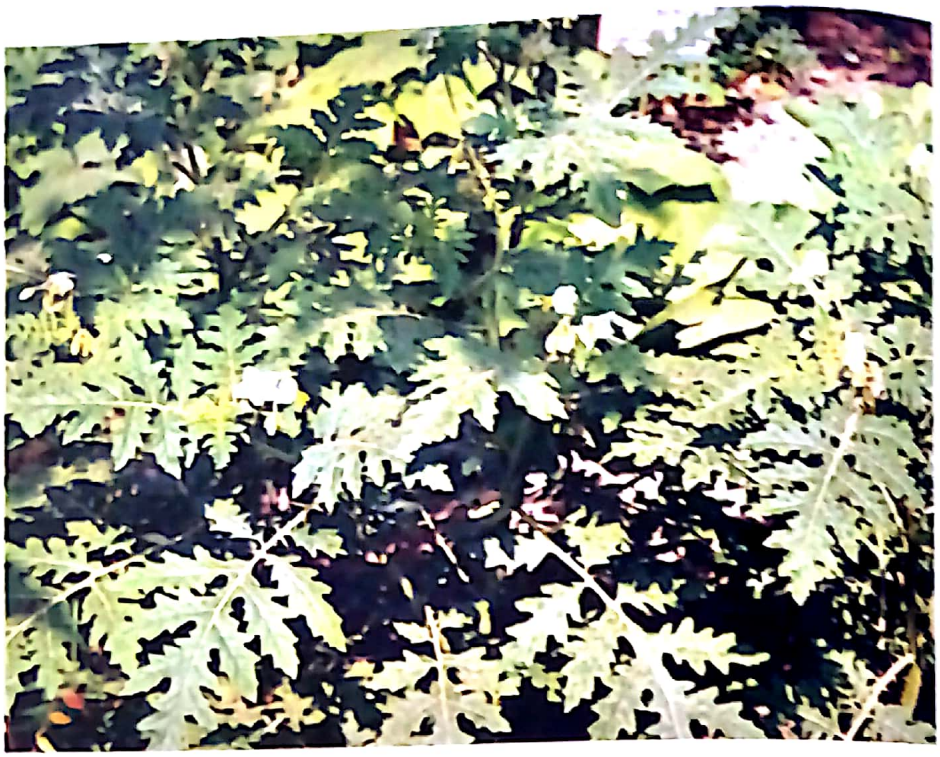

## रासायनिक संघटन

इसके पंचाग की राख में पौटेशियम नाइट्रेट, कार्बोनेट और सल्फेट होता है। पंचाग में वसा तथा रालयुक्त पदार्थ और डायोसजेनिन पाये गये है। फलों में सोले सोनिज और बीजों में से हरापन लिये–पीले रंग का 19.3 प्रतिशत तेल प्राप्त होता है।

## गुण–धर्म

गरम प्रकृति की होने के कारण स्वेदजनन है। उष्ण वीर्य होने के कारण कफ वात का नाश करने वाली है। कटु, तिक्त और उष्ण होने से दीपन और पाचन हैं। मन्दाग्नि और पित्त विकार को दूर करने से लिये यह औषधि बडी प्रभावशाली है। तीक्ष्ण होने से कृमिघ्न और रेचन है। यह मूत्रल, कफनिः सारक और ज्वरनाशक है। मूत्रल होने के कारण जलोदर, लीवर की वृद्धि, सुजाक, मूत्राघात और मूत्राशय की पथरी में भी यह औषधि लाभकारी सिद्ध हुई है। यह कृमिघ्न है, इसलिये दांतों की पीड़ा में बहुत उपयोगी है। यह खून को साफ करने वाली, सूजन कम करने वाली और रक्त भार को कम करती है। यह कफघ्न होने से कासहर, कण्ठ्य, हिक्का निग्रहण और श्वासहर है। श्वास नलिकाओं तथा फेफडों से हिस्टेमीन को निकालती है। यह आवाज को व्याघ्र के समान तेज करती है इसलिये इसको व्याघ्री कहते है। छोटी कटेरी और बड़ी कटेरी, चित्रक, शतावरी, वरूण यह सब कफ, मेद, शिरः शूल, और गुल्म व अन्तर्विद्रधि को नष्ट करते है। कफ अरुचि हृदयरोग, मूत्रकच्छ की पीड़ा को दूर करते है।[1]

## औषधीय प्रयोग

सिर पीड़ा : कटेरी, गोखरु के क्वाथ का लाल धान के चावल से निर्मित ज्वरनाशक पेय का थोड़ी–थोड़ी मात्रा में दिन में तीन–चार बार सेवन करने से ज्वर में उत्पन्न पसलियों, बस्ति और सिर की पीड़ा का नाश होता है।[2]

मस्तक शूल : इसके फलों के रस का माथे पर लेप करने से मस्तक शूल मिटता है।

नेत्रपीडा : कटेरी के 20–30 ग्राम पत्तों को पीसकर उनकी लुग्दी बनाकर आंखों पर बांधने से आंखों का दर्द दूर होता है।

नेत्रजाला : इसकी जड़ को नीबू के रस में घिसकर आंख में अंजन लगाने से धुन्ध और जाला मिटता है।

अपस्मार : इसकी जड़ और भांग के बीज दोनों बराबर लें तथा बालक के मूत्र में पीसकर नाक में 2–2 बूंद दिन में तीन–चार टपकाने से अपस्मार मिटता है।

दंतशूल : अगर दाढ़ बहुत दुःखती हो तो कटेरी के बीजों का धुआं लेने से तुरन्त आराम होता है। कटेरी की जड़, छाल, पत्ते और फल लेकर उनका काढ़ा बनाकर कुल्ला करने से दांतो के सब प्रकार के दर्द में आराम मिलता है।

इन्द्र लुप्त : इसके पत्रों के 20–50 मिलीलीटर स्वरस में थोड़ा शहद मिला कर मर्दन करने से कुछ दिनों में कीटाणु नष्ट होकर तथा त्वचा मुलायम होकर नये बाल आ जाते है।

खांसीः

1. कटेरी के फूलों के ½ से 1 ग्राम चूर्ण को शहद के साथ चटाने से बालकों को सब प्रकार की खांसी दूर होती है।[3]
2. खांसी में 15–20 ग्राम पत्रस्वरस या 50–60 ग्राम मूल क्वाथ में 2 ग्राम छोटी पीपल एवं 250 मिलीग्राम सैंधा नमक मिलाकर देने से आराम मिलता है।
3. इसके 10–20 ग्राम क्वाथ में पीपल का 2 ग्राम चूर्ण मिला कर दिन में दो तीन बार पिलाने से खांसी मिटती है।

दमाः

1. इस वनस्पति की प्रसिद्धि कफ को नाश करने के सम्बन्ध में बहुत अधिक है। कफ, ज्वर, दमा, छाती का दर्द इत्यादि रोगों में इसका बहुत प्रयोग होता है। जब छाती में कफ भरा हुआ

Scanned by CamScanner

हो तब इसका 50–60 ग्राम काढा देने से बहुत लाभ होता है। इसके फलों के 50–60 ग्राम काढे में 2 ग्राम भुनी हुई हींग और उतना ही सैंधा नमक डालकर पीने से भयकर दमा भी बैठ जाता है।

2. पंचाग को जौ कूट कर आठ गुना पानी मिला पकावें, दो भाग शेष रहने पर स्थिर होने पर ऊपर का पानी पुनः पकावे, गाढ़ा होने पर कांच की शीशी में रखें। इसमें से 1 ग्राम मधु के साथ सुबह–शाम सेवन से श्वास कास दूर होता है।

**कंठशोथ** : गले की सूजन में फलों का 10–20 ग्राम स्वरस देने से लाभ होता है।

**क्षयकास** : मोथा, पिप्पली, मुनक्का तथा बडी कटेरी के शुष्क फल इन्हें समभाग में मिश्रित कर 5–10 ग्राम की मात्रा में लेकर घी 1 चम्मच और मधु 2 चम्मच के साथ सुबह–शाम सेवन करने से क्षयकास शान्त होता है1

**जुकाम** : मौसम के बदलने पर नजला, जुकाम व बुखार हो जाया करता है। उसमें पित्तपापड़ा, गिलोय और छोटी कटेरी सबको समान मात्रा में 20 ग्राम लेकर आधा किलो पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष काढ़ा पिलाने से बहुत लाभ होता है।

**स्तनशैथिल्य** : कटेरी की जड़, अनार की जड और कन्दोरी को समभाग लेकर पीसकर स्तनों पर लेप करने से स्तन कठोर हो जाते है।

**वमन** : मूल का 10–20 ग्राम स्वरस 2 चम्मच मधु में मिलाकर देने से वमन बंद होता है।

**छर्दि** : अडूसा, गिलोय, छोटी कटेरी इनके क्वाथ मे शीतल होने पर मधु का प्रक्षेप देकर 10–20 ग्राम की मात्रा में पीने से शोथ, कास ज्वर तथा छर्दि शान्त होती है।[4]

**मंदाग्नि** : कटेरी और गिलोय का रस बराबर–बराबर ले उस डेढ़ किलो रस में 1 किलों घी डालकर पकाना चाहिये, जब केवल घी

मात्र शेष रह जाये तब उसको उतार कर छान ले। इस घी को 10 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से मन्दाग्नि और वात की खांसी मिटती है।

**उदर विकार** : इसके फलों के बीज निकाल कर उनको छाछ में नमक डालें तथा उबालकर सुखा देवें, फिर उनको रातभर मट्ठे में डुबोयें तथा दिन में सुखा लेवें। ऐसा 4–5 दिन तक करके उनको घी में तलकर खाने से उदर शूल और पित्त के रोग मिटते है।

**अश्मरी** : अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र तथा जलोदर में छोटी कटेरी के मूल का चूर्ण बडी कटेरी के मूल के चूर्ण के साथ समभाग मिलाकर 2 चम्मच दही के साथ सात दिन तक खाने से लाभ होता है।

**मूत्रकृच्छ्र** : कटेरी के 10–20 मिलीलीटर स्वरस को मट्ठे में मिलाकर कपडे से छानकर पिलाने से पेशाब की रुकावट फौरन मिट जाती है।

**गर्भपात** : इसकी या बडी कटेरी की 10–20 ग्राम जडों को 5–10 ग्राम छोटी पीपल के साथ भैंस के दूध में पीस छानकर कुछ दिन तक नित्य दो बार पिलाते रहने से, गर्भपात का भय नहीं रहता और स्वस्थ शिशु उत्पन्न होता है।

**मूत्राघात** : इसके स्वरस और तक्र को वस्त्र में छानकर 10–20 ग्राम सुबह, दोपहर तथा शाम पिलाने से मूत्राघात मिटता है।

**गर्भधारण हेतु** : सफेद कटेरी की जड को पुष्य नक्षत्र के दिन लाकर कन्या के हाथ से पिसवा के गौ के दूध के साथ संतान की इच्छा रखने वाली स्त्री को ऋतु स्नान के उपरान्त पिलाने से वह गर्भ धारण करती है।

Scanned by CamScanner

कण्टकारी

ज्वर :

1. कटेरी की जड़ और गिलोय का समभाग क्वाथ 10–20 ग्राम की मात्रा में कास व ज्वर मे देने से पसीना आकर ज्वर कम हो जाता है। शरीर की पीड़ा भी कम हो जाती है।[5]
2. कटेरी की जड़, सौठ, बला मूल, गोखरु, गुड़ को समभाग लेकर दूध में पकाकर 100 मि०ली० सुबह–शाम पीने से मलमूत्र की रुकावट तथा ज्वर, शोथ का नाश होता है।[6]

दारुण रोग : इसके फलो के रस मे बराबर तेल मिलाकर लगाने से दारुण रोग मिटता है।

1. कटेरी सरा तिक्ता कटुका दीपनी लघुः।
   रुक्षोष्णा पाचनी कासश्वासज्वरकफानिलान्।
   निहन्ति पीनसं पार्श्वपीड़ाकृमिह्रदामयान्।।
   तयोः फलं कटु रसे पाके च कटुकं भवेत।
   शुक्रस्य रेचनं भेदि तिक्तं पित्ताग्निकृल्लघु।।
   हन्यात्कफमरुत्कण्डूकासमेदः कृमिज्वरान्।
   तद्वत्प्रोक्ता सिता क्षुद्रा विशेषाद गर्भकारिणी।। (भाव प्रकाश)
2. वरुणार्तगलशिग्रु मधु शिग्रु तर्कारीमेषश्रृंगी पूतीकनक्तमाल...।। (सुश्रुत)
3. कण्टकारीकृतः क्वाथः सकृष्णः सर्वकासहा। (भैषज्य रत्नावली)
4. सिंहास्यामृतभण्टाहाकीक्वाथं कृत्वा समाक्षिकम्
   पीत्वां शोथ जयेज्जन्तुः श्वांसकासं ज्वरं वमिम्। (भैषज्य रत्नावली)
5. पेयां वा रक्तशालीनां पार्श्ववस्तिशिरोरुजि।
   श्वदंष्ट्रा कण्टकारीभ्यां सिद्धा ज्वरहरां पिवेत्।। (भैषज्य रत्नावली)
6. त्रिकंटक बलाप्या व्याघ्री गुडनाग रसाधितम्
   वर्चोमूत्रविबन्धघ्नं शोथज्वर हरं पयः। (चरक)

Scanned by CamScanner

# लता करंज



| | | |
|---|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : | *Caesalpinia bonduc* (L.) Roxb. |
| कुलनाम | : | Caesalpiniaceae |
| अंग्रेजी नाम | : | Fever nut |
| संस्कृत | : | लता करंज, कंटकी करंज |
| हिन्दी | : | कट करंज |
| बंगाली | : | नातु करोंजा |
| तमिल | : | एविल गज्जी |

## परिचय

करंज के सदाबहार वृक्ष प्रायः समस्त भारतवर्ष में विशेषतः समुद्र तटीय प्रान्तों में तथा मध्य एवं पूर्वी हिमालय से लेकर श्रीलंका तक पाये जाते हैं। नदियों के किनारे अथवा जलाशयों के आस–पास यह अधिक पाया जाता है।

## बाह्य–स्वरूप

यह एक अंकुश तथा कंटकयुक्त लता हैं। पत्तियां 30–60 से.मी. लम्बी तथा पत्रक 6–8 युग्मक में होते हैं। पुष्प घने पीत दल तथा फल कण्टकयुक्त होते हैं। पुष्प प्रायः वर्षा ऋतु में तथा फल शीतकाल में आते हैं।

## रासायनिक संघटन

बीजों में पीले तेलीय द्रव्य, सिजलपिन, आयोडीन, रूपोनीन तथा जल में अघुलनशील है।

## गुण–धर्म

यह कफवातशामक, पित्तवर्धक, जंतुघ्न, कंडूघ्न तथा शोथहर है। यह दीपन, पाचन, भेदन, कृमिघ्न, यकृत उत्तेजक, रक्त प्रसादन, मूत्रसंग्रहणीय, गर्भाशय विशोधन, कुष्ठघ्न और विषनाशक है। इसके

Scanned by CamScanner

बीज गरम, कड़वे, कृमिनाशक, रक्तशोधक, रक्तवर्धक, मस्तिष्क नेत्र और चर्म रोगों मे लाभ पहुँचाने वाले हैं। बीज तेल गरम, कृमिनाशक, नेत्ररोग, आमवात, धबलरोग, कंडू और चर्मरोग तथा कुष्ठ को भी दूर करता है। पत्र कफ, वात, अर्श, कृमि, शोथ हरने वाले, भेदन, कड़वे, उष्ण, हल्के व पित्तकर हैं। इसके फल, कफवातघ्न, प्रमेह, अर्श, कृमि तथा कुष्ठ का नाश करने वाले हैं।

## औषधीय प्रयोग

अर्द्धविभेदक (आधाशीशी) :

1. बीजों की गिरी के साथ समभाग सहजने के बीज, तेजपात, वच और खांड मिला कर खरल कर महीन चूर्ण बना रखें। इसके नस्य से खूब छींकें और दूषित जल का स्राव होकर आधाशीशी तथा अन्य सिर के विकार दूर होते हैं।
2. बीजों को पानी में पीसकर थोड़ा गुड़ मिला, किंचित उष्ण कर, जिस ओर पीड़ा हो, उसके विपरीत नासारन्ध्र में 1–2 बूँद टपकावें, आधा घन्टे बाद दूसरे रन्ध्र में टपकावें। ऐसा कुछ दिन करने से पूर्ण लाभ होता है।

इन्द्रलुप्त :

1. इसके तेल को सिर में लगाने से लाभ होता हैं
2. इसके फूलों को 6–12 ग्राम पीसकर सिर में लेप करने से सिर की गंज में लाभ होता है।

मिरगी रोग : मिरगी रोग में इसके पत्तों का 10–12 ग्राम रस दिन मे तीन बार देना बहुत लाभकारी है।

नेत्र रोग :

1. करंज के बीजों के चूर्ण को पलाश के फूलों के रस की 21 भावना देकर उसे सुखा लें और उसकी सलाईयाँ बना लें, इन सलाईयों को पानी में घिसकर आंख में अंजन करने से आंख की फूली कट जाती है।
2. पित्तज नेत्र रोग में (जब पलक लाल और रोम रहित हो जाये) 1–2 ग्राम बीज की गिरी, तुलसी और चमेली की कलियां समभाग लेकर कूटकर आठ गुने जल में पकावें। चौथाई रहने पर छानकर पुनः पकाकर गाढ़ा कर लें, इसे पलकों पर लगाते रहने से यह विकार नष्ट हो जाता है।

दंत रोग :

1. पायरिया में इसकी टहनी का दातुन करने से एवं इसके तेल को दांतों पर घिसने से लाभ होता है।
2. 7 ग्राम करंज के बीजों को 7 ग्राम मिश्री के साथ देने से दाँतों से खून आना बंद हो जाता है।

खाँसी :

1. करंज बीज चूर्ण 15 से 750 मिलीग्राम की मात्रा में 125 मिलीग्राम सुहागे की खील मिलाकर, शहद के साथ दिन में 3–4 बार चटाते रहने से तथा बीजों को धागे में पिरोकर गले में बाँधने से 4–5 दिन में पूर्ण लाभ होता है।
2. 10–12 ग्राम पत्र रस में काली मिर्च चूर्ण 250– 500 मिलीग्राम तक मिला कर 4 दिन तक प्रातः–सांय चाटने से लाभ होता है।
3. करंज की फलियों की माला बनाकर गले में पहनने से कुत्ता खांसी मिटती है।
4. कुक्कुर खांसी में इसके बीज 1–2 ग्राम जल में घिसकर या कूटकर या जल में उबालकर जल को दिन में तीन बार पिलाने से लाभ होता है।

मंदाग्नि : करंज के 10–12 ग्राम और चित्रक के पत्तों के रस में काली मिर्च और नमक बुरक कर पिलाने से मंदाग्नि, अतिसार और अफारा मिटता है।

उदर कृमि : इसके तेल को पीने से उदर कृमि मर जाते हैं।

यकृत कृमि : 10–12 ग्राम करंज पत्र रस में वायविडंग और छोटी पीपर का चूर्ण 125 मि०ग्रा० से 1 ग्राम तक मिलाकर प्रातः–सायं भोजन के बाद 7–8 दिन सेवन करावें।

गुल्म रोग और वात शूल : पत्तों को यवागू में उबाल कर यथोचित मात्रा में पिलाते रहने से लाभ होता है। वेदना कम होती है तथा पाचन क्रिया ठीक हो जाती है।

अर्श :

1. अगर विशेष मलावरोध हो व वायु का प्रकोप अत्यधिक हो तो इसके 1–3 ग्राम पत्तों को घी और तिल तेल में भूनकर सत्तू के साथ मिलाकर भोजन से पूर्व सेवन करावें।
2. इसके कोमल पत्तों को पीसकर लेप करने से रक्तार्श में लाभ होता है। इसके केवल 1–3 ग्राम पत्तों को ही पीस छानकर पिलाने से भी लाभ हो जाता है।
3. 500 मिलीग्राम से 2 ग्राम करंज मूल चूर्ण, चित्रक, सैंधा नमक, सौंठ, इन्द्रजौ की छाल का चूर्ण समभाग, मिलाकर 1–3 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार सेवन करते रहने अर्श तथा रक्तार्श नष्ट होते हैं।
4. 2 ग्राम मूल छाल के चूर्ण को गौमूत्र में पीसकर पिलावें, तथा पथ्य में केवल छाछ तीन दिन तक लेने से लाभ हो जाता है।

मधुमेह : मधुमेह व बहुमूत्र में इसके फूलों का फाँट अति उपयोगी है।

वमन :

1. वमन, कफ प्रधान उर्ध्वगत रक्त पित्त में बीज की गिरी का चूर्ण (ताजा) 2 से 3 ग्राम तक, शक्कर और शहद मिलाकर सुबह–शाम चाटने से लाभ होता है।
2. बीजों को भूनकर इसमें आधा भाग शक्कर मिला कूट पीसकर चने जैसी गोलियाँ बना रोगी को 10–10 मिनट पर 1–1 गोली सेवन करावें। शीघ्र वमन की शांति होती है अथवा बीजों को आग

Scanned by CamScanner

पर सेंक कर टुकडे कर लें। 1–2 टुकड़ा बार–बार खिलावें।

स्तम्भन : इसके पत्तों के रस को हथेली और तलुओं पर मलने से वीर्य स्तम्भन होता है। इसके एक बीज को सहवास के समय मुँह में चबाने से भी वीर्य स्तम्भन होता है।

सुजाक : इसकी 1–3 ग्राम जड़ का रस, नारियल का जल और चूने का निथरा हुआ जल, समभाग मिलाकर सुबह–शाम पिलाते रहने से मूत्र नलिका का शोथ, जलन आदि दूर होकर पूयस्राव होना बन्द हो जाता है।

पथरी : इसकी मींगों का 1 ग्राम चूर्ण व 3 ग्राम मधु, पहले दिन चटाने फिर नित्य 1 ग्राम बढाते हुए 11 दिन बाद 1 ग्राम चटाते हुए 3 ग्राम पर ले आने से पथरी मिटती है।

भगन्दर :

1. इसकी 500 मिलीग्राम से 2 ग्राम जड़ की छाल को दूधिया रस की पिचकारी देने से भगन्दर जल्दी भर जाता है।
2. दूषित कृमियुक्त भगंदर के व्रणों पर इसके पत्तों की पुल्टिस बना बाँधते रहने से अथवा कोमल पत्र स्वरस 10–12 ग्राम के साथ निर्गुण्डी या नीम पत्र रस उसमें कपास का फोहा तर कर व्रण पर बार–बार रखते रहने से लाभ होता है।
3. करंज पत्र तथा निर्गुण्डी या नीम पत्र को पीस–पुल्टिस बना कर बांधने से अथवा इसके पत्तों को कांजी में पीसकर गरम लेप करने से लाभ होता है।

चर्म रोग कुष्ठ इत्यादि :

1. 10–12 ग्राम पत्र स्वरस में चित्रकमूल, काली मिर्च और सैंधा नमक का चूर्ण यथोचित् मात्रा में मिला, दुगुने पतले दही में मिलाकर दिन में दो बार 3–4 महीने तक लगातार पीते रहने से गलित कुष्ठ का शमन होता है।
2. फल 1–2 ग्राम या बीजों को इन्द्रजौ 1–2 ग्राम के साथ पीसकर लेप करने से भी लाभ होता है।
3. करंज, नीम और खैर के पत्रों के साथ पीसकर लेप करें तथा तीनों के क्वाथ से स्नान करें और इसी पानी को पिलाते रहें।
4. 1–2 ग्राम बीजों के साथ समभाग हल्दी, हरड़ और राई पीसकर लेप करें, 10 दिन में पूर्ण लाभ होगा।
5. 1–2 ग्राम बीजों के साथ श्वेत कनेर की जड़ पीसकर लेप करने से भी लाभ होता है।
6. पामा, एक्जीमा आदि पर इसके 10–20 मिली पत्र रस से प्रक्षालन कर इसके तेल में गन्धक, नींबू रस मिलाकर लगाते रहने से शीघ्र लाभ होता है।
7. करंज तेल में समभाग नींबू का रस मिलाकर खूब मथ लें, जब पीले रंग का सुन्दर घोल तैयार हो जाये तो इसे लगाते रहने से उपदंशजन्य या किसी अन्य विकार से हुये शरीर के चट्टों पर लगाने से वे ठीक हो जाते हैं तथा कण्डू, झांई, व्यंग, विचर्चिका आदि चर्म रोग भी दूर हो जाते हैं।
8. कंडू, क्षय, पामादि रोगों पर 25 ग्राम तेल में 4 ग्राम तक जस्ता भस्म मिलाकर लगायें।
9. साधारण कुष्ठ पर इसे लगाने से तथा सफाई और पथ्यपूर्वक रहते रहने से ही लाभ हो जाता है।
10. काकणक नामक महाकुष्ठ में इसके 25 ग्राम तेल में चित्रक और सैंधा नमक का चूर्ण मिलाकर लेप करने से लाभ होता है।
11. इसके 1–2 ग्राम फल की लुग्दी बनाकर कुष्ठ और विसर्पिका रोगों में सेवन से लाभ होता है।

व्रण :

1. इसकी जड़ के रस से दूषित घावों को धोने से लाभ होता है।
2. करंज, थूहर, अर्क, अमलतास और चमेली के पत्तों को समभाग गोमूत्र के साथ पीसकर लेप करने से दद्रु, व्रण, दूषित अर्श और नाड़ी व्रण नष्ट होते हैं।
3. व्रण शोथ में इसके 1–3 ग्राम पत्रों को निर्गुण्डी के पत्रों के साथ पीसकर बांधने से सूजन कम हो जाती है।
4. इसके पत्तों की पुल्टिस बनाकर कृमियुक्त घावों पर लगाने से लाभ होता है।

विस्फोटक रोग : करंज बीज, तिल और सरसों, समभाग पीसकर लेप करने से विस्फोटक एवं दुष्ट पिडिका का नाश होता है।

वातज शूल :

1. इसके बीज के साथ समभाग काला नमक, सोंठ और हींग मिलाकर चूर्ण करें। 500 मिलीग्राम से 1 ग्राम तक सुखोष्ण जल के साथ सेवन करें।

Scanned by CamScanner

2. पार्श्व शूल में बीज की 1 मींगी और 125 मिलीग्राम शुद्ध नीला थोथा दोनों को पीसकर सरसों जैसी 12 गोलियां बना 1–1 गोली नित्य सेवन करें।
3. 10–20 ग्राम कोमल पत्तों को तिल के तेल में भूनकर नित्य सेवन कराते हैं।

ज्वर :

1. इसकी मींगी को जल में पीसकर नाभि पर टपकाने से कफ ज्वर छूटता है।
2. इसकी 3 कोपल और 2 काली मिर्च को जल में पीसकर नाभि पर लगाने से कफ ज्वर छूटता है।

1. करंजः कटुकः पाके रसे तिक्तकषायकः।
कटुको गुणतस्तीक्ष्णों वीर्योष्णो विनियच्छति।। (कै०नि०)
2. बलासपित्तकुष्ठार्शोमेहोदरव्रणक्रिमीन्।
तत्पत्रं कटुकं पाके रसे दीपनपाचनम्।।
कफवातापहं शोफविषार्शः कृमिकुष्ठजित्।। (कै०नि०)
3. करंजः कटुकस्तीक्ष्णो वीर्योष्णो योनि दोषहृत।।
कुष्ठोदावर्त्तगुल्मार्शोव्रणक्रिमीकफापहः।। (भाव प्रकाश)
4. करंज तेलानि तीक्ष्णानि लघून्युष्ण वीर्याणि कटूनि कटुविपाकानि।
सराण्यनिलकफ कृमिकुष्ठप्रमेहशिरोरोगहराणि च।
(सुश्रुत)
5. तत्पत्रं कफवातार्शः कृमिशोथहरं परम्। भेदनं कटुकं पाके वीर्योष्णं पित्तलं लघु।
तत्फलं कफवातघ्नं मेहार्शः कृमिकुष्ठजित्। (भाव प्रकाश)
6. करंज फलं जन्तुप्रमेहजित्। रूक्षोष्णं कटुकं पाके लघु वातकफापहम्।
(सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

| | | |
|---|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : | *Momordica charantia* L. |
| कुलनाम | : | Cucurbitaceae |
| अंग्रेजी नाम | : | Bitter gourd |
| संस्कृत | : | कारवेल्लक, कारवेल्ली, उग्रकांड, कटफला |
| हिन्दी | : | करेला |
| गुजराती | : | करेलो, कड़वा, बेला |
| मराठी | : | कारलें, क्षुद्र-कारली |
| पंजाबी | : | करेला |
| अरबी | : | उलही मार, कसायुल हिमार |
| फारसी | : | करेला, सिमहंग |
| बंगाली | : | उच्छे करेला, पोटी कारक, बरामसिया |

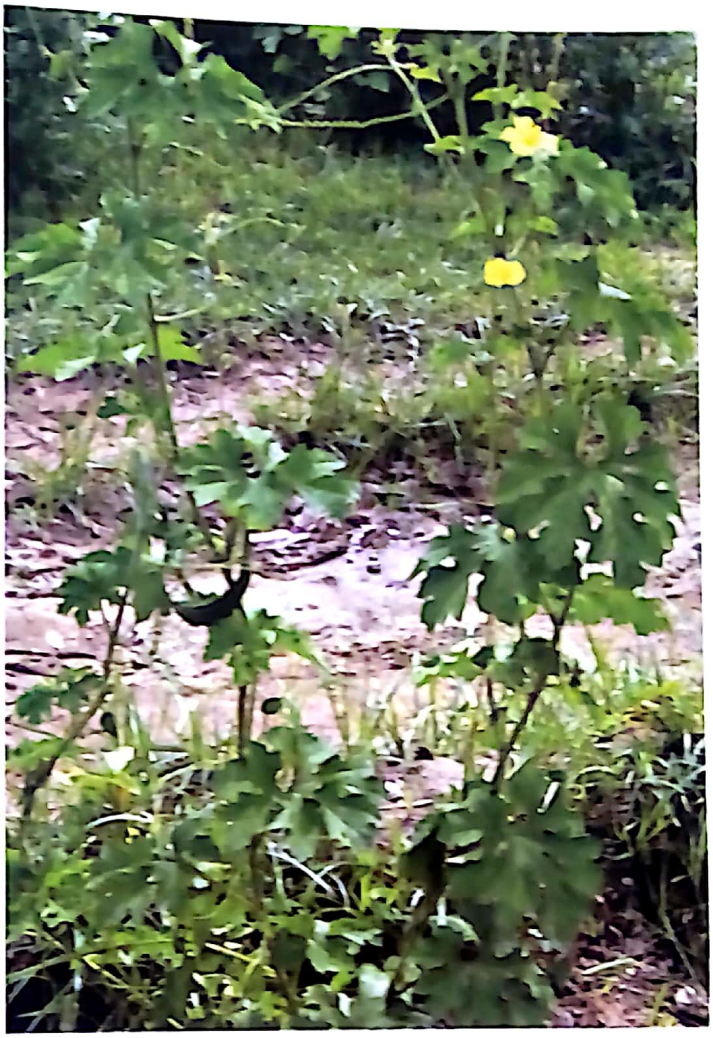

## परिचय

करेला के गुणों से सब परिचित हैं। मधुमेह के रोगी विशेषतः इसके रस और तरकारी का सेवन करते हैं।

## बाह्य–स्वरूप

प्रायः सब प्रांतों में इसका रोपण करते हैं। इसकी लता मृदु रोमश होती है। पत्ते 1 से 5 इंच के घेरे में गोलाकार, गहरे कटे किनारे वाले एवं 5 से 7 भागों में विभक्त रहते हैं। फूल चमकीले पीले रंग के होते हैं। फल 1 से 5 इंच लम्बे बीच में मोटे तथा दोनों तरफ नुकीले, त्रिकोणाकृति उभारों के कारण ऊवड़–खावड़ परन्तु पकने पर पीले रंग के हो जाते हैं।

## रासायनिक संघटन

इसमें गन्धयुक्त उड़नशील तेल केरोटीन, ग्लूकोसाइड, सेपोनिन एवं मामोरर्डिसाइन नाम क्षाराभ पाये जाते हैं। बीजों में 32 प्रतिशत विरेचक तेल पाया जाता है।

## गुण–धर्म

करेला, कड़वा, वातकारक, दीपन, भेदन, तिक्त, शीतल, वृष्य, हल्का, पित्तकारक, कफ पांडु, व्रणकृमि, श्वास–कास, प्रमेह, कुष्ठ तथा ज्वरनाशक है।[1]

भाव प्रकाश के अनुसार करेला शीतल, मलभेदक, दस्तावर, हल्का कड़वा और वातकारक है। यह ज्वर, पित्त–कफ–रक्तविकार, पाडुंरोग, प्रमेह और कृमिनाशक है।[2]

## औषधीय प्रयोग

शिरः शूल : इसके 10–12 मिलीलीटर पत्र रस के साथ थोड़ा गाय का घी और पित्तपापड़े का रस मिलाकर लेप करने से, पैत्तिक शिरः शूल शीघ्र नष्ट हो जाता है।

नेत्ररोग : आँख का फूला, जाला और रतौंधी में जंग लगे हुये लोहे के बरतन में इसके पत्तों का रस और एक काली मिर्च का थोड़ा सा हिस्सा घिसकर अंजन करना चाहिये या आंख की कोटर या आंख की पपड़ियों के आसपास लगाना चाहिये।

कर्णशूल : इसके ताजे फल का अथवा पत्तों का रस गरम कर

Scanned by CamScanner

कान मे डालने से लाभ होता है।

मुँह के छाले : इसके रस मे चाक मिट्टी मिलाकर लगाने से मुँह के छाले मिटते है।

वमनार्थ : पैत्तिक रोगो में पत्रस्वरस 10–12 ग्राम में थोड़ा सिरका या सैधा नमक मिलाकर या इसके रस में सुगन्धित द्रव्यो का योग देकर पिलाने से वमन और विरेचन होकर रोग की शान्ति हो जाती है।

कंठ शोथ : सूखे करेला को सिरके में पीसकर गरम करके लेप करने से कंठ की सूजन मिटती है।

स्तन्य : करेला के 20 ग्राम पत्तो को उबालकर पिलाने से प्रसूता स्त्री का दूध बढ़ता है और रूधिर शुद्ध होता है।

तिल्ली : इसके 10–15 मिलीलीटर फल के रस या पत्तों के रस में राई और नमक बुरक कर पिलाने से गठिया में लाभ होता है।

जलोदर : इसके पत्तों के 10–15 मिलीलीटर रस में मधु मिलाकर पिलाने से जलोदर में लाभ होता है।

कामला : इसके पत्तों के 10–15 मिलीलीटर रस में बड़ी हरड़ को घिसकर पिलाने से कामला रोग में लाभ होता हैं।

शिशु उत्क्लेश : पत्र स्वरस 6 ग्राम तक लेकर उसमें थोड़ा हरिद्रा चूर्ण मिला कर पिलाने से वमन होकर बालक का आमाशय शुद्ध होता है।

रक्तार्श : मूल के ऊपरी मोटे चिकने भाग का 50–100 मिलीलीटर क्वाथ बनाकर उसमें शक्कर मिलाकर सुबह–शाम पिलाने से लाभ होता है।

अर्श : इसकी जड़ को घिसकर बादी वाले अर्श के मस्सों पर लेप करने से लाभ मिलता है।

मासिक धर्म : इसके पत्तों के 10–15 मिलीलीटर रस में सौंठ, काली मिर्च और पीपल का चूर्ण बुरक कर दिन में तीन बार पिलाने से मासिक धर्म शुद्ध होने लगता है।

मधुमेह :

1. मधुमेह में यह उत्तम कार्य करता है। यह अग्न्याशय को उत्तेजित कर इंसुलिन के स्राव को बढ़ाता है। फलों के छाया शुष्क कर महीन चूर्ण बना रखें। इसे 3–6 ग्राम तक जल या शहद के साथ सेवन करना चाहिये।
2. ताजे फलों का रस 10–12 ग्राम तक पीते रहने से भी लाभ होता है। रोगी को इसका शाक भी खाना चाहिये।
3. यही प्रयोग रक्त शुद्धि के लिये भी करें।

पथरी : करेले के हरे पत्तों का रस 30 ग्राम, दही 15 ग्राम, दोनों को मिलाकर पिला दें, ऊपर से 50 ग्राम छाछ पिला दें। तीन दिन पिलाकर, फिर तीन दिन दवा बंद कर दें। फिर 4 दिन पिलाकर दवा बंद करें, इस प्रकार 5 दिन तक बढ़ावें। पथ्य में केवल खिचड़ी और चावल ही देना चाहिये।

आन्त्रकृमि : इसके पत्तों का 10–12 ग्राम रस पिलाने से आंतों के कीड़े मरते हैं।

विसूचिका : जड़ के 50–100 मिलीलीटर क्वाथ में तिल तेल मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

संधिवात : फल के ऊपरी छिलके को निकाल कर शेष भाग को आग पर 10 मिनट रखकर भुर्ता बना लें, फिर उसमें शक्कर मिला रोगी को गरम गरम सुहाता हुआ

Scanned by CamScanner

खिला दें। इस प्रकार प्रातः–सायं करीब 125 ग्राम तक यह भुर्ता शक्कर मिलाकर रोगी को गरम–गरम सुहाता हुआ खिलाने से स्नायुगतवात, संधिवात आदि में लाभ होता है। पीड़ास्थान पर फलों के रस का बार–बार प्रलेप करते रहें।

गठिया : करेला के कच्चे हरे फलों के रस को गरम करके लेप करने से गठिया में लाभ होता है।

वातरक्त रोग में : मूल के ऊपरी मोटे चिकने भाग का कल्क और क्वाथ द्वारा सिद्ध किये गये घी का सेवन करने से लाभ होता है।

स्तम्भन शक्ति : इसके पत्ते और फलों के रस को आग में खुश्क कर 3–3 ग्राम की गोलियां बना लें, इसमें 1 गोली पहले थोड़ा गाय का दूध पीकर ऊपर से निगल जायें, इसके बाद थोड़ी सी शहद चाट लें, इस प्रयोग से रति शक्ति और स्तंम्भन शक्ति में बहुत वृद्धि होती है।

चर्मरोग :

1. करेला के पंचांग, दालचीनी, पीपर और चावलों को जंगली बादाम के तेल में मिलाकर लगाने से खुजली आदि त्वचा के रोग मिटते हैं।
2. इसके पत्तों का रस सिर पर लेप करने से पीप वाली फुन्सियाँ मिटती हैं। इसकी जड़ का उबटन महीन फुन्सियों पर गुणकारी है।
3. इसके पत्तों का रस दाद पर लगाने से लाभ होता है।

दाह : पैर के तलुवों की दाह पर इसके पत्तों के रस का लेप करने से दाह शान्त होती है।

विस्फोटक रोग : इसके पत्तों का 10–15 मिलीलीटर ताजा रस थोड़ी हल्दी मिलाकर दिन में तीन बार पिलाने से चेचक, खसरा और अन्य विस्फोटक रोगों में लाभ पहुँचता है।

शीतज्वर : शीतज्वर में ठंड लगने से पहिले इसके 10–15 मिलीलीटर रस में जीरे का चूर्ण मिलाकर दिन में तीन बार पिलाना चाहिये।

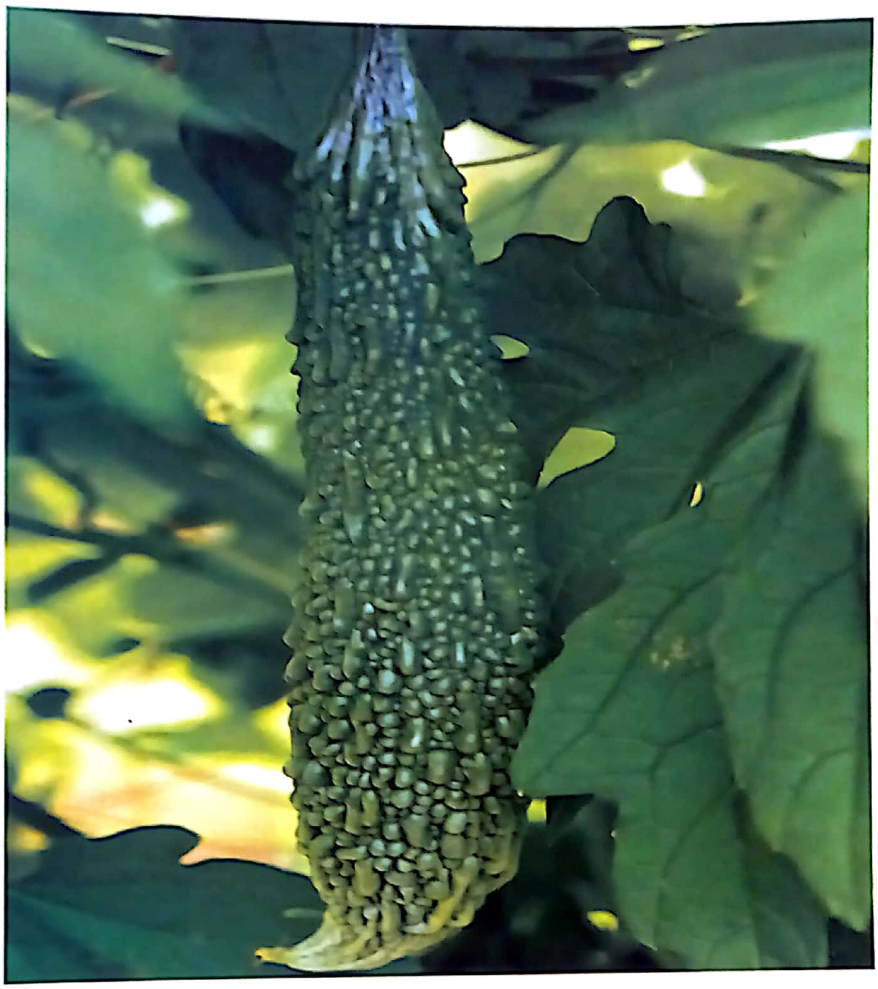

बच्चों के रोग : नवजात शिशु के मुख में इसके पत्ते का टुकड़ा रखने से उसकी छाती और अंतड़ियों का सब मल और आम निकल जाता है।

बाल निमोनियां : पत्र रस 10–12 मिलीलीटर को गुनगुना कर उसमें थोड़ी असली तथा केशर मिलाकर दिन में तीन बार पिलानें से विशेष लाभ होता है।

हानिकारक प्रभाव : अधिक मात्रा में करेला रूक्षता कारक है। अतः अतियोग से उपद्रव होने पर चावल और घी खिलाना चाहिए।

1. कारवेल्लं सकटुकं कटुपाकमवातलम्।
दीपनं भेदनं तिक्तमवृष्यमहिमं लघु।।
हन्त्यरोचकपित्तास्रकफपाण्डुव्रणक्रिमीन्।
श्वासकासप्रमेहाश्मकोठकुष्ठज्वरानपि। (कै०नि०)

2. कारवेल्लं कठिल्लं स्यातकारवेल्ली ततो लघुः।
कारवेल्लं हिमं भेदि लघु तिक्तम्वातलम्।
ज्वरपित्तकफास्रघ्नं पांडुमेहकृमीन् हरेत्।
तद्गुणा कारवेल्ली स्याद्विशेषादीपनी लघुः।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

# 77 कसौंदी (कासमर्द)

| | | |
|---|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : | *Cassia occidentalis* L. |
| कुलनाम | : | Caesalpiniaceae |
| अंग्रेजी नाम | : | Negro coffee |
| संस्कृत | : | कासमर्द, कासारि |
| हिन्दी | : | कसौंदी |
| गुजराती | : | कासोंदरी, संविध |
| मराठी | : | रणाक, कासविदा |
| पंजाबी | : | कासमर्द |
| बंगाली | : | कजू कासुदां, कालका, संदा |
| तैलगु | : | कर्सवेदं, कासिवेन |
| कन्नड | : | चुरूचुरुके |
| द्राविड़ी | : | पेयावारै |

## परिचय

कसौंदी का झाड़ीनुमा पादप वर्षा ऋतु में खाली भूमि तथा कूड़े करकट में अपने आप उग जाता है। यह भारतवर्ष के प्रायः सभी प्रान्तों में पाया जाता है। इसका एक और भेद पाया जाता है जिसे काली कसौंदी कहते है। इसकी शाखाएं कृष्णाभ बैंगनी आभा लिये होती है। मूलत्वक काली होती है जिससे जड़ जली हुई सी मालूम होती है। इससे कस्तूरी जैसी गंध आती है।

## बाह्य–स्वरूप

कसौंदी का क्षुप बहुशाखीय, शाखायें जड़ के पास से अथवा उससे किंचित ऊपर से निकली होती है। पत्तियाँ पक्षाकार संयुक्त और पत्रक 3 से 5 जोड़े 2–4 इचं लम्बे, तथा आधा इंच से डेढ़ इंच चौडे, अंडाकार भालाकार और नोकदार होते हैं। पुष्प पीले, फलिया, 3 इंच तक लम्बी 1 से०मी० चौड़ी चपटी और चिकनी होती है। यह जाड़े के दिनों में फलता–फूलता और हेमन्त में परिपक्व फलों के सहित शुष्कता को प्राप्त होता है। कसौंदी को सूंघने से एक खराब गन्ध आती है।

Scanned by CamScanner

## रासायनिक संघटन

कसौंदी की पत्तियों में सनाय जैसा विरेचक केथार्टिन, कुछ रंजक तत्व एवं लवण पाये जाते है। बीजों में टैनिक एसिड, वसा अम्ल चुआबी तत्व, इमोडिन, क्राइसेराबिन, अल्प मात्रा में सोडियम सल्फेट, मैगनीसियम सल्फेट तथा एक विषाक्त तत्व भी पाया जता है।

## गुण–धर्म

वात, कफ शामक एवं पित्त सारक है। बाह्य प्रयोग से यह कुष्ठघ्न तथा विषघ्न है। आभ्यान्तर प्रयोग में यह दीपन, वातानुलोमन, पित्त सारक एव रेचन है। यह आक्षेप शामक तथा वेदना स्थापन है। यह कफघ्न, श्वासहर, मूत्रल तथा ज्वरघ्न है।

## औषधीय प्रयोग

नेत्ररोग : कसौंदी के ताजे पत्तों का रस आँख में एक बूंद सुबह–शाम डालने से तथा आंखों पर पत्तों को बांधने से नेत्राभिष्यन्द, नेत्र लालिमा–शोथ में एक सप्ताह में आराम मिलता है।

कर्णरोग : कसौंदी के पत्तों का रस अकेले ही या दूध में मिलाकर गुनगुना कर कान में 2–4 बूंद टपकाने से कर्णशूल मिटता है।

गंडमाला : गंडमाला रोग में कासमर्द पत्रों, 10 ग्राम के साथ 2–4 नग काली मिर्च पीसकर लेप करते हैं। कसौंदी के पत्तों का लेप गंडमाला के घावों का शोधन–रोपण करने में सहायक है।

अपस्मार : अपस्मार, अपतंत्रक एवं आक्षेपक रोगों में इसकी मूलत्वक या पंचांग का क्वाथ 10–20 ग्राम दिन में 3–4 बार देने से लाभ होता है।

मानसिक रोग : अपस्मार, हिस्टीरिया में कसौंदी के फूलों को मसलकर रोगी को सुघांने से लाभ होता है। कसौंदी के शुष्क फूलों का काढ़ा 20 ग्राम दिन में तीन बार हिस्टीरिया से ग्रस्त स्त्री को देने से लाभ होता है।

कफज्वर एवं श्वास रोग :

1. इसके पत्रों का स्वरस 10–15 ग्राम 2 चम्मच मधु के साथ मिलाकर सुबह–शाम सेवन करने से लाभ होता है, इससे वमन तथा विरेचन भी होता है।
2. इसकी 8 से 10 ताजी फलियों को सेंककर खाने से खांसी मिटती है।
3. कफज कास तथा कृच्छ्रश्वास में कसौंदी के बीजों का चूर्ण, पिप्पली छोटी, काला नमक, तीनों को समभाग लेकर पानी में मिलाकर खरल करके 250 मिलीग्राम की गोलियाँ बनाकर, प्रातः या रात्रि में 1–2 गोली मुंह में रखकर चूसने से लाभ होता है।
4. प्रतिश्याय, नासा रोग तथा विशेष रूप से नासारन्ध्र अवरोध की दशा में कसौंदी पत्र स्वरस की एक–दो बूदों को नाक में टपकाने से आराम मिलता है।
5. श्वास रोग के रोगी के लिये कसौंदी के पत्तों का शाक अत्यन्त लाभकारी है। यह विक्षेप हर है।

कास :

1. इसके बीजों का चूर्ण 1–3 ग्राम, उष्ण जल के साथ प्रतिदिन तीन बार सेवन करने से लाभ होता है।
2. कसौंदी के पंचाग का चूर्ण 20 ग्राम, जल 350 ग्राम में उबालकर जब 40 ग्राम शेष रह जाये, तब छानकर एवं थोड़ा सा मधु मिलाकर सुबह–शाम सेवन करना चाहिये।

हिचकी : इसके 10 ग्राम पत्रों को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ का सेवन करने से हिचकी और श्वांस रोग में लाभ होता हैं।

कामला : कामला रोग में कासमर्द के 20 ग्राम पत्तों को 2–4 नग काली मिर्च के साथ पीस छानकर सुबह–शाम पिलाने से कामला रोग नष्ट होता है।

उदरकृमि : इसके 20 ग्राम पत्तों को 400 ग्राम जल में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ पिलाने से सूत्रकृमि तथा अन्य उदरगत कृमि नष्ट हो जाते है, इसके साथ उपयुक्त रेचन देकर कोष्ठ शुद्धि भी की जाती है।

मूत्रकृच्छ : इसकी मूल का क्वाथ 10–20 ग्राम दिन में 2 से 3 बार पिलाना मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, ज्वर, शोथ, विष, मूत्र विकार तथा अन्य रोग जहां मूत्रल औषधि प्रयोग करने की आवश्यकता हो, वहां उपयोगी है।

जलोदर : कसौंदी की 10 ग्राम जड़ को नींबू के रस में पीसकर उदर तथा बस्ति प्रदेश पर लेप करने से लाभ होता है। इसके साथ ही मूल का 2 ग्राम चूर्ण मट्ठे के साथ दिन में 1–2 बार देना चाहिये।

रक्तार्श : कसौंदी के बीज 10 तथा काली मिर्च के 1–2 दानों को मिलाकर पानी में पीसकर घोंट कर प्रातः–शाम जल के साथ पिलाने से खूनी बवासीर में लाभ होता है। इस को सुखरेचन के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता है।

मलरोध : मलावरोध तथा उदर विकारों में, कसौंदी के पुष्पों का गुलकन्द 3–6 ग्राम की मात्रा में प्रयोग करने से लाभ होता है।

प्रसव : इसके पत्रों का स्वरस देने से शीघ्र प्रसव होता है।

ज्वर : कसौंदी मूल का क्वाथ 10–20 ग्राम सुबह–शाम पिलाना विषमज्वर, मलेरिया तथा अन्य दीर्घः कालिक ज्वरों में लाभदायक है। विशेष रूप से विषमज्वर प्रतिरोधक है।

वीर्यविकार : कसौंदी की मूलत्वक के चूर्ण को महीन पीसकर 1–4 ग्राम की मात्रा में 5–10 ग्राम मधु के साथ मिलाकर सुबह–शाम एक गिलास दूध के साथ लेने से वीर्य का पतलापन दूर होकर वीर्य पुष्ट होता है तथा धातु क्षय ठीक हो जाता है।

दुर्बलता : शारीरिक दुर्बलता में कासमर्द मूल का क्वाथ 20 ग्राम सुबह–शाम पिलाने से बल बढ़ता है व कमजोरी मिटती है।

चर्मरोग :

1. कसौंदी के पंचांग का 40–60 ग्राम क्वाथ सुबह–शाम पीना रक्तशोधक एवं चर्म रोगों में भी लाभकारी है।

Scanned by CamScanner

2. कसौंदी के पंचांग के क्वाथ से स्नान करने से विकारग्रस्त दैहिक स्थलों को धोने से और कुछ दिन तक स्नान करने से पामा, विसर्प, दाद, कंडू, संक्रमण इत्यादि रोग ठीक हो जाते हैं।
3. दद्रु जैसे चर्मरोग में यह अत्यन्त मूल्यवान प्रभाव डालता है, इसके बीजों का मलहम बनाकर प्रयोग किया जाता हैं।
4. इसके बीजों को मट्ठे के साथ पीसकर लेप करने से लाभ होता हैं।
5. कसौंदी की जड़ को सिरके में पीसकर दाद पर लेप करने से लाभ होता है। जड़ को नीबूं के रस में घिसकर लगाने से भी लाभ होता है।

सुजाक : उपदंश की उग्रावस्था के बाद की स्थिति में काली कसौंदी की 10–20 ग्राम ताजी पत्तियों को 200 ग्राम पानी में पकाकर तैयार फांट–क्वाथ से व्रणों का प्रक्षालन करते हैं तथा उत्तर बस्ति देते हैं।

श्लीपद : श्लीपद रोग में इसके मूल का 10 ग्राम कल्क समभाग गोघृत के साथ सुबह–शाम देने से कुछ महीनों में ही लाभ हो जाता है।

श्वेतकुष्ठ : इसके और मूली के बीजों को समभाग लेकर दुगुनी मात्रा में गंधक के साथ पीसकर लेप करने से श्वेत कुष्ठ मिटता है।

विषघ्न : सिंह की मूंछ का बाल खाने से जो विष चढ़ जाता है, उसे उतारने के लिये इसका पत्रस्वरस 50 ग्राम की मात्रा में तीन दिन पीना चाहिये।

व्रण :

1. व्रण शोथ तथा दाह युक्त चर्मरोगों में इसके ताजे पत्तों को पीसकर लेप करने से लाभ होता है।
2. इसके पत्तों को पीसकर ताजे घाव पर लेप करने से घाव तुरन्त भर जाते हैं।

वृश्चिकदंश : कसौंदी की मूल का प्रयोग बिच्छू के विष को उतारने के लिये किया जाता है। जो वैद्य कसौंदी की जड को चबाकर बिच्छू के काटे व्यक्ति के कान में फूंक मारता है, वह शीघ्र ही बिच्छू के विष को दूर करता है। साथ ही वृश्चिक दंश स्थल पर मूल को पीसकर लेप करते है। इसकी अर्धपक्व शिम्बी को भूनकर वृश्चिकदंश के व्यक्ति को खिलाने से लाभ होता है।

कीटदंश : मकड़ी, बर्र, ततैया, आदि विषैले कीडों के काटने पर कसौंदी के पत्रों का स्वरस तथा आवश्यकतानुसार पत्र कल्क, दंशित स्थान पर लगाने से लाभ होता है।

नारुरोग : कसौंदी के पत्तों का कल्क, प्याज और नमक मिलाकर, खूब महीन पीसकर पीडित स्थान पर बांधने से नारु बाहर निकल जाता है।

कासमर्द का पेय : इसके के बीजों को हल्की आंच में हल्का घी डालकर भूनकर तथा चूर्ण करके पालसन कॉफी की तरह प्रयोग किया जा सकता है। यह पेय उत्तेजक, बल्य, श्रमहर, स्फूर्तिदायक, जठराग्निदीपन, कामोद्दीपक, तथा सौमनस्यजनन योग के रूप में उपयोगी है।

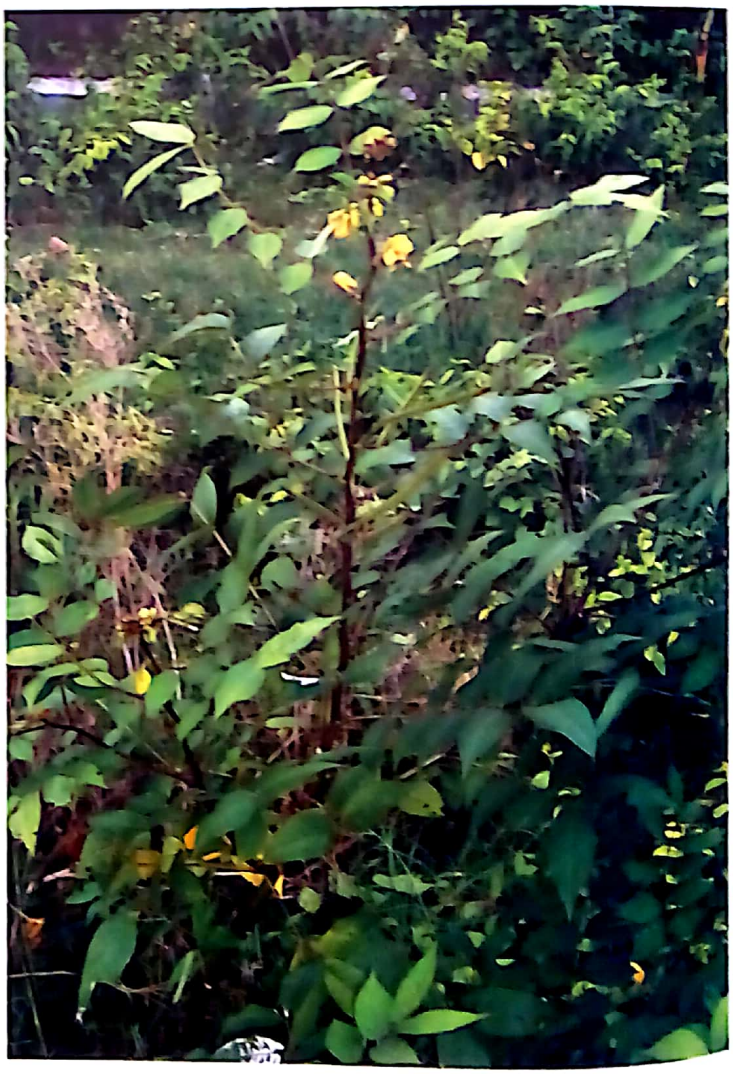

Scanned by CamScanner

# कुटज (इन्द्रजौ) कुड़ा

78

| | | |
|---|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : | *Holarrhena antidysenterica* (Roth) DC. |
| कुलनाम | : | Apocynaceae |
| अंग्रेजी नाम | : | Antidysenterica, Kurchi bark |
| संस्कृत | : | कुटज, वत्सक, गिरिमल्लिका |
| हिन्दी | : | कुड़ा, कुडैया, इन्द्रजौ |
| मराठी | : | कुड़ा |
| बंगाली | : | कुरचि |
| पंजाबी | : | कुडाशक्ल |
| अरबी | : | जबाने कुंज, श्कतल्क |
| तैलगु | : | कौडिश्चटटु |
| द्राविड़ी | : | पालावेत, पाल |

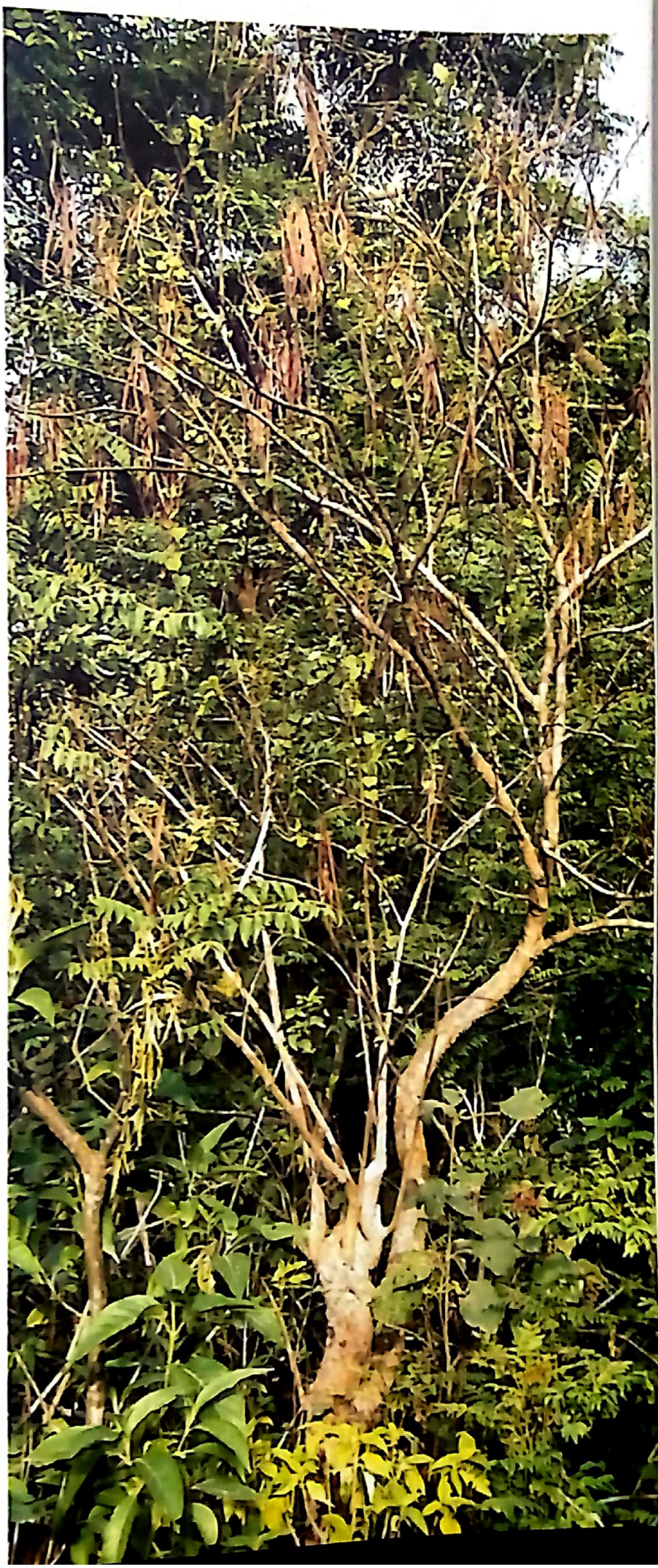

## परिचय

कुटज का वृक्ष भारतवर्ष की अत्यन्त प्रसिद्ध औषधि है। अतिसार, रक्त अतिसार, पित्तातिसार, आमातिसार, मरोड़ी के दस्तों में यह औषधि मंत्र की तरह तत्काल आराम पहुँचाती है। इसकी दो जातियाँ पाई जाती है : श्वेत और कृष्ण कुटज के बीज कड़वे होते हैं। यहाँ पर उसी का विवरण दिया गया है।

## बाह्य–स्वरूप

इसका वृक्ष 30–35 फुट तक ऊँचा, कांड छोटा सीधा और गोलाई में 3–4 फुट तक होता है। कांड त्वक आधा इंच मोटी, भूरी और कुछ काले रंग की खुरदरी और टुकड़ों में उतरती है। पत्र 4–8 इंच लम्बे, 3–6 इंच चौड़े, पुष्प गुच्छों में श्वेत वर्ण की फली 1–2 फीट लम्बी, और दो एक साथ जुड़ी होती है। फली के भीतर गेहूं के आकार के बीज होते है, इन्हें ही इन्द्र जौ कहते हैं। बीज के लम्बे सिरे पर मदार की तरह कोमल लम्बे रोम गुच्छ लगे रहते हैं। पुष्पागम मई–जुलाई में और फलागम शरद ऋतु में होता है।

## रासायनिक संघटन

कुटज त्वक् में कोनेसीन, कोनेसिमाइन, आइसो कोनेसिमाइन, कुरचीन, कुरचीसीन आदि क्षार स्वरूप के अनेक सक्रिय तत्व पाये जाते हैं।

## गुण–धर्म

कुटज त्रिदोष नाशक हैं, अतिसार, प्रवाहिका नाशक तथा दीपन,

Scanned by CamScanner

स्तम्भन, ज्वरघ्न, अर्शोघ्न, कंडूघ्न, स्तन्य शोधन एवं आस्थापनोपग है। यह विसर्प तथा कुष्ठ विकारों को जीतने वाला है। यह विषम ज्वर निबन्धक है।

यह अमीबा जन्य प्रवाहिकानाशक तथा आम, रक्त एवं जलांश का शोषक है। कुटज संग्राहिक एवं उपशोषण द्रव्यों में श्रेष्ठ माना जाता है।

## औषधीय प्रयोग

दंतशूल : दंतशूल में कुटज छाल की क्वाथ से कुल्ले करने से लाभ होता है।

रक्तार्श : इसकी 10 ग्राम छाल को पीसकर 2 चम्मच मधु के साथ चटाने से रक्तार्श मिटता हैं।

अतिसार :

1. नागरमोथा, अतीस, पान, कुटज की छाल तथा लाक्षा के समभाग चूर्ण को 2–5 ग्राम की मात्रा में उरक्षत के रोगी को अतिसार में जल के साथ 3–4 बार देना चाहिये।
2. अतिसार में इसकी कांड की छाल का 5–10 ग्राम, रस 1 चम्मच मधु के साथ मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करने से लाभ होता है।
3. 50 ग्राम इन्द्रजौ की छाल के क्वाथ को गाढ़ाकर उसमें अष्टमांश 6 ग्राम अतीस का चूर्ण मिलाकर दिन में तीन बार पिलाने से त्रिदोष जनित अतिसार मिटता है।

रक्तातिसार : 40 ग्राम इन्द्रजौ की छाल को 375 ग्राम पानी में उबालकर जब एक चौथाई शेष रह जाये, छानकर उसमें उतना ही

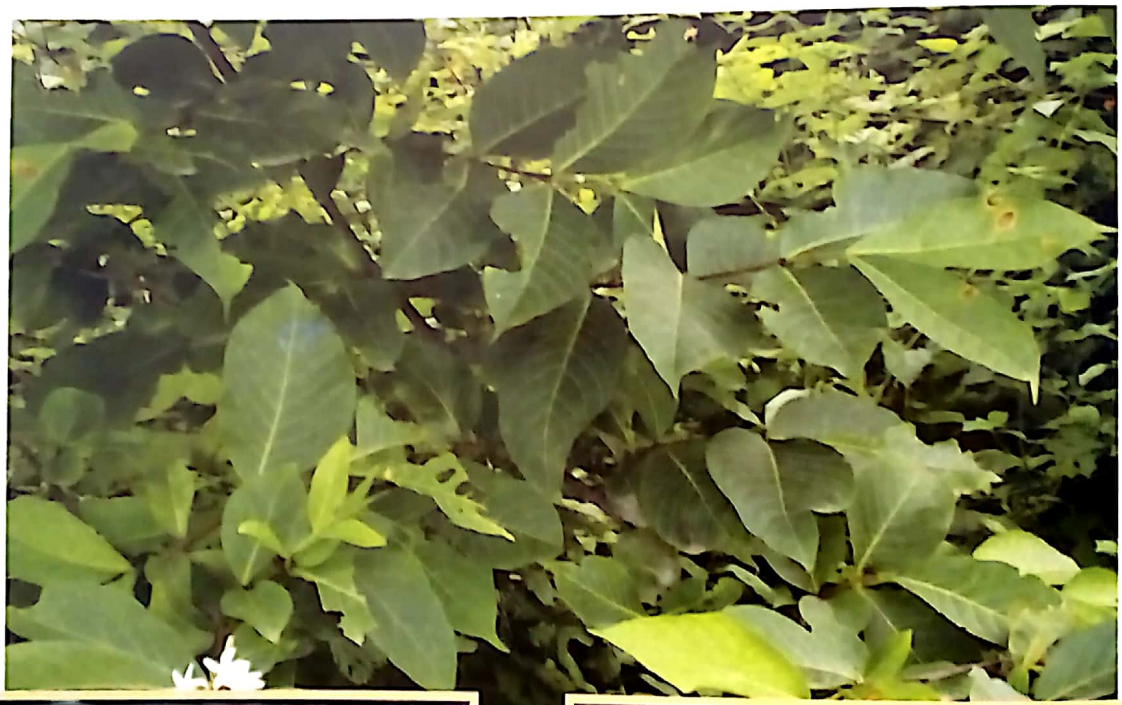

Scanned by CamScanner

अनार का रस मिलाकर अग्नि पर गाढ़ा करके उसे छः ग्राम की मात्रा में छाछ के साथ सुबह–शाम मिलाकर पिलाने से रक्त अतिसार मिटता है।

पित्तातिसार : पित्त अतिसार में इसके बीज 4 तोले जल में उबालकर, इस उबले हुये जल में मधु मिलाकर दिन में तीन बार पिलाने से लाभ होता है।

रक्तप्रवाहिका : इसकी 15 ग्राम ताजी छाल को छाछ में पीसकर सेवन करने से रक्त प्रवाहिका में तुरन्त लाभ होता है।

अश्मरी : मूल की 5 ग्राम छाल को दही में घिसकर दिन में दो बार सेवन करने से लाभ होता है।

पित्तज प्रमेह : कुटज, रोहिड़ी, बहेड़ा, कैथ, शाल, छतिवान, कबीला के पुष्पों को समभाग लेकर चूर्ण बनाकर 2–5 ग्राम की मात्रा में दो चम्मच मधु के साथ मिलाकर कफज तथा पित्तज प्रमेह के रोगी को सुबह–शाम देना चाहिये।[1]

प्रमेह : प्रमेह में कुटज के पुष्पों का शाक या 2–3 ग्राम चूर्ण का नियमित सेवन लाभकारी है।

कुटज की फली

इन्द्रिय दौर्बल्य : 6 ग्राम इन्द्रजौ को चार प्रहर भैंस के दूध में भिगोकर पीसकर, इन्द्री पर लेपकर कर पट्टी बांधें, कुछ देर पश्चात् गर्म जल से धो दें। कुछ दिन तक करने से इन्द्री पुष्ट हो जाती है।

कुष्ठ : कुष्ठ रोग में इसकी 10 ग्राम छाल को जल में पीसकर दिन में तीन बार सेवन करने से लाभ होता है।

रक्तपित्त : रक्तपित्त में इसकी छाल के कल्क से सिद्ध किया हुआ घी 5–10 ग्राम की मात्रा में नियमित सेवन करना चाहिये।

व्रण : इसकी छाल के क्वाथ से व्रण धोने से व्रणरोपण होता है।

विस्फोटक : कुटज की छाल को चावल के पानी में पीसकर लेप करने से फफोले, फुसिंयों में, लाभ होता है। इसकी ताजी छाल का प्रयोग अधिक लाभकारी होता है।

विशेष :

1. वातरक्त, कफ, दाह, पित्तजन्य कई प्रकार के शूल, अर्श अतिसार, त्रिदोष कुष्ठ, कृमि, विसर्प और रूधिर विकारों में कुटज का प्रयोग लाभकारी होता है।
2. मलेरिया ज्वर, इकतारा तथा मियादी बुखार को तोड़ने में यह औषधि बहुत प्रभावशाली है। इसके बीज पेट के अफारे को दूर करने वाले, संकोचक, कामोद्दीपक और पौष्टिक हैं। ये सीने के दर्द में, श्वांस में, उदर शूल और मूत्रकृच्छ रोग में उपयोगी होते हैं। इसकी ताजी छाल का 10 ग्राम रस चावलों के मांड के साथ सुबह–शाम लेना बवासीर, संग्रहणी आदि में लाभकारी है।

1 इन्द्रयवं त्रिदोषघ्नं, संग्राहि कटुशीतलम्।
ज्वरातीसार रक्तार्शः कृमिविसर्पकुष्ठनुत्।।
दीपन गुदकीलास्रवातास्रश्लेष्मशूलजित्।
(भाव प्रकाश)

2 कुटजः कटुकोरूक्षो दीपनस्तुवरो हिमः।
अर्शोऽतिसारपित्तास्त्रकफतृष्णामकुष्ठनुत्।
(भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

# 79 लाजवंती (छुई-मुई)

| | | |
|---|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : | *Mimosa pudica* L. |
| कुलनाम | : | Mimosaceae |
| अंग्रेजी नाम | : | Sensitive plant |
| संस्कृत | : | लज्जालु, नमस्कारी, शमीपत्रा |
| हिन्दी | : | लजालु |
| मराठी | : | लाजालू |
| बंगाली | : | लाजक |
| पंजाबी | : | लालवंत |
| तैलगु | : | अत्तापत्ती |

## परिचय

लाजवंती का प्रसरणशील छोटा सा क्षुप भारत के समस्त उष्ण प्रदेशों में पाया जाता है। इस बूटी को हाथ लगाते ही यह सिकुड़ जाती है और हाथ हटाने पर पुनः अपनी पूर्व अवस्था में आ जाती है, यही इस बूटी की खास पहचान है। इस प्रजाति के पौधे अनेक रूपों में मिलते हैं।

## बाह्य-स्वरूप

इसका गुल्म जातीय प्रसरणशील क्षुप, कंटकित, जमीन पर फैला हुआ या एक बालिश्त ऊपर उठा हुआ होता है। कभी-कभी 2-4 फुट ऊंचे क्षुप भी पाये जाते हैं। पत्र द्विपक्षवत्, पत्रक खैर के पत्रकों के सदृश, पुष्प मुंडको में गुलाबी रंग के, फल आधा इंच से पौन इंच लम्बे। प्रत्येक फली में 3-5 बीज होते हैं। वर्षा ऋतु में पुष्प तथा शीतकाल में फल लगते हैं।

## रासायनिक संघटन

मूल में टैनिन तथा एक विषाक्त क्षाराभ माइमोसिन होता है। बीजों में म्यूसिलेज होता है।

## गुण-धर्म

लाजवंती शीतल, कफ पित्त दूर करने वाली रक्तपित्त, अतिसार तथा योनि रोगों का विनाश करने वाली है।[1] यह कड़वी, चरपरी, पित्त अतिसार का नाश करने वाली, शोथ, दाह, श्रमश्वास, व्रण, कुष्ठ तथा कफ का नाश करने वाली है।[2]

Scanned by CamScanner

# औषधीय प्रयोग

गंडमाला : इसके पत्तों के 40 मिलीग्राम स्वरस को नियमपूर्वक पिलाने से गंडमाला मिटती है।

स्तन शैथिल्य : लज्जालू और असगंध की जड़ पीसकर लेप करने से स्तनों का ढीलापन मिटकर स्तन कठोर और पुष्ट हो जाते हैं।

खांसी : इसकी जड़ को गले में बांधने से खांसी मिटती है। यह एक विचित्र किन्तु चमत्कारिक प्रयोग है।

बवासीर :

1. इसके पत्तों का एक चम्मच चूर्ण दूध के साथ प्रातः–सायं अथवा तीन बार देने से बावासीर में लाभ होता है।
2. इसकी जड़ और पत्ते, दोनों का एक चम्मच चूर्ण दूध में मिलाकर दो बार देने से बवासीर और भगंदर में लाभ होता है।

रक्तातिसार :

1. लाजवंती मूल का 3 ग्राम चूर्ण दही के साथ खिलाने से रक्त अतिसार से तुरंत लाभ होता है।
2. लाजवंती की जड़ के 10 ग्राम चूर्ण का एक गिलास जल में क्वाथ कर चौथाई शेष क्वाथ को, सुबह–शाम पिलाने से रक्त अतिसार में लाभ होता है।

अजीर्ण : इसके पत्तों का 30 मिलीग्राम रस पिलाने से अपच दूर होता है।

कामला : इसके पत्तों के रस का सेवन करने से पहले सात दिन में ज्वर और सब प्रकार के पित्त विकार मिटते हैं। दूसरे सप्ताह में अर्श और कामला आदि रोग मिटते हैं।

पथरी : लाजवंती की 10 ग्राम जड़ का क्वाथ बनाकर दोनों समय पिलाने से पथरी गलकर निकल जाती है।

मधुमेह : मधुमेह में इसकी जड़ का काढ़ा 100 ग्राम देने से लाभ होता है।

मूत्रातिसार : इसके पत्तों को जल में पीसकर बस्ति प्रदेश पर लेप करने से मूत्रातिसार मिटता है।

योनिभ्रंश : लाजवंती के पत्तों का रस या मूल घिसकर बाहर निकले हुए गर्भाशय पर लगावें और हाथों पर लेप कर ऊपर चढ़ा, पट्टी बांधकर आराम करने से गर्भाशय ऊपर रह जाता है। कुछ समय तक नियमित रूप से योनि पर लगाने से योनि संकोचन भी होता है।

वृषण शोथ : इसके पत्तों को कुचलकर अंडकोष की सूजन पर लेप करने से लाभ होता है।

नाड़ी व्रण :

1. इसकी जड़ को घिसकर लेप करने से नासूर मिटता है।
2. इसके पत्तो को कुचलकर इसमें रूई का फोहा रखकर जीर्ण व्रण, नाड़ी व्रण में प्रयोग करने से लाभ होता है।

व्रण–शोथ :

1. इसकी जड़ को घिसकर लेप करने से सूजन बिखर जाती है।
2. इसके बीजों का चूर्ण घाव पर लगाने से लाभ होता है।

1 लजालुः शीतला तिक्ता कषाया कफपित्तजित्।
रक्तपित्तमतिसारं योनिरोगान् विनाशयेत्।। (भाव प्रकाश)

2 रक्तपादी कटुः शीता पित्तातिसार नाशिनी।
शोफदाहश्रमश्वासव्रणकुष्ठकफास्रनुत्।। (रा०नि०)

Scanned by CamScanner

# 80 लौंग (लवंग)

| | | |
|---|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : | *Syzygium aromaticum* (L.) Merr. & L.M. Perry |
| कुलनाम | : | Myrtaceae |
| अंग्रेजी नाम | : | Clove |
| संस्कृत | : | लवंण, देवकुसुम, श्रीप्रसून |
| हिन्दी | : | लवंग, लौंग |
| गुजराती | : | लवंग |
| मराठी | : | लवंग |
| बंगाली | : | लवंग |
| तैलगु | : | कारावल्लु |
| अरबी | : | करन्फ |
| फारसी | : | मेडक, मेखत |

## परिचय

लौंग का मूल उत्पति स्थल मलक्का द्वीप है, परन्तु भारत में दक्षिण में केरल और तमिलनाडु में इसकी खेती की जाती है। भारतवर्ष में इसका अधिकांश आयात सिंगापुर से किया जाता है। लौंग के वृक्ष पर लगभग 9 वर्ष की आयु में फूल लगने शुरू हो जाते है। इसकी पुष्प कलियों को ही सुखाकर बाजार में लौंग के नाम से बेचते हैं।

## बाह्य–स्वरूप

इसका सदा हरित वृक्ष 40–40 फुट ऊँचा होता है। काण्ड से चारों ओर कोमल और अवनत शाखायें निकल कर फैली रहती है। पत्र हरितवर्ण 3–6 इंच अण्डाकृति होते है। पुष्प सुगन्धित, बैगनी रंग के होते है। फल लवंगाकृति होता है जो मातृलवंग कहा जाता है।

## रासायनिक संघटन

इसमें एक उड़नशील तेल पाया जाता है जिसमें यूजीनोल, एमिल

Scanned by CamScanner

युजेनोल, कैरियोफाइलीन आदि मुख्य घटक होते है। इसके अतिरिक्त लौंग में अनेक तत्व पाये जाते है।

## गुण–धर्म

लौंग चरपरी, कड़वी, नेत्र हितकारी, शीतल, दीपन–पाचन, रुचिकारक, कफ–पित्त, रक्तरोग, प्यास, वमन, अफारा, शूल, श्वास हिचकी और क्षय रोग का नाश करता है। लवंग तेल, अग्निवर्धक, [illegible], दन्तशूल, कफ और गर्भिणी का वमन का नाशक है।

### लौंग के कुछ विशेष गुण

1. लौंग के सेवन से भूख बढ़ती है। आमाशय की रस क्रिया को बल मिलता है, भोजन के प्रति रूचि पैदा होती है। और मन प्रसन्न होता है।
2. लौंग कृमिनाशक है, जिन सूक्ष्म जन्तुओं के कारण से मनुष्य का पेट फूलता है, उन्हें यह नष्ट कर देती है, जिससे मनुष्य की रोग निवारण क्षमता बढ़ती है।
3. यह चेतना शक्ति को जाग्रत करती है।
4. यह शरीर की दुर्गन्ध को नष्ट करती है। शरीर के किसी भी बाह्य अंग पर लेप करने से लौंग चेतना कारक, वेदना नाशक, व्रणशोधक और व्रणरोपक है।
5. लौंग मूत्रल है। यह मूत्रमार्ग की शुद्धि कर, शरीर के बिजातीय द्रव्यों को मूत्र के द्वारा बाहर निकाल देती है।

## औषधीय प्रयोग

**अर्धावभेदक एवं शिरःशूल** : 6 ग्राम लौंग को पानी में पीसकर किंचित गरम कर गाढ़ा लेप कनपटियों पर करने से शिरः शूल एवं अर्धावभेदक में लाभ होता है।

**नेत्ररोग** : लौंग को तांबे के बरतन में पीसकर, शहद मिलाकर अंजन करने से नेत्र के सफेद भाग के रोग मिटते है।

**नजले का मस्तकशूल** : 2 लौंग और ½ ग्राम अफीम को पानी के साथ पीसकर गरम करके ललाट पर लेप करने से नजले के कारण उत्पन्न शिरोवेदना शान्त होती है।

**कफ निष्कासन के लिये** : लौंग के 2 ग्राम जौकूट किये हुये चूर्ण को 125 ग्रान पानी में उबालें, चतुर्थांश शेष रहने पर उतार छानकर थोड़ा गरम कर पी लेवें। यह कफ को द्रवित कर निकाल देने में अति उत्तम है।

**श्वास की दुर्गन्ध** : लौंग को मुंह में रखने से मुंह और श्वास की दुर्गन्ध मिटती हैं।

**दमा** : लौंग, आंकडे के फूल और काला नमक समभाग लेकर चने के आकार की गोली बना, मुख में रखकर चूसने से दमा और श्वास नलिका के रोग मिटते हैं।

**जलन** : 2–4 नग लौंग को शीतल जल में पीसकर, मिश्री मिलाकर पीने से हृदय की जलन मिटती है।

**कुक्कुरकास** : 3–4 नग लौंग को आग पर भूनकर, पीसकर, शहद मिलाकर चाटने से कुक्कुर खांसी मिटती है।

**हैजे की प्यास** : एक या ड़ेढ़ ग्राम लौंग को करीब डेढ किलो जल में डालकर उबाले 2–3 उबाल आने पर नीचे उतार कर ढक देवें, इसमें से 20–25 ग्राम जल बार–बार पिलाने से हैजे से उत्पन्न प्यास मिटती है।

**अजीर्ण** : लौंग 1 ग्राम और हरड़ 3 ग्राम का क्वाथ कर उसमें थोडा सा सैंधा नमक डालकर पिलाने से अजीर्ण मिटता है और दस्त साफ होता है।

**हृल्लास** : लौंग को पानी के साथ पीसकर किंचित उष्ण कर थोड़ा–थोड़ा पिलाने से जी मिचलाना और प्यास मिटती है।

**क्षुधावर्धन हेतु** : लौंग और छोटी पीपल दोनों को समभाग ले कपड़े से छानकर चूर्ण बना लें, इस चूर्ण को 1½ ग्राम की मात्रा में प्रातः–सायं मधु के साथ चाटने से ज्वर जन्य मंदाग्नि व निर्बलता दूर होती है।

**अफारे में** : लौंग, सौंठ, अजवायन और सैंधा नमक 10–10 ग्राम, गुड़ 40 ग्राम पीसकर 325–325 मिलीग्राम की गोलियां बना 1 गोली दिन में 2–3 बार सेवन करने से अफारा, मंदाग्नि दूर होती है।

**उदर रोग** :

1. बदहजमी, खट्टी डकारें आदि में लौंग, शुंठी, मिर्च, पीपल,

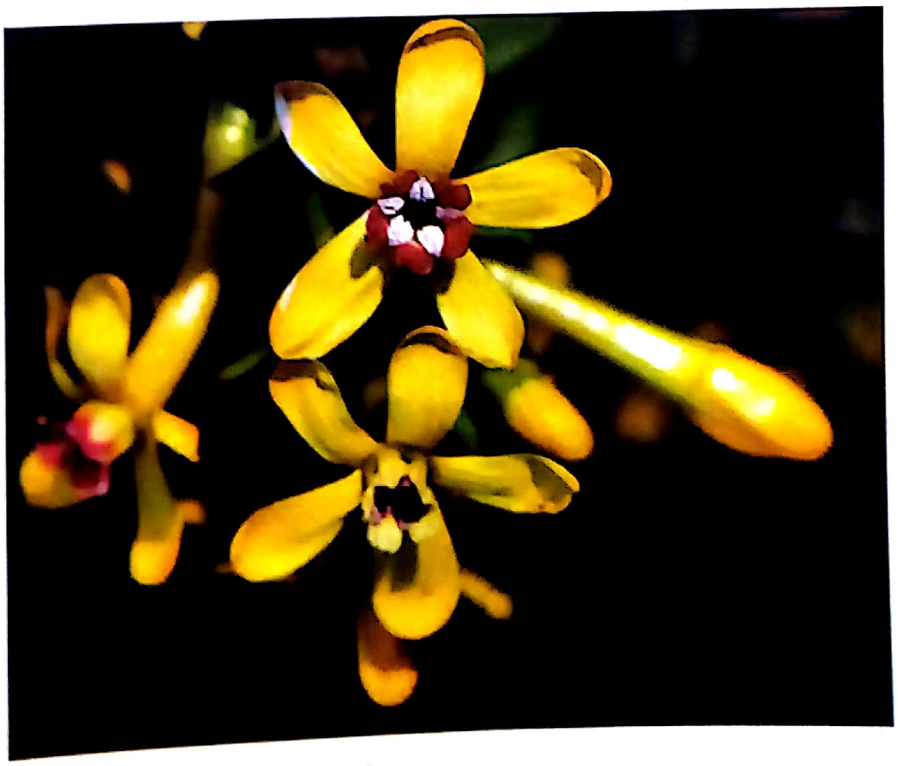



Scanned by CamScanner

अजवायन 10–10 ग्राम, सैंधा नमक 50 ग्राम, मिश्री 50 ग्राम इनको महीन पीसकर चीनी के बरतन में रखकर, नीबू का रस इतना डाले कि सब चूर्ण उसमे तर हो जाये, धूप में सुखाकर सुरक्षित कर लें। इसे एक चम्मच भोजन के बाद सेवन करने से मुंह का स्वाद अच्छा हो जाता है, तथा बदहजमी खट्टी डकारे आदि बन्द हो जाती है।

2. मंदाग्नि अजीर्ण आदि मे 1–2 ग्राम लौंग को जौ कूटकर 100 ग्राम जल में क्वाथ कर 20–25 ग्राम शेष रहने पर छानकर ठंडाकर पीने से, मंदाग्नि, अजीर्ण एवं हैजे में लाभ होता है।
3. अफारे में लौंग का फांट, या लौंग का तेल देने से तुरन्त लाभ होता है।

गर्भकाल में वमन :

1. 1 ग्राम लबंग चूर्ण को मिश्री की चाशनी व अनार के रस मे मिलाकर चाटने से गर्भवती स्त्री के वमन बन्द होती है।
2. लौंग का फांट पिलाने से गर्भवती की वमन बन्द हो जाती है।

ज्वर में यह फांट न दे।

लवण चतु: समम् : जायफल, लौंग, जीरा, समान भाग लेकर चूर्ण बनावें, इसे 2–3 ग्राम की मात्रा में लेकर शहद और शक्कर के साथ सेवन करने से आमातिसार और दर्द नष्ट होता है।

लवंग फांट : लौंग के दरदरे 10 ग्राम चूर्ण को ½ किलोग्राम उबलते हुये जल में डालकर ढक दें, आधे घंटे बाद छान लें। 25–50 ग्राम जल दिन में 3 बार पिलाने से उदरवात और अपचन दूर होकर अग्नि प्रदीप्त होती है।

लवंगादि चूर्ण : लौंग, सौंठ, 10–10 ग्राम अजवायन, सैंधा नमक 12–12 ग्राम इन सबका चूर्ण कर भोजन के बाद 1½ ग्राम जल के साथ सेवन करें– यह अजीर्ण और अम्ल रोग नाशक है।

स्तम्भन के लिये : लौंग व जायफल को घिसकर नाभि पर लेपकर स्त्री सहवास करने से स्त्री और पुरुष की स्तम्भन शक्ति बढ़ जाती है।

नासूर : 5–6 लौंग और 10 ग्राम हल्दी को पीसकर लगाने से नासूर ठीक हो जाता है।

Scanned by CamScanner

| | | |
|---|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : | *Solanum nigrum* L. |
| कुलनाम | : | Solanaceae |
| अंग्रेजी नाम | : | Black night or Night shade |
| संस्कृत | : | काकमाची, रसायनवरा, काकिनी, सर्वतिक्ता |
| हिन्दी | : | मकोय |
| मराठी | : | कुदा |
| बंगाली | : | काकमाची, गुड़कामाई |
| पंजाबी | : | केचूमेच, मको |
| तेलगु | : | काचि |
| कन्नड | : | गारीकेसोप्पू |
| अरबी | : | इनबुस्सा–लब |
| फारसी | : | अंगूर, रोबाह |

## परिचय

यह छोटा सा पौधा भारतवर्ष के छाया–युक्त स्थानों में सर्वत्र पाया जाता है। इसमें पूरे वर्ष पर्यन्त फूल और फल देखे जा सकते हैं।

## बाह्य–स्वरूप

इसकी झाड़ी शाखायुक्त एक–डेढ़ फुट तक ऊँची, तथा शाखाओं पर उभरी हुई रेखाएं होती है। पत्र अंडाकार या आयताकार, दन्तुर या खण्डित, 2–3 इंच लम्बे, एक–डेढ़ इंच तक चौड़े होते है। पुष्प छोटे, श्वेत वर्ण, बहिरक्षीय पुष्प दंडो पर 3–8 के गुच्छों में नीचे झुके होते हैं। फल छोटे, स्निग्ध गोलाकार अपरिक्व अवस्था में हरे रंग के और पकने पर नीले या बैंगनी रंग के, कभी–कभी पीले या लाल होते हैं। बीज छोटे, चिकने, पीले रंग के, बैंगन के बीजों की तरह होते हैं परन्तु बैंगन के बीजों से बहुत छोटे होते है। पकने पर फल मीठे लगते हैं।

## रासायनिक संघटन

मकोय की पत्तियों में प्रोटीन 5.9%, वसा खनिज 2.1%, कार्बोहाइड्रेट 8.9%, कैल्शियम 410, फास्फोरस 60, लोहा 20.5 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त रिबोफ्लेबिन 0.59, निकोटिनिक अम्ल 0.92, विटामिन सी 0.11 तथा बी, कैरोटिन 0.74 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम होते हैं। कच्चे हरे फलों में चार स्टिरायड, एल्केलायड, सोलामार्जिन, सोलेसोनिन तथा ए० आर० बी० सोले नाइग्रीन होते है। कुल शक्कर 0.101–0.431 प्रतिशत होता है। पके फलों में ग्लुकोज

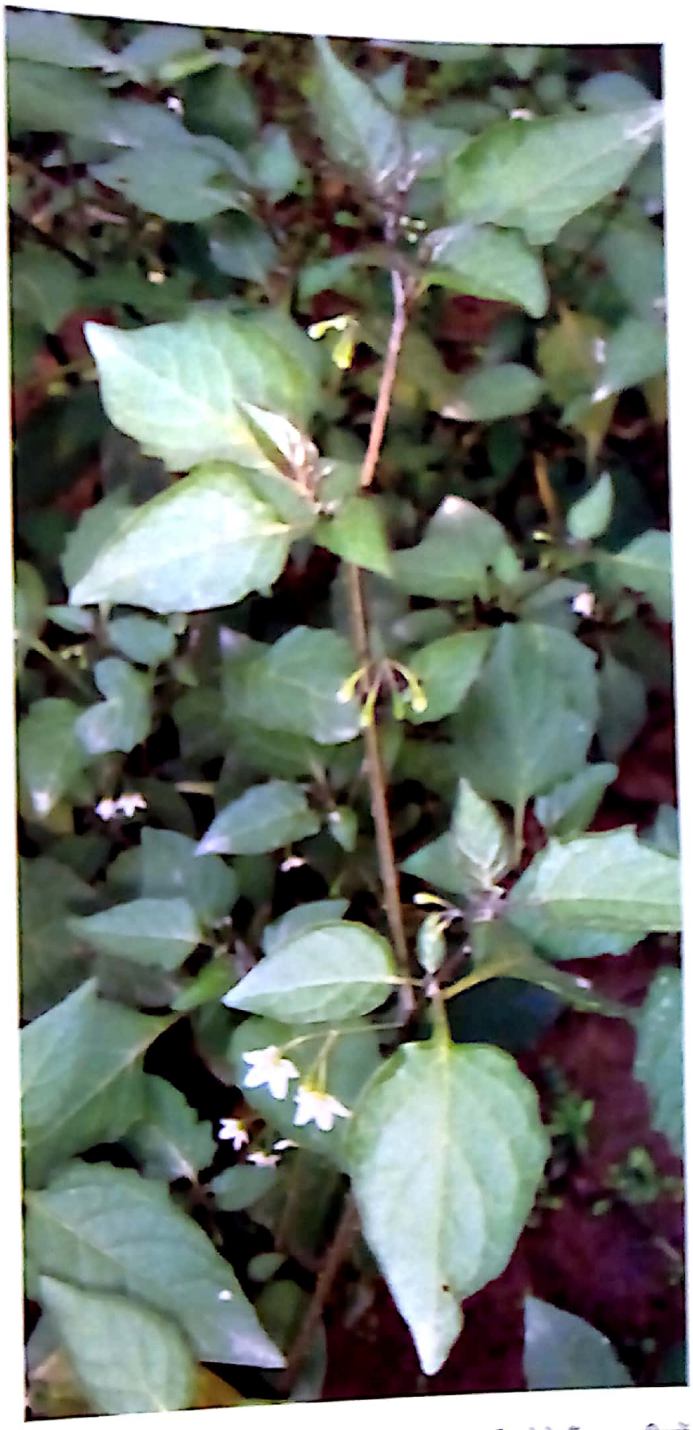

और फ्रक्टोज (15–20 प्रतिशत) तथा विटामिन सी होते हैं तथा बीजों से एक हरे पीले रंग का तेल निकलता है।

## गुण–धर्म

यह त्रिदोषघ्न है। स्निग्धता और अल्पमात्रा में उष्ण होने के कारण वातशामक तिक्त और कटु होने से पित्त और कफ का शामक है। मकोय रसायन, शोथहर, वेदनास्थापक, व्रण शोधन तथा सवर्णीकरण हैं। यह दीपन, यकृत को उत्तेजना देने वाला, पित्तसारक और रेचन है। कफघ्न,

Scanned by CamScanner

हिक्का निग्रहण और श्वासहर है। यह मूत्रल, स्वेदजन कुष्ठघ्न ज्वरघ्न, कटुपौष्टिक और विषघ्न है।' ' यकृत की क्रिया बिगड़ने से जो सूजन, बवासीर, अतिसार या कई प्रकार के चर्म रोग होते है, वे इसके सेवन से नष्ट हो जाते है।

मकोय, सुरसा, भार्गी निर्गुण्डी यह सब कफ को दूर करने वाले एवं कृमिनाशक है। प्रतिश्याय, अरुचि, श्वास, कास नाशक एवं शोधक है।

## औषधीय प्रयोग

अनिद्रा : इसकी जड़ों के 10–20 ग्राम क्वाथ मे थोड़ा गुड़ मिलाकर पिलाने से निद्रा आती है।

नेत्र रोग : पित्त रोग वालो की आंखों को ढक कर, आंखो को इसके घी चुपड़े फलो की धूनी देने से कीड़े बाहर निकल आते है।

कर्णशूल : नासिका एवं कर्ण रोग मे मकोय के पत्तो का किंचित उष्ण रस 2–2 बूंद कान में टपकाने से लाभ होता है।

मुखपाक : इसके 5–6 पत्तों को चबाने से मुख और जिह्वा के छाले मिटते हैं।

दाँत के लिये : इसके पत्तो के रस मे घी या तेल समभाग मिलाकर दांतों की जगह पर मलने से दांत बिना कष्ट के निकल आते हैं।

हृदय रोग तथा जलोदर : इसके पत्ते, फल और डालियों का सत्व निकालकर, 2 से 8 ग्राम तक की मात्रा में दिन में 2–3 बार देने से जलोदर और सब प्रकार के हृदय रोग मिटते हैं।

वमन : इसके 10–15 मिलीलीटर रस में 125–250 मिलीग्राम सोहागा मिलाकर पिलाने से वमन बन्द होती है।

शाक : इसके पत्ते और कोमल शाखाओं का शाक बनाया जाता है। इसके पके फल खाने के काम आते हैं।

मंदाग्नि : मकोय के क्वाथ 50–60 मि॰ली॰ में 2 ग्राम पीपल का चूर्ण डालकर प्रातः–सायं भोजनोपरान्त पिलाने से मंदाग्नि मिटती है, आंखों को धोने से नेत्र की ज्योति बढ़ती है।

यकृत वृद्धि : इसके पौधों का 150–160 ग्राम स्वरस नियमित रूप से पिलाने से बहुत दिनों से बढ़ा हुआ जिगर कम हो जाता है। एक मिट्टी के बरतन में रस को निकाल कर इतना गरम करें कि रस का रंग हरे से लाल या गुलाबी हो जाय। रात को उबालकर, सुबह ठंडा कर प्रयोग में लाना चाहिये।

प्लीहा वृद्धि : प्लीहोदर की शांति के लिये मकोय का क्वाथ 50–60 मि॰ली॰, सैंधा नमक तथा जीरा मिलाकर पीना चाहिए अथवा पके आम का रस, मधु मिलाकर पीना चाहिये।

कामला : इसके पत्तों के क्वाथ 50–60 मिलीलीटर में शोरे और नौसादर के तेजाब की 4–6 बूंद डाल कर प्रातः–सायं पिलाने से बढ़ा हुआ यकृत ठीक हो जाता है। इसके 40–60 ग्राम क्वाथ में हल्दी का 2–5 ग्राम चूर्ण डाल कर पिलाने से कामला रोग मिटता है।

Scanned by CamScanner

**शोथ :**

1. सर्वांग शोथ के ऊपर इसके फलों का उष्ण लेप करना चाहिये।
2. मकोय, शतावरी, बथुआ शाक, सौवर्चल, इनको घी तथा मांसरस में भूनकर जिस रोगी को अनुकूल पड़ता हो, उसे व्यंजन करने के लिये देना चाहिये। भोजन कर लेने के बाद गाय, भैंस तथा बकरी का दूध पीने के लिये देना चाहिये।[4]

**वृक्क विकार :** इसके अर्क को 10–15 मिलीलीटर की मात्रा में नित्य पिलाने से अच्छा विरेचन होता है और मूत्रवृद्धि होती है। गुर्दे और मूत्राशय की शोथ एवं पीड़ा भी मिटती है।

**कुष्ठ :** काकमाची (काली मकोय) की 20–30 ग्राम पत्तियों को पीसकर लेप लगाने से कुष्ठ रोग का नाश होता है।[3]

**लाल चट्टे :** इसके अर्क की थोड़ी मात्रा देने से शरीर के बहुत दिनों के लाल चट्टे मिट जाते हैं।

**निषेध :** बस्ति रोगों में।

**निवारण :** मधु।

**प्रतिनिधि द्रव्य :** काकनज।

1. काकमाची त्रिदोषघ्नी स्निग्धोष्णा स्वरशुक्रदा।
तिक्ता रसायनी शोथकुष्ठाशोंज्वरमेहजित्।।
कटुर्नेत्रहिता हिक्काछर्दिहृद्रोगनाशिनी।। (भाव प्रकाश)
2. नात्युष्णशीतं कुष्ठघ्नं काकमाच्यास्तु तद्विधम्। (सुश्रुत)
3. त्रिदोषशमनी वृष्या काकमाची रसायनी।
नात्युष्णशीतवीर्या च भेदिनी कुष्ठनाशिनी।। (चरक)

4. ईषत्तिक्तं त्रिदोषघ्नं शाकं कटु सतीनजम्।
सुनिषण्णा कवेत्राग्न काकमाची शतावरी।
वास्तु कोपादिका शाकं शाकं सौवर्चल तथा।।
पृवत मांस रसैर्भृष्टं शाकं सात्म्याय दापयेत।
व्यंजनार्थ तथा गव्यं माहिषाजं पयो हितम्।। (चरक)

Scanned by CamScanner

# 82 मैनफल

| | | |
|---|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : | *Xeromphis spinosa* (Thunb.) Keay |
| कुलनाम | : | Rubiaceae |
| अंग्रेजी नाम | : | Emetic nut |
| संस्कृत | : | शल्यक, मदनफल, विषपुष्पक |
| हिन्दी | : | मैनफल |
| गुजराती | : | मींढल |
| मराठी | : | गेलफल |
| बंगाली | : | मयनफल |
| तैलगु | : | मंगा, मंगरी, वंसतकडिमिचेटु |
| अरबी | : | जौजुल कौसल |

## परिचय

मैनफल के छोटे आकार के विरल वृक्ष समस्त भारतवर्ष में 4,000 फुट की उंचाई तक देखने को मिलते है।

## बाह्य–स्वरूप

मैनफल के झाड़ीनुमा वृक्ष का कांड हाथ की भुजा जितना मोटा, छाल पतली परतों में उतरती हुई दिखती है। पत्ते अभिलट्वाकार गोलाभ या लम्बाग्र 1–3 इंच लम्बे पंत्र दंड के पास से संकरे दोनों पृष्ठ श्वेत रोमयुक्त तथा शाखाओं पर समूह बद्ध उगते हैं। पत्रों के अक्षिप्रदेश में दोनो और से 1½ इंच लम्बे तीक्ष्ण कांटे होते हैं। पुष्प सफेद पीली आभायुक्त, सुगन्धित, लोमयुक्त तथा इनमें मोगरे जैसी मधुर गन्ध आती है। फल अखरोट की भांति लम्बे, गोल, भीतर चार भागों में विभक्त और प्रत्येक खंड में बीज रहते हैं। जेठ मास में फल आते है और शीतकाल में पक जाते है।

## रासायनिक संघटन

मैनफल के फलों में मुख्य कार्यकारी तत्व सैपोनिन होता है, इसके अतिरिक्त फलमज्जा में प्रोटीन, शर्करा और अन्य कार्बोहाइड्रेट अम्ल होते हैं। बीजों से तेल प्राप्त होता है जो मक्खन के समान पीताभ हरित होता है। फूलों से भी एक सुगन्धित तेल निकलता है।

## गुण–धर्म

मैनफल मधुर, तिक्त, उष्णवीर्य, हल्का, वमनकारक, विद्रधिनाशक, रुक्ष, प्रतिश्याय नाशक, व्रण, कोढ़, कफ, अफारा, सूजन और गुल्म तथा व्रण को नष्ट करता है।[1]

देशी चिकित्सा विज्ञान में जितनी वामक औषधियां है उनमें मैनफल सर्वश्रेष्ठ है। बिना किसी उपद्रव के इसके फलों के सेवन से वमन हो जाता है।[2]

## औषधीय प्रयोग

कफ पित्त विकार : 2–3 अच्छे मैनफल लेकर, ऊपर का छिलका हटा दें, और दरदरा कूटकर रात में 60 ग्राम जल में भिगों दें, तथा प्रातः काल अच्छी तरह मल छानकर पीने से तत्काल वमन होकर कफ–पित्त के विकार शान्त हो जाते हैं।

अर्धावभेदक : मैनफल और मिश्री बराबर–बराबर लेकर, थोड़े से गाय के दूध के साथ पीसकर सूर्योदय से पहले ही नस्य देने से सूर्य उदय के साथ आरम्भ होने वाला शिरः शूल मिटता है।

दमा : मैनफल, अर्कमूल त्वक् तथा मुलेठी तीनों को समान भाग

Scanned by CamScanner

लेकर, 2–5 ग्राम की मात्रा में चूर्ण कर प्रयोग करे, यह दमा और प्रतिश्याय की उत्कृष्ट औषधि है।

वमन कर्म प्रयोग :

1. 6 ग्राम मैनफल बीज चूर्ण 6 ग्राम सैंधा नमक तथा 1½ ग्राम पीपल के चूर्ण को गरम जल के साथ देने से वमन होकर कफ निकल जाता है।
2. 50 ग्राम मुलेठी को कूटकर 2 किलोग्राम जल में पकावें, 1 किलोग्राम जल शेष रहने पर मलकर छान लें। 6 ग्राम मैनफल बीजों की मीगीं के चूर्ण को फांकर 50 ग्राम मुलेठी क्वाथ में 11 ग्राम मधु व 11 ग्राम सैंधा नमक डालकर पीने में 2–3 बार में खूब उल्टी हो जाती है।
3. वमन के लिये 3–6 ग्राम बीजों के चूर्ण को 25 ग्राम जल में एक घंटा भिगोकर पत्थर के खरल में घोटकर कपड़छन कर, मधु और सैंधा नमक मिला खाली पेट पिलाने से फिर वमन हो जाता है। कफप्रधान ज्वर, गुल्म, शूल, प्रतिश्याय आदि में वमनार्थ प्रयोग करते हैं।
4. मैनफल के छिलके और गूदा अलग कर बीजों को शुष्क कर कूटकर छिलके अलग कर केवल बीजों की गिरी के चूर्ण को महीन पीसकर शीशी में भरकर रख लें। मात्रा 2 से 4 ग्राम प्रयोग करें।

प्रसूतिकष्ट : इसके शुष्क फलों की धूनी योनि में देने से प्रसव शीघ्र हो जाता है।

बांझपन : मैनफल के 1 ग्राम सुखाये हुये बीजों का चूर्ण, दूध शक्कर और केसर के साथ सेवन करने से तथा 1 ग्राम बीजों के चूर्ण की बत्ती बनाकर योनिमार्ग मे धारण करने से योनिमार्ग और गर्भाशय के सब विकार दूर हो जाते है। मासिक धर्म की रुकावट, वेदना, अनियमितता आदि कष्ट दूर हो जाते है। गर्भाशय की शुद्धि होकर स्त्री गर्भ धारण करती है।

शूल :

1. मैनफल के बीजों का चूर्ण 2–4 ग्राम कांजी अथवा छाछ में पीसकर, गरम करके नाभि के चारों और लेप करने से शूल मिटता है।
2. उदरशूल मे इसके फल को सिरके मे पीसकर नाभि के चारों और लेप करने से लाभ होता है।

कफज विसर्परोग : मैनफल, मुलेठी, नीम की छाल और कटु इन्द्र–जौ इन सबके चूर्ण से वमन करानी चाहिये।

लेप : 140 ग्राम भैंस के ताजे मक्खन को गरम कर, उसमें 11.5 ग्राम मोम मिला दें, जब मोम पिघल जाये तो उसमें 11.5 ग्राम मैनफल चूर्ण और समभाग सैंधा नमक मिलाकर रख ले। इसे निरन्तर 1 सप्ताह तक लगाने से दाह शांत होती है। और फटे हुये पैर कमल के समान कोमल मुलायम हो जाते हैं।

विशेष हानिकारक : उष्ण प्रकृति के व्यक्तियों में इसका प्रयोग सावधानी पूर्वक करना चाहिए।

दुष्प्रभाव निवारण : कतीरा एवं शीतल पदार्थ

प्रतिनिधि–द्रव्य : राई

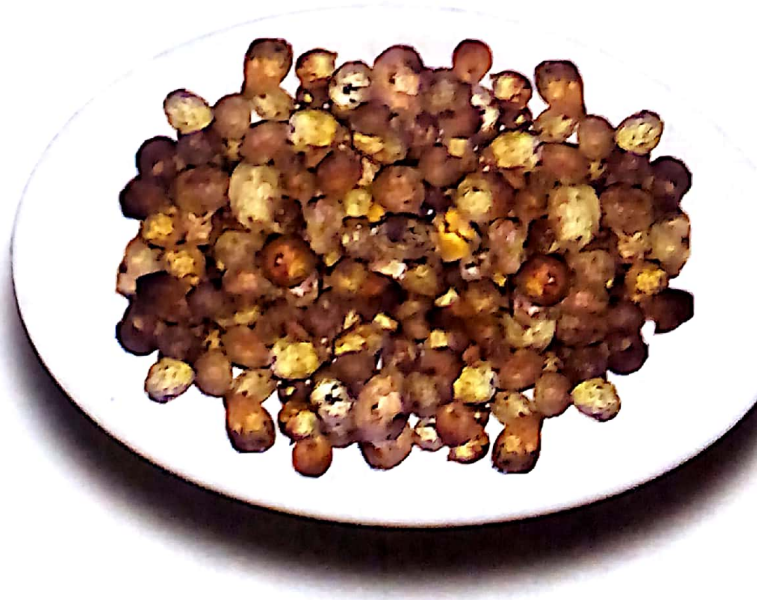

1. मदनो मधुरस्तिक्तो वीर्योष्णो लेखनो लघुः।
वान्तिकृद्विद्रधिहरः प्रतिश्यायव्रणान्तकः।।
रूक्षः कुष्ठकफानाह शोथगुल्मव्रणापहः। (भाव प्रकाश)

2. वमन द्रव्याणां मदनफलानि श्रेष्ठतमानि आचक्षतेऽनयायित्वात्। (चरक)

Scanned by CamScanner

# 83 काली मिर्च

| | | |
|---|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : | *Piper nigrum* L. |
| कुलनाम | : | Piperaceae |
| अंग्रेजी नाम | : | Black pepper |
| संस्कृत | : | मरिच, यवनेष्टं, शिरोवृत्तम, कृष्ण |
| हिन्दी | : | काली मिर्च |
| गुजराती | : | सरी |
| मराठी | : | मिरी |
| बंगाली | : | गोलमरिच |
| तैलगु | : | मिरियालु, मिरियालतिगे |
| फारसी | : | फिल्–फिल् स्याह |
| पंजाबी | : | काली मिरच |
| अरबी | : | फिल–फिल–अस्वद |

## परिचय

बहुवर्षीय, ताम्बूल सदृश, पर्णवाली, अतिप्रसरणशील, कोमल वल्लरी, ग्रंथि पर्वों से उत्पन्न तंतुओं के सहारे मार्ग में आये वृन्त का आलिंगन करती हुई, दृढ़ शाखाओं के माध्यम से वृद्धि को प्राप्त करती है। किन्चित वन प्रदेशों में स्वयं उत्पन्न होती है परन्तु दक्षिणी भारत के उष्ण और आर्द्र भागों में काली मिर्च की बेलें बोई जाती हैं। अधिकतर एक वर्ष में इसकी दो उपज प्राप्त होती है। पहली उपज अगस्त–सितम्बर में और दूसरी मार्च–अप्रैल में प्राप्त होती है। बाजारों में श्वेत मिर्च और काली मिर्च के नाम से यह दो प्रकार की बिकती है। कुछ निघंटुकार श्वेत मिर्च को काली मिर्च की एक विशेष जाति मानते हैं। कोई सहिंजना के बीजों को ही श्वेत मिर्च मान लेते हैं। वस्तुतः यह दोनों में से कोई नहीं है। श्वेत मिर्च काली मिर्च का रूपान्तर है। अर्द्धपक्व फलों की तो काली मिर्च बनती है तथा पूर्ण प्रगल्भ फलों को पानी में भिगोकर, हाथ से मसलकर ऊपर का छिल्का उतर जाने से श्वेत मिर्च बन जाती है। छिल्का हट जाने से इसका विदाही धर्म कुछ कम हो जाता है तथा गुणों में कुछ सौम्यता आ जाती है।

## बाह्य–स्वरूप

यह एक झाड़ीदार, आरोहिणी या भूमि पर फैली हुई लता है। पत्र, ताम्बूल सदृश 5–6 इंच लम्बे, 2–5 इंच चौड़े, 2–3 जोड़ी दृढ़ शिराओं से युक्त होते हैं। पुष्प छोटे एकलिंगी, श्वेत धूसर वर्ण के। फल वर्षाकाल में गोल–गोल गुच्छों में लगते हैं। अपक्व अवस्था

Scanned by CamScanner

में हरे, पकने पर लाल और सूखने पर काले पड़ जाते है। यह अर्धपक्व दशा में ही तोड़कर सुखा लिये जाते है। ये ही काली मिर्च कहलाते हैं।

## रासायनिक संघटन

काली मिर्च में मुख्य क्षाराभ पाइपरिन, पाइपरिडिन, पाइपरेटिन तथा चाविकिन होते हैं। इन्हीं के कारण इसमें कटुता होती है। इसके अतिरिक्त उड़नशील तेल, वसा, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज पदार्थ, कैल्शियम, लौह, फास्फोरस, थियामिन, राइबोफ्लेविन, निकोटिनिक एसिड तथा विटामिन ए पाये जाते हैं।

## गुण–धर्म

यह वात–शामक, कफघ्न और कफ निःसारक है। तीक्ष्ण और उष्ण होने से लालास्रावजनक है। दीपन पाचन, यकृत उत्तेजक, वातानुलोमन, श्वास, शूलनाशक और कृमिघ्न है।'[23] यह मूत्रल है, ध्वज भंग और रजोरोध, चर्मरोग, ज्वर तथा कुष्ठ में लाभकारी है और नेत्रों के लिए विशेष हितकारी है। अल्पमात्रा में यह तीक्ष्णता के कारण शरीर के समस्त स्रोतों से मलों को बाहर निकाल कर स्रोतसों का शोधन करता है अतः प्रमाथी द्रव्यों में प्रधान माना गया है।

# औषधीय प्रयोग

शिरः शूल :

1. एक काली मिर्च को सुई की नोंक पर लगाकर उसे दीपक पर जला लें, जब उसमें से धुंआ निकलने लगे तो उस धुंए को नाक के रास्ते मस्तक में चढ़ाने से हिचकी और सिर का दर्द दूर होता है।
2. चूल्हे की लाल हुई मिट्टी के चूर्ण तथा काली मिर्च के चूर्ण का समभाग मिलाकर नस्य लेने से भी अर्धावभेदक शांत हो जाता है।[6]
3. भांगरे के रस अथवा चावलों के पानी के साथ काली मिर्च को पीसकर मस्तक पर लेप करने से आधाशीशी मिटती है।

हिस्टीरिया : खाली पेट, खट्टी दही के साथ मीठी बच 3 ग्राम और काली मिर्च का चूर्ण 1 ग्राम दिन में 3 बार खाने से हिस्टीरिया नष्ट हो जाता है।

सिर के जुएं आदि :

1. जुएं नष्ट करने के लिए 10–12 सीताफल के बीज और 5–6 काली मिर्चों को सरसों के तेल में मिलाकर रात्रि में सोने से पूर्व बालों की जड़ों में मलें, सुबह बाल धोकर साफ कर लें। जुएं नष्ट हो जायेंगी।
2. सिर के बाल यदि दाद आदि के कारण झड़ते हो तो इसे प्याज व नमक के साथ पीसकर लगाने से लाभ होता है।

नेत्र रोग :

1. काली मिर्च को दही के साथ पीसकर आंखों में अंजन करने से रतौंधी मिट जाती है।
2. काली मिर्च का सेवन प्रातः घी और मिश्री के साथ किया जाये तो मस्तिष्क शांत रहता है तथा दृष्टि बलवान होती

Scanned by CamScanner

है। मात्रा– ½ से 1 ग्राम तक काली मिर्च, 1 चम्मच घी, आवश्यकतानुसार मिश्री मिलाकर चाटें, बाद में दूध पीयें।

3. पैरों की पत्तकों पर कष्टदायक फुंसी होने पर इसे जल में घिसकर लेप करने से फुंसी पककर फूट जाती है या दब जाती है।

4. काली मिर्च के 1/2 ग्राम चूर्ण को 1 चम्मच देशी घी में मिलाकर खाने से अनेक प्रकार के नेत्र रोग मिटते हैं।

दंत शूल : काली मिर्च के 1–2 ग्राम चूर्ण को 3–4 जामुन के पत्ते या अमरूद के पत्तों या पोस्तदानों के साथ पीसकर कुल्ले करने से दांतों का दर्द जाता रहता है। कंठ विकार व स्वरभंग होने पर भी यह प्रयोग लाभप्रद है।

प्रतिश्याय

1. काली मिर्च के चूर्ण 2 ग्राम को गरम दूध तथा मिश्री के साथ पी लेने अथवा इसके 7 दाने निगलने से प्रतिश्याय में लाभ होता है।

2. 50 ग्राम दही, 15–20 ग्राम गुड़ और एक–डेढ़ ग्राम काली मिर्च चूर्ण इन तीनों को मिलाकर दिन में 3–4 बार सेवन करने से जुकाम नष्ट हो जाता है।

श्वास–कास

1. 2–3 ग्राम मिर्च चूर्ण को मधु और घी (विषम भाग) मिलाकर सुबह–शाम चाटने से सर्दी, आमतौर से होने वाली खांसी, दमा और सीने का दर्द मिटता है तथा फेफड़ों का कफ निकल जाता है।

2. गाय के दूध में मिर्च चूर्ण को पकाकर पिलाने से श्वास–कास में लाभ होता है।

3. यदि खांसी बार–बार उठती हो, भोजन निकलने में कष्ट हो तो दिन में 2–3 बार इसके फांट से कुल्ले करें।

4. कष्टदायक खांसी में मिर्च चूर्ण 2 भाग, पीपल चूर्ण 2 भाग, अनारदाना 4 भाग, जौखार 1 भाग, चूर्ण बनाकर 8 भाग गुड़ में मिलाकर 1–1 ग्राम की गोलियां बनाकर दिन में 3 बार सेवन करने से लाभ होता है।

5. गले की खराश व खांसी में 2–3 काली मिर्च मुख में रखकर चूसने मात्र से लाभ होता है।

विसूचिका

1. मिर्च चूर्ण 1 भाग, भुनी हींग 1 भाग, अच्छी तरह खरल कर, शुद्ध देशी कपूर 2 भाग, मिलाकर 2–2 रत्ती की गोलियां बनाकर, आधा घंटे के अंतर से 1–1 गोली देने से हैजे की प्रथम अवस्था में लाभ होता है।

2. मिर्च चूर्ण 1 ग्राम, भुनी हींग 1 ग्राम, अच्छी तरह खरल कर उसमें 3 ग्राम अफीम मिलाकर शहद में घोटकर 12 गोलियां बनाकर 1–1 गोली 1 घंटे के अंतर से दें। परन्तु बहुत समय तक न दें। इससे प्रवाहिका में भी अत्यन्त लाभ होता है। इसमें अफीम का योग होने से सावधानी से प्रयोग करें।

3. अतिसार में मिर्च चूर्ण 1/2 ग्राम, हींग 1/4 ग्राम, अफीम 100 मि.ग्रा. का मिश्रण जल के साथ या शहद के साथ सुबह, दोपहर तथा सायं देवें।

उदर कृमि : एक कप छाछ के साथ 4–6 काली मिर्च का चूर्ण प्रातः काल खाली पेट सेवन करने से पेट के कीड़े निकल जाते हैं।

उदर रोग :

1. 8–10 काली मिर्च और 5–7 ग्राम के लगभग शिरीष के पत्ते घोंट, छानकर पीने से उदर शोथ, वायु जन्य उदर पीड़ा मिटती है।

2. एक कप पानी में आधा नीबू निचोड़कर, 5–6 काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर भोजन के बाद सुबह–शाम पीने से पेट की वायु, ऊर्ध्ववात, मन्दाग्नि, विषमाग्नि की शिकायत दूर हो जाती है।

3. मिर्च चूर्ण के साथ सौंठ, पीपल, जीरा और सैंधा नमक समभाग चूर्ण कर 1–1 ग्राम की मात्रा में भोजनोपरान्त गरम जल के साथ सेवन करने से मंदाग्नि मिटती है।

4. अजीर्ण और अफारा होने पर काली मिर्च, सौंठ, पीपल तथा हरड़ चूर्ण मिलाकर शहद के साथ देने से अथवा इसके फांट को पिलाने से लाभ होता है।

अर्श :

1. मिर्च चूर्ण 2 ग्राम, भुना जीरा 1 ग्राम, शहद या शक्कर 15 ग्राम, इन तीनों को मिलाकर, गर्म जल से इस योग को दिन में दो बार छाछ के साथ या गरम जल के साथ सेवन करें।

2. मिर्च चूर्ण 25 ग्राम, भुना जीरा चूर्ण 35 ग्राम और शुद्ध शहद 180 ग्राम एकत्र कर मिलाकर अवलेह बना रखें। इस अवलेह को 3 से 6 ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार चटायें।

3. मिर्च और जीरे के मिश्रण में सैंधा नमक मिला दिन में दो बार तक्र के साथ 3–4 मास सेवन करते रहने से रोग जन्य निर्बलता से या वृद्धावस्था से हुई अर्श या गुदभ्रंश व्याधियां दूर हो जाती हैं। इससे पेट का पाचन व जठराग्नि ठीक रहती है। विबन्ध, आनाह, वायु गुल्म में भी यह प्रयोग लाभप्रद है।

गुदभ्रंश : 1 ग्राम मिर्च चूर्ण दिन में 3 बार शहद के प्रयोग से गुदा का बाहर निकलना बंद हो जाता है।

मूत्रकृच्छ : काली मिर्च 1 ग्राम और खीरा ककड़ी के बीज 10–15 ग्राम जल के साथ पीस मिश्री मिलाकर छानकर पिलाने से मूत्र की रूकावट मिटती है। इससे शरीर को शीतलता व ताजगी की प्राप्ति होती है।

सूजन : काली मिर्च को पानी के साथ पीसकर उसका लेप करने से सूजन बिखर जाती है।

पीनस रोग : काली मिर्च 2 ग्राम को गुड़ और दही के साथ सेवन करें।

अर्दित रोग :

1. यदि जीभ में जकड़न हो तो इसके चूर्ण को जीभ पर घिसने से लाभ होता है।

2. मिर्च चूर्ण को किसी भी वातहर तेल में मिलाकर लकवा ग्रस्त अंग पर मालिश करने से बहुत लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

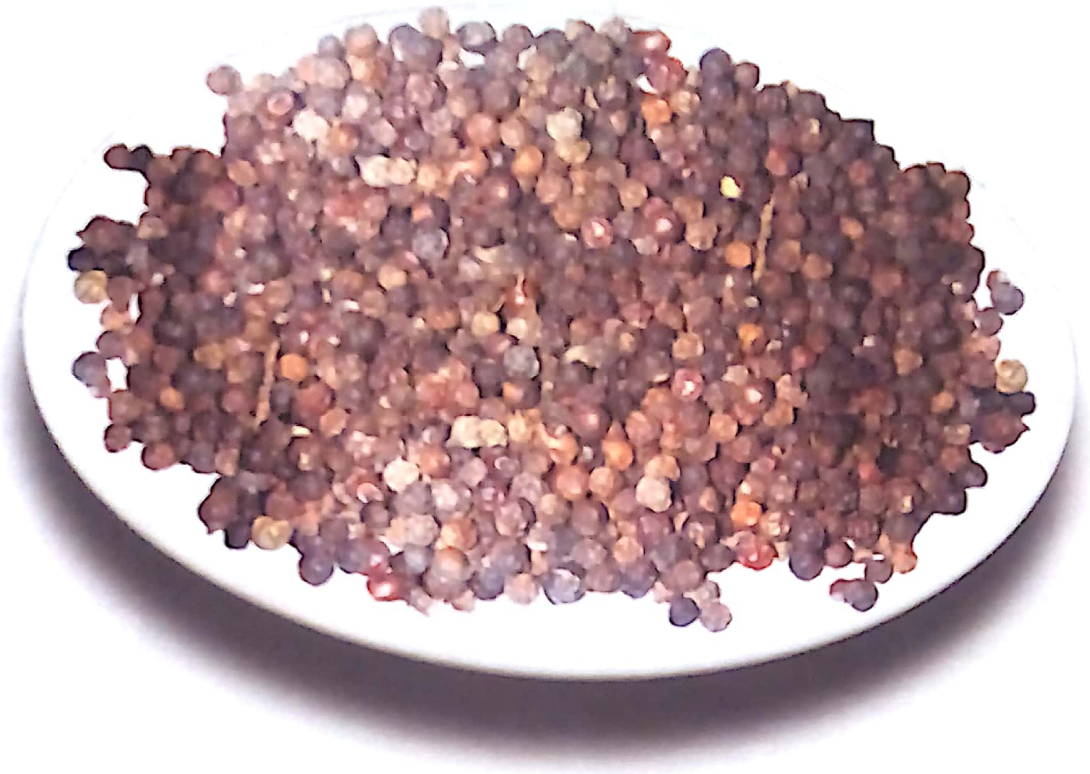

**आमवात, गठिया, अंगघात एवं कंडू में :** मिर्च सिद्ध तेल की मालिश करने से बहुत लाभ होता है।

**दौर्बल्यता :** आलस्य, उदासीनता आदि दूर करने के लिए काली मिर्च 4–5 दाने, सौंठ, दालचीनी, लौंग और इलायची थोड़ी–थोड़ी मात्रा में मिलाकर चाय की तरह दूध और शक्कर मिलाकर पान करें।

**वीर्य पुष्टि :** वीर्य पुष्टि करने के लिए एक गिलास दूध में 8–10 काली मिर्च को डालकर अच्छी तरह उबालकर, सुबह–शाम नियमपूर्वक सेवन करें (गर्मी के मौसम में मात्रा कम की जा सकती है)।

**ज्वर :**

1. साधारण ज्वर में इसके 1–3 ग्राम चूर्ण में आधा लीटर पानी और 20 ग्राम मिश्री मिलाकर अष्टमांस क्वाथ सिद्ध कर सुबह, दोपहर तथा शाम पिलाने से लाभ होता है।
2. विषम ज्वर में इसके 5 दाने, अजवायन 1 ग्राम और हरी गिलोय 10 ग्राम, सबको 1 पाव पानी में पीस, छानकर पिलाने से लाभ होता है। 300 मि०ग्रा० से 2 ग्राम तक मिर्च चूर्ण शहद के साथ दिन में 3 बार चाटने पर यह बादी से आने वाले बुखार को रोकता है और पेट के शूल को मिटाता है।

**उदर्द रोग :** मिर्च के चूर्ण को घी में मिलाकर मालिश करने से उदर्द रोग मिटता है।

**शीत पित्त :** 4–5 मिर्च घी के साथ खिलाने से तथा घी में मिलाकर मालिश करने से शीघ्र लाभ होता है।

**फुंसी :** फोड़े–फुंसियों पर काली मिर्च को जल में पीसकर लेप करना चाहिए। इससे घाव दूषित होने का भय भी नहीं रहता।

1. यदार्द्र मधुरं पाके नात्युष्णं कटुकं गुरु।
   किंचिततीक्ष्णगुणं श्लेष्मप्रसेकिस्यादपित्तलम्।। (भाव प्रकाश)
2. स्वादुपाक्यार्द्रमरिचं गरु श्लेष्मप्रसेकि च।
   कटुष्णंलघुतच्छुष्कमवृष्यं कफवातजित्।।
   नात्युष्णं नाति शीतं च वीर्यतो मरिचं सितम्।
   गुणवन्मरिचेभ्यः च चक्षुष्यं च विशेषतः। (सुश्रुत)
3. नात्यर्थमुष्णं मरिचमवृष्यं लघु रोचनम्। (चरक)
4. लिह्यान्मरिचं चूर्णं वा सघृतक्षौद्रशर्करम्।
   सर्वकासहरं श्रेष्ठं लेहं कासार्दितो नरः।। (चरक)
5. दहना निघृष्टं मरिच राज्यन्धाजनमुत्तमम्।
   ताम्बूलं युक्त खद्योत् भक्ष्णा च तदर्थ कृते।।
   (भैषज्य रत्नावली)
6. दग्ध चुल्ली मृत्तिका चूर्ण मरिच चूर्ण योग समांधम्।
   मिलितं कृत्वा नस्यम् इति योगमितम्।।

Scanned by CamScanner

# 84 मरूआ सब्जा

| | | |
|---|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : | *Origanum vulgare* L. |
| कुलनाम | : | Lamiaceae |
| अंग्रेजी नाम | : | Sweet marjoram |
| संस्कृत | : | मरूबक, खरपत्र |
| हिन्दी | : | मरूआ |
| गुजराती | : | मरबो |
| मराठी | : | सब्जा, मर्बा |
| तैलगु | : | मरूवमु |
| तमिल | : | मुर्रू |
| मलयालम | : | मरूवमु |
| फारसी | : | मरजनजोश |
| अरबी | : | मरजनजोश |
| पंजाबी | : | मरूआ |

## परिचय

मरूवे का मूल स्थान यूरोप, अफ्रीका तथा एशिया माइनर है, परन्तु आजकल भारतवर्ष में यह सब जगह पाया जाता है।

## बाह्य–स्वरूप

इसका बहुशाखीय, सुगंधित बहुवर्षायु क्षुप 1–3 फुट ऊंचा, पत्र आयताकार, पर्णवृन्त दीर्घ एवं पुष्प अन्त्य गुच्छों में छोटे, श्वेत व बैंगनी, बीज छोटे, भूरे, अंडाकार होते हैं।

## रासायनिक संघटन

इसमें एक उड़नशील तेल तथा एक स्थिर तेल पाया जाता है।

## गुण–धर्म

यह हल्का, रूखा, तीक्ष्ण, कडुवा, चरपरा तथा गरम होता है। तथा कफवात–शामक और पित्तवर्धक है। यह कुष्ठघ्न कृमिघ्न, विषघ्न, वेदनास्थापन तथा दुर्गन्धिनाशक है। यह रोपन, दीपन, आर्तवजनन, हृदय–उत्तेजक, ज्वरघ्न तथा कटु, पौष्टिक है।[1,2,3]

मरूबा, कसौंदी, सिन्दुवार, भार्गी यह सब कफ को दूर करने वाले

Scanned by CamScanner

एवं कृमिनाशक है। प्रतिश्याय, अरूचि, श्वास, कासनाशक एवं व्रणनाशक है।[4]

## औषधीय प्रयोग

**शिर शूल** : इसके ताजा पौधे से तैयार किया हुआ शीतनिर्यास मज्जा तंतुओं की खराबी से होने वाले मस्तक शूल को रोकता है।

**क्षय** : इसकी जड़ का रस 5 से 10 ग्राम तक सुबह–शाम सेवन करने से तपेदिक में लाभ होता है।

**उदरशूल** : उदरशूल में इसके पत्ते और बीजों का 4 ग्राम चूर्ण सुबह–शाम उष्णोदक के साथ देने से लाभ होता है।

**अतिसार** : तीव्र प्रवाहिका मे इसके तेल को पेट पर मलकर सिकाई करने से लाभ होता है।

**विरेचन** : विरेचन के लिए इसका 20–40 ग्राम फांट बनाकर देने से कब्जियत दूर हो जाती है।

**मासिक धर्म** : मासिक धर्म अगर बंद जो जाये तो इसका 20–30 ग्राम फांट बनाकर नियमित देने से रजः स्राव पुनः आरम्भ हो जाता है।

**गठिया** : इसके पंचाग का क्वाथ बनाकर 100 मि॰ली॰ दिन में तीन बार पीने से गठिया रोग में लाभ होता है।

**मोच** : इसमें पाये जाने वाले उड़नशील तेल की मालिश से मोच और रगड़ पर आश्चर्यजनक लाभ होता है।

**वेदना शोथ** : इस वनस्पति की टहनियों को पानी में उबालकर बफारा देने से वेदना युक्त सूजन और संधिवात में लाभ होता है।

बैंगनी मरुआ

सफेद मरुआ

1. मरूदग्निप्रदो हृद्यस्तीक्ष्णोष्णः पित्तलो लघुः।
   वृश्चिकादिविषश्लेष्मवातकुष्ठकृमिप्रणुत।।
   कटु पाकरसो रूच्यस्तिक्तो रूक्षः सुगन्धिकः। (भाव प्रकाश)
2. मरूवः कटु तिक्तोष्णः कृमि कुष्ठ विनाशनः।।
   विड्बन्धाध्मानशूलघ्नो मांद्यत्वग्दोषनाशनः।। (रा०नि०)
3. रुबकः कफहरो रूच्यो मुखसुगंधकृत्। (ध०नि०)
4. सुरसा श्वेत सुरसा फणिज्झकार्जक भूस्तृणसुगंधकुसुम।। (सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

# 85 मेंहदी

| | | |
|---|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : | *Lawsonia inermis* L. |
| कुलनाम | : | Lythraceae |
| अंग्रेजी नाम | : | Henna |
| संस्कृत | : | रक्त, रंगा, राग, गर्भी, रंजिका, नखरंजनी, मदयन्तिका |
| हिन्दी | : | मेंहदी |
| गुजराती | : | मेंदी |
| मराठी | : | मेंदी |
| तैलगु | : | गोराता |
| तमिल | : | कुरंजी, विदाई |
| अरबी | : | हीना, अलहीना |

## परिचय

मेंहदी की पत्तियों का प्रयोग रंजक द्रव्य के रूप मे किया जाता है, तथा इसकी सदाबहार झाड़ियां बाड के रूप में लगाई जाती हैं। स्त्रियों के शृगांर प्रसाधनो मे विशिष्ट स्थान प्राप्त होने के कारण, मेंहदी बहुत लोकप्रिय है। मेंहदी की पत्तियों को सुखाकर बनाया हुआ महीन पाउडर बाजारों मे पंसारियो के यहां तथा अन्य विक्रेताओं के यहां आकर्षक पैक में बिकता है।

## बाह्य–स्वरूप

यह एक प्रसिद्ध गुल्म जातीय पौधा है। पत्र 3/4– 1½ इंच लंबे, ह्रस्ववृन्त, भालाकार या अंडाकार, अभिमुख सनाय के सदृश होते है। पुष्प सुगन्धित, श्वेतवर्ण के शीर्षस्थ पिरामिड सदृश बड़ी मञ्जरियों में होते हैं। फल मटर के समान, गोलाकार होते है जिनके भीतर छोटे–छोटे पिरामिड की आकृति के, चिकने अनेक बीज होते हैं। अक्टूबर–नवम्बर में पुष्प और उसके बाद फल लगते हैं।

## रासायनिक संघटन

मेंहदी की पत्तियों में टैनिन तथा वासोन नामक मुख्य रजंक द्रव्य पाये जाते हैं। इनके अतिरिक्त गैलिक एसिड, ग्लूकोज मैनिटोल, वसराल, म्यूसिलेज तथा एक क्षाराभ होता है। इससे एक गाढ़े भूरे रंग का सुगन्धित तेल भी प्राप्त किया जाता है।

## गुण–धर्म

कफ पित्तशामक, कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न, दाह, कामला रक्तातिसार, आदि का नाश करती है। इसका लेप वेदना–स्थापन, शोथहर, स्तम्भन, केश्य, वर्ण्य, दाह प्रशमन, कुष्ठघ्न व्रणशोधन और व्रण रोपण है।[1]

## औषधीय प्रयोग

सिर दर्द :

1. गर्मी तथा पित्त की वजह से सिर में दर्द होता हो, तो मेंहदी के 25 ग्राम पत्तों को 50 ग्राम तेल में उबालकर इस तेल को सिर में लगाने से तथा 10 ग्राम फूलों का 100 ग्राम पानी में बनाया हुआ फांट पिलाने से लाभ होता है।
2. मेंहदी के 8–10 फूलों को सिरके तथा जल में पीसकर मस्तक

Scanned by CamScanner

और तलुए के स्थान पर लेप करने से पीड़ा शीघ्र शान्त हो जाती है।

3. साढे चार ग्राम मेंहदी के फूल पानी में पीसकर कपड़े से छान लें, इसमें 7 ग्राम शहद मिलाकर कुछ दिन पीने से गर्मी से उत्पन्न शिरोवेदना शीघ्र शान्त हो जाती है।

4. जिस व्यक्ति को गर्मी के कारण सिर में पीड़ा रहती हो, वह और सब तेलों को त्याग कर सिर में केवल मेंहदी का तेल लगाये।

सिर की जलन : मेंहदी के फूल चार ग्राम, कतीरा 3 ग्राम दोनों को रात्रि के समय पानी में भिगो दें और प्रातः मिश्री मिलाकर पिलावें, कुछ दिनों के सेवन से आराम हो जाता है।

शिरोभ्रम : मस्तिष्क के रोगों में मेंहदी के 3 ग्राम बीजों को शहद के साथ चाटने अथवा इसके फूलों का क्वाथ पिलाने से अच्छा लाभ होता है। दवा खाने के तुरन्त बाद ही गेहूं की रोटी खांड तथा घी मिलाकर खिलायें, इससे सिर का चकराना दूर होगा।

मुंह के छाले : 10 ग्राम मेंहदी पत्तो को 200 ग्राम पानी में भिगोकर रख दें, थोड़ी देर बाद छानकर इस सुनहरी पानी से गंडूष करने से मुंह के छाले शीघ्र शान्त हो जाते हैं।

अनिद्रा : मेंहदी के सूखे फूलों को रूई के स्थान पर तकिये में भरकर जिन व्यक्तियों को नींद न आती हो उनके सिरहाने रख देने से उन्हें नींद अच्छी आ जाती है।

सौन्दर्य प्रसाधन : हरड का चूर्ण, नीम के पत्ते, आम की छाल, दाड़िम के पुष्पों की कली और मेंहदी, इनको सम मात्रा में मिलाकर कपड़छन करके उबटन करने से शारीरिक सौन्दर्य निखरता है एवं चर्म रोग मिटते हैं।

नकसीर : मेंहदी, जौ का आटा, धनियां, मुलतानी मिट्टी सबको समान मात्रा में लेकर बारीक पीस लें, और पानी मिलाकर लेप बना लें, मस्तक और ललाट पर लेप करें, और ऊपर से मलमल का कपड़ा पानी से तर करके रखते हैं। पावं के तलवों पर भी मेंहदी लगायें, कुछ दिन के प्रयोग से स्थायी लाभ होगा।

केश रंगने के लिये :

1. मेंहदी के पत्तों का चूर्ण और नील के पत्तों का चूर्ण समभाग लेकर, पीसकर सिर पर लगाने से सफेद बाल कृत्रिम रूप से काले हो जाते है।

2. मेंहदी, दही, नींबू, चाय की पत्ती, सबको मिलाकर 2–3 घंटे बालों में लगाने से फिर सिर धो लेने से बाल घने, मुलायम, काले और लम्बे हो जाते हैं।

नेत्रों की लाली :

1. मेंहदी 10 ग्राम तथा जीरा 10 ग्राम दोनों को दरदरा कूटकर रात्रि में गुलाब जल में भिगो दें और प्रातः छानकर स्वच्छ शीशी में रख लें और 1 ग्राम भूनी हुई फिटकरी बारीक पीसकर मिला लें और आवश्यकता के समय नेत्रों में डालने से आंखों की ललाई दूर होती है।

2. मेंहदी के हरे पत्तों को खरल में घोटकर टिकिया बना लें। रात्रि में टिकिया को आँख पर बांधकर सोने से नेत्रों की पीड़ा, टीस लालिमा दूर हो जायेगी।

कामला : मेंहदी के पत्ते 5 ग्राम लेकर रात्रि को मिट्टी के बरतन में भिगो दें और प्रातः काल इन पत्तियों को मसलकर तथा छानकर रोगी को पिला दें। एक सप्ताह के सेवन से पुराना पीलिया रोग में अत्यन्त लाभकारी है।

तिल्ली : मेंहदी की छाल बारीक पिसी हुई 30 ग्राम, नौसादर पीसा हुआ, 10 ग्राम दोनों को मिला लें, प्रातः सायं काल 3 ग्राम मेंहदी के पत्तों को गरम जल के साथ देने से दो सप्ताह में तिल्ली की सूजन जाती रहेगी।

नोट : मेंहदी की छाल कामला में भी बहुत लाभकारी है।

पथरी

1. मेंहदी की छाल 10 ग्राम रात को मिट्टी के बर्तन में उबालकर रखें। प्रातः काल उसको छानकर पिलाने से गुर्दे की पथरी गलकर निकल जाती है।

2. मेंहदी के पत्ते व लकड़ी 30 ग्राम को रात में एक गिलास पानी में भिगो दें तथा प्रातः काल पानी निहार लें। पहले जौ का क्षार (यवक्षार) 2 ग्राम लेकर ऊपर से उस पानी को पिलायें। कुछ



Scanned by CamScanner

दिनों के निरंतर प्रयोग से पथरी मूत्राशय द्वारा रेत बनकर निकल जाती है।

**रक्त अतिसार** : इसके बीज बारीक पीसकर, घी मिलाकर झाड़बेर जितनी गोलियां बना लें। इन गोलियों का प्रातः–सायं जल के साथ सेवन करें।

**वीर्यस्राव** : मेंहदी के 5–10 ग्राम पत्र स्वरस में थोड़ा जल और मिश्री मिलाकर वीर्यस्राव रूक जाता है।

**सुजाक** : 50 ग्राम मेंहदी के पत्तों को आधा किलो पानी में भिगोकर सुबह मसल कर छानकर तैयार किये गये हिम को 20–30 ग्राम की मात्रा में दिन में 3–4 बार पिलाये।

**मूत्रकृच्छ** : मेंहदी के 50 ग्राम हिम में कलमीशोरा 1 ग्राम मिलाकर प्रातः–सायं पिलायें।

**घुटनों का दर्द** : मेंहदी और एरंड के पत्तों को समभाग में पीसकर थोड़ा गरम करके घुटनों पर लेप करने से घुटनों की पीड़ा में लाभ होता है।

**शान्ति व शक्ति** : निर्बल मनुष्य को मेंहदी के फूल सुंघाने से और पीसकर ललाट पर लेप करने से शान्ति व शक्ति मिलती है।

**कुष्ठ** :

1. पत्रों तथा पुष्पों का रस दिन में दो बार आधा–आधा चम्मच देने से कुष्ठ रोग में लाभ होता है।
2. कुष्ठ और दूसरे असाध्य चर्म रोगों में इसकी छाल 100 ग्राम को 200 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ सुबह–शाम पीने से लाभ होता हैं।
3. मेंहदी के 75 ग्राम पत्तों को रात भर पानी में भिगोकर सवेरे मसलकर छानकर पीने से सभी प्रकार के कुष्ठ रोग में अवश्य लाभ होता है।

**मूर्च्छा** : गर्मी और सर्दी की मूर्च्छा को रोकने के लिये इसके पत्तों का रस 5 से 10 ग्राम दिन में 3–4 बार 250 ग्राम दूध के साथ देना चाहिये।

**शीतला** : शीतला में इसके पत्तों को पीसकर रोगी के पैर के तलुवे में लेप करने से आंखों पर शीतला का भार कम हो जाता है।

**ज्वर दाह** : मेंहदी के 10 ग्राम फूलों को 200 ग्राम पानी में उबालकर ठंडा करके बनाये गये फॉट का ज्वर के अन्दर दाह को शान्त करने, सिर दर्द को कम करने, हृदय को संरक्षण देने और नींद लाने के लिये प्रयोग करना चाहिये।

**फोड़े फुन्सी** : मेंहदी के पत्तों के क्वाथ से सब प्रकार के फोड़े फुन्सियों को धोने से बड़ा लाभ होता है।

**अग्नि दग्ध** : अग्नि से जले हुये स्थान पर इसकी छाल या पत्तों को पीस कर गाढ़ा लेप करने से शान्ति मिलती है।

1. मदयंती लघू रूक्षा कषाया तिक्तशीतला।
कफपित्तप्रशमनी कुष्ठघ्नी सा प्रकीर्तिता।।
निहन्ति ज्वरकण्डूतिदाहासृक्पित्तकामलाः।
रक्तातीसारहृद्रोगमूत्रकृच्छ्रभ्रमव्रणान्।। (द्रव्यगुण विज्ञान)

2. हरीतकीचूर्णमरिष्टपत्रं चूतत्वचं दाड़िमपुष्पवृन्तम्।
पत्रं च दद्यान्मदयन्तिकाया लेपोऽङ्गरागो नरदेवयोग्यः।। (सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

# लाल मिर्च



| | |
|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : *Capsicum annuum* L. |
| कुलनाम | : Solanaceae |
| अंग्रेजी नाम | : Red chillies |
| संस्कृत | : लंका, कटुवीरा, रक्तमरिच, पित्तकारिणी |
| हिन्दी | : लाल मिर्च |
| गुजराती | : मरचाँ |
| मराठी | : मुलुक, मिरची लाल |
| बंगाली | : लंका, मारिच, गाछ मरिच |
| तैलगु | : मिर्चाकाया |
| अरबी | : फिलहिले अहमर |
| फारसी | : फिलहिले सुर्ख |
| उर्दू | : सुर्ख मिर्च |

## परिचय

लाल मिर्च अपने तीखे स्वभाव के कारण बहुत प्रसिद्ध है, यह कटुरस और लाला स्राव जनन द्रव्यों में प्रधान है। अपक्व अवस्था में इसके हरे फलों का उपयोग अचार और तरकारी बनाने में होता है, तथा पके और लाल फल, शुष्क अवस्था में मसाले के लिये उपयोग में लाये जाते हैं।

## बाह्य–स्वरूप

यह वर्षायु 2–3 फुट ऊँचा क्षुप होता है, पत्र लम्बे, भालाकार, तीक्ष्णाग्र होते हैं, पुष्प श्वेत वर्ण, पत्तियों के अग्रभाग में एकाकी होते हैं। फल कच्ची अवस्था में हरे तथा पकने पर लाल, पीले अनेक वर्ण के होते हैं। बीज एक फल में अनेक छोटे और चपटे, बैंगन के बीज के सदृश होते हैं।

## रासायनिक संघटन

मिर्च में एक स्फटिकीय कटु द्रव्य कैप्सेकिन के कारण इसमें कटुता और तीक्ष्णता होती है। इसमें प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, सूक्ष्म खनिज पदार्थ, लौहा, फास्फोरस, कैल्शियम इत्यादि, विटामिन 'सी', कैरॉटिन

Scanned by CamScanner

इत्यादि होते हैं। इसके अतिरिक्त विटामिन ई, एल्युमीनियम, बेरियम, ताम्र, लिथियम, मैंगनीज, सिलिकन, टिटेनियम भी सूक्ष्म मात्रा में होते हैं। सूखे फलों से एक लाल भूरा स्थिर तेल तथा अल्पमात्रा से एक उड़नशील तेल प्राप्त होता है।

## गुण-धर्म

यह कफ वात शामक, पित्तवर्धक, रक्त-उत्क्लेशक, वातहर, निद्राजनन, हृदय उत्तेजक, मूत्रल वाजीकरण, धातुनाशक, ज्वरघ्न, विशेषतः विषमज्वर प्रतिबन्धक है। तीक्ष्णता के कारण यह लाला स्रावजनन, दीपन पाचन और अनुलोमन है। अति मात्रा में यह विदाही है।[1]

# औषधीय प्रयोग

**स्वर भंग** : शक्कर और बादाम के साथ थोड़ी सी लाल मिर्च की गोली बना के देने से गवैयों और व्याख्यान देने वालों का स्वर भंग मिटता है।

**उदरशूल** :

1. 100 ग्राम गुड़ में लपेट कर मिर्च के 1 ग्राम पाउडर की गोली बना के देने से उदरशूल मिटता है।
2. ½ ग्राम लाल मिर्च चूर्ण को 2 ग्राम शुंठी चूर्ण के साथ प्रयोग करने से अजीर्ण, उदरशूल और पेट का अफारा मिटता है।

**अरूचि** : पित्त प्रकोप के कारण जिसको भोजन के प्रति अरूचि उत्पन्न हो गई हो, भूख न लगती हो, उसको आवश्कतानुसार मिर्च के बीजों के तेल की 5–30 बूंद बतासे में भरकर या शक्कर के साथ खाने से भूख खुल जाती है।

**विसूचिका** :

1. लाल मिर्च के बीज अलगकर छिल्कों को महीन पीस कपड़छन कर थोड़ा कपूर और हींग मिला लें (हींग और कूपर के अभाव में केवल मिर्च ही ले लें) इन तीनों को शहद में घोटकर 2–2 रत्ती की गोलियां बना लें। वैसे ही निगलवा दें, डूबती हुई, बिल्कुल मंद पड़ी हुई नाड़ी फिर से चलने लगती है।
2. अफीम और भुनी हुई हींग की गोली देने के बाद, मिर्च का क्वाथ पिलायें।
3. हैजे में प्रत्येक उल्टी और दस्त के बाद, रोगी को 1/2 चम्मच मिर्च तेल पिलाने से 2–3 बार में ही विसूचिका के रोगी को आराम आ जाता है।
4. लाल मिर्चों को बारीक पीसकर, झड़बेर जैसी गोलियां बनाकर रख लें। हैजे के रोगी को 1–1 घन्टा के अन्तर से 1–1 गोली व लौंग सात नग देने से विसूचिका की प्रत्येक दशा में आराम हो जाता है।

**प्रमेह** : मिर्च बीजों के एक बूँद तेल को बतासे में रख, दूध की लस्सी के साथ खाने से प्रमेह में बहुत लाभ होता है।

**मूत्रकृच्छ** : ईसबगोल की 3 ग्राम भूसी पर इसके तेल की 5–10 बूंदे मिलाकर जल के साथ फंकी देने से पित्तज मूत्रकृच्छ मिटता है।

**कब्ज रोग** :

1. शूल, कटिशूल, पार्श्वशूल और गृध्रसी में इसके तेल की मालिश करने से अथवा जले हुये फलों का लेप लगाने से लाभ होता है।
2. डिप्थीरिया तथा कंठ शूलक में भी इसका लेप करते हैं।
3. इसके तेल को खाज खुजली, संधिशोथ, श्वान एवं ततैया के काटने के स्थान पर लगाने से आराम होता है।
4. इसके तेल की मालिश आमवात में भी लाभदायक है।
5. बुखार में यदि बच्चे को हवा लगकर पैरों में लकवे की आशंका हो तो मिर्च के महीन सूखे चूर्ण में तेल मिलाकर मालिश करने से लाभ हो जाता है।

**श्वान दंष्ट** : कुत्ते के काटे हुये स्थान पर मिर्चों को जल में पीसकर लेप करने से कुछ देर पश्चात विष बाहर निकल जाता है, वेदना शान्त होती है तथा घाव में पीब नहीं पड़ता।

**मिर्च तेल** : 125 ग्राम सूखी लाल मिर्चों को आधा किलो तिल तेल में पकायें, जब मिर्च काली पड़ जाये तो तेल छानकर शीशी में भर लें।

**फोड़े, फुन्सी कंडू इत्यादि** :

1. बरसात के मौसम में होने वाले फोड़े–फुन्सियों और खुजली इत्यादि इसके तेल के लेपन से फौरन ठीक हो जाते हैं।

Scanned by CamScanner

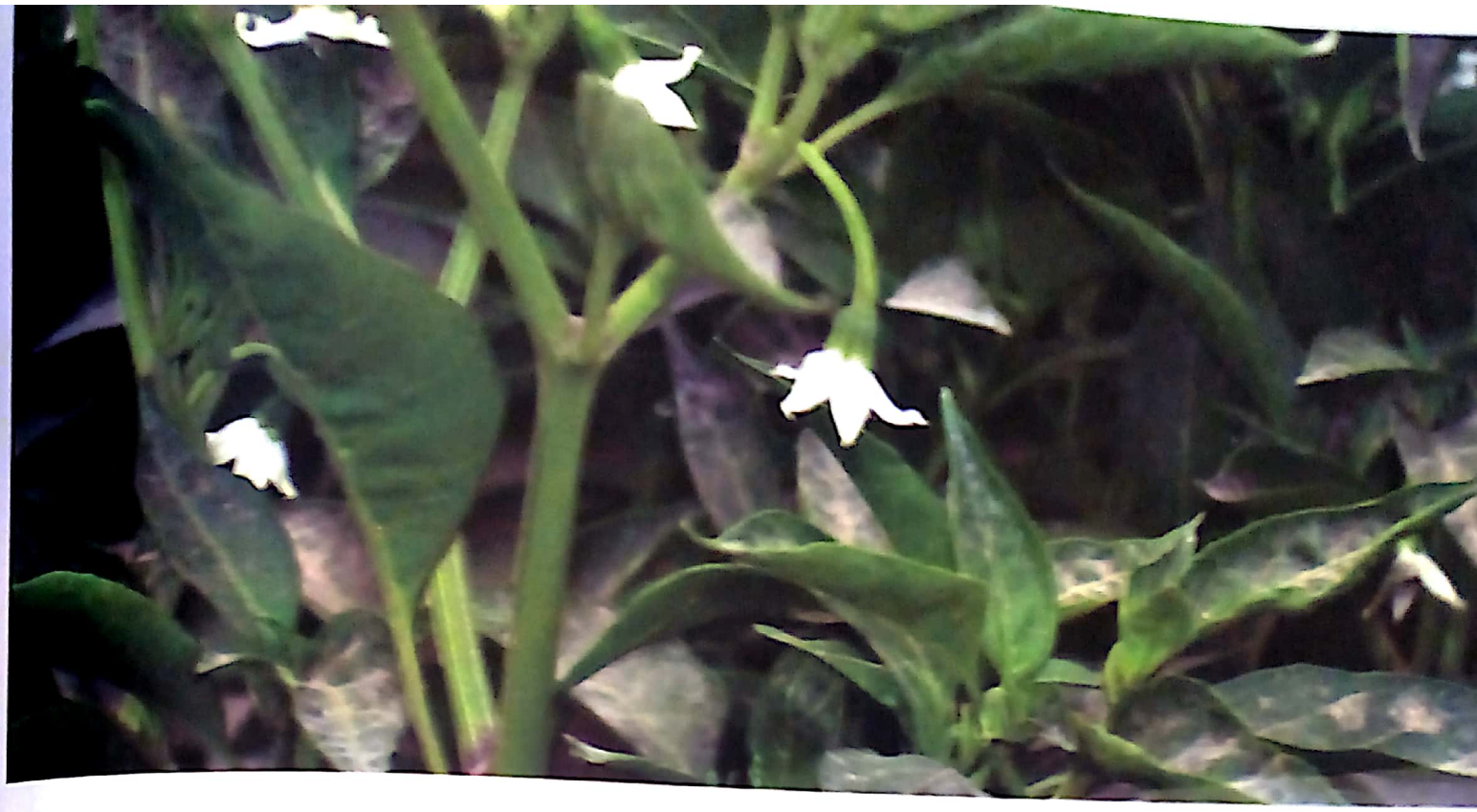

2. गर्मी के मौसम में शरीर पर जो फुन्सियां हो जाती है, उन पर इसके बीजों का तेल लगाने से शीघ्र आराम हो जाता है।

खटमल नाशन : लाल सूखी मिर्चों को जल में उबालकर, जल को उस स्थान पर जहां खटमलों का वास हो, छिड़कने से वहां पर दुबारा खटमल उत्पन्न नहीं होते।

मद्यज भ्रम : शराबियों के भ्रम में 1 ग्राम मिर्च का चूर्ण 20 ग्राम गुनगुने जल में दिन में 2 या 3 बार देने से शराब का नशा उतर कर भ्रम दूर हो जाता है। इस प्रयोग से सन्निपात में भी आराम होता है।[3]

सन्निपातिक ज्वर : 500 मिलीग्राम लाल मिर्च के बीजों के महीन चूर्ण को 1 छटाँक गरम पानी के साथ दिन में 2–3 बार देने से मद्यपान जनित सन्निपात में आश्चर्यजनक लाभ होता है।

गले के रोग : 1 लीटर पानी में 10 ग्राम पिसी हुई मिर्च (मिर्च ज्यादा तेज हो तो 5 ग्राम या आवश्यकतानुसार कम ज्यादा करें) डालकर क्वाथ या हिम फांट बना लें, इस पानी से कुल्ले करने से मुखपाक मिटता है, और गले के बिगडे हुये घाव, चाहे वे वहीं हुये हों या किसी दूसरे स्थान के सम्बन्ध से हुये हों मिट जाते हैं।

(मिर्च का अधिक सेवन पित्त प्रकृति वाले व्यक्तियों के लिये हानिकारक है।)

दर्पनाशक : दूध, घी इसके दर्पनाशक हैं।

1. लंका तीक्ष्णा कटूष्णाऽति लालास्त्रावकरी मता।
विदाहजननी पित्तकारिणी कफवातहृत्।। (द्रव्यगुण विज्ञान)

2. अरोचरेतः कफवातहारिणी विपाचनी, शोणितपित्तकारिणी।
मेदोऽक्षिनिद्रानलमान्द्यकारिणी विसूचिकां कृन्तति
पित्तकारिणी।। (सि०भै०म०)

3. नरं लुप्तधरं क्षीणं सन्निपातनिपीडितम्।
नष्टेन्द्रियगणं तीक्ष्णा मृत्योराकृष्य जीवयेत्।। (आ०वि०)

Scanned by CamScanner

# 87 मौलसिरी

| | | |
|---|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : | *Mimusops elengi* L. |
| कुलनाम | : | Sapotaceae |
| अंग्रेजी नाम | : | Bullet wood tree |
| संस्कृत | : | तिरपुष्प, मधुगन्ध |
| हिन्दी | : | मौलसिरी |
| गुजराती | : | बोलसरी |
| मराठी | : | बकुल |
| बंगाली | : | बकुल, गाद्य |
| तेलगु | : | पगादामानु, पामड़ा |

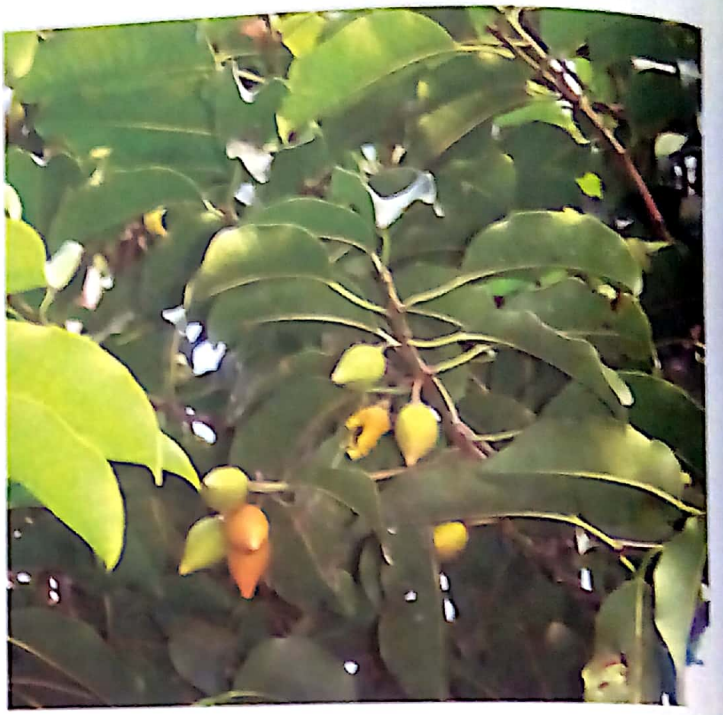

## परिचय

चित्त को अति आनंद देने वाले मनोरम सुगंधित पुष्पों से युक्त बकुल के सदा हरित वृक्ष, सड़कों के किनारे, गृहवाटिकाओं में यहां वहां सर्वत्र लगाये हुए मिलते हैं। इसके फूल इतने सुगंधित होते हैं कि शुष्क होने पर भी उनमें सुगंध बनी रहती है।

## बाह्य–स्वरूप

कांड छोटा, सीधा, बहुशाखीय। सघन पत्र 2–4 इंच लम्बे, अग्र पर सहसा नोकीले तथा वृन्त की ओर गोल व कम चौड़े जामुन सदृश होते हैं। पुष्प श्वेत वर्ण के दलचक्र में 24 पंखुडियां होती हैं, एकाकी या मंजरियों में निकलते हैं। फल एक इंच तक लम्बा अंडाकार, अपक्व अवस्था में हरा पकने पर नारंगी या पीले रंग का हो जाता है। प्रत्येक फल में अंडाकार, चपटा, चमकीले भूरे रंग का एक बीज होता है। ग्रीष्म से शरद ऋतु तक इसमें पुष्प लगते हैं और बाद में फल आते हैं।

## रासायनिक संघटन

इसकी छाल में टैनिन, रंजक द्रव्य, मोमीय पदार्थ, स्टार्च एवं क्षार पाई जाती है। फूलों में एक उड़नशील तेल, बीजों में एक स्थिर तेल तथा फल मज्जा में शर्करा व सैपोनिन पाया जाता है।

## गुण–धर्म

यह पित्त, कफ शामक, स्तम्भक, ग्राही, कृमिघ्न, गर्भाशय की शिथिलता, शोथ एवं योनिस्राव को दूर करता है। बस्ति एवं मूत्र मार्ग के स्राव और शोथ को कम करता है।[1] पुष्प हृद्य और मेध्य तथा सौमनस्य जनन होते हैं। फल तथा छाल पौष्टिक, रक्त स्तम्भक, ज्वरघ्न एवं विषघ्न तथा कुष्ठघ्न है तथा दांतों के लिए विशेष लाभकारी है।[1,2]

## औषधीय प्रयोग

दंत रोग :

1. इसकी 50 ग्राम छाल को 500 ग्राम पानी में उबालकर 100 ग्राम शेष रहे काढ़े से कुल्ला करने से हिलते हुए दांत स्थिर हो जाते हैं।
2. इसके 1–2 फलों को नियमित रूप से चबाने से भी दांत मजबूत हो जाते हैं।
3. इसकी छाल के चूर्ण का मंजन करने से दांत वज्र की तरह मजबूत हो जाते हैं।
4. मौलसिरी की छाल के 100 ग्राम क्वाथ में 2 ग्राम पीपल, 10 ग्राम शहद और 5 ग्राम घी मिलाकर कुछ देर तक मुख में बार–बार चलाने से दांतों का दर्द दूर होता है।
5. मौलसिरी की दातौन करने से अथवा दांतों के नीचे रख कर चबाने से हिलते हुए दांत स्थिर व दृढ़ हो जाते हैं।
6. इसकी शाखाओं के अग्रिम कोमल भाग का क्वाथ दूध या जल के साथ मिलाकर प्रतिदिन पीने से वृद्धावस्था में भी दांत मजबूत हो जाते हैं।

शिरोरोग : इसके सूखे फूलों का महीन चूर्ण नस्य की तरह सुंघाने से शिरोवेदना उसी समय शांत हो जाती है।

Scanned by CamScanner

**अतिसार :**

1. बकुल के 8–10 बीजों को ठंडे पानी में पीसकर देने से अतिसार दूर होता है। पुराने अतिसार में इसके पके हुए फल के गूदे को 10–20 ग्राम प्रतिदिन सेवन करना चाहिए।
2. बीजों की मींगी के तेल की 20–40 बूंद की मात्रा, 2–3 दिन तक प्रयोग करने से आंव के दस्त बंद हो जाते हैं।

**मूत्राशय के रोग :**

1. मौलसिरी की छाल 5 ग्राम का क्वाथ बनाकर सुबह शाम कुछ दिनों तक पीने से मूत्र में रक्त का जाना बंद हो जाता है।
2. इसकी छाल के चूर्ण को 1–2 ग्राम की मात्रा में 1 चम्मच तक मधु के साथ दिन में 2–3 बार सेवन करने से योनिस्राव नष्ट हो जाता है। इस चूर्ण के सेवन से शुक्रप्रमेह, शुक्रतारल्यता और कटिशूल नष्ट होता है।

**गर्भाशय शुद्धि :**

1. जिन स्त्रियों के गर्भ न रहता हो उन स्त्रियों को इसकी छाल के 5–10 ग्राम चूर्ण या 10–20 ग्राम क्वाथ का सेवन कराने से कुछ ही दिनों में उनका गर्भाशय शुद्ध होकर वे गर्भ धारण के योग्य हो जाती हैं।
2. इसकी छाल के 5–10 ग्राम चूर्ण में समान भाग शक्कर मिलाकर खिलाने से गर्भाशय से पानी का बहना बंद हो जाता है।

**व्रण :** इसकी छाल के क्वाथ से दूषित व्रण और गहरे घावों को धोने से लाभ होता है।



**मुखरोग :** बकुल, आंवला और कत्था इन तीनों वृक्षों की समभाग छाल के क्वाथ से दिन में दस–बीस बार कुल्ला करने से मुंह के छाले, मसूड़ों की सूजन और हर प्रकार के मुख रोगों में तत्काल आराम हो जाता है और दांत बहुत मजबूत हो जाते हैं।

**हृदय :** इसके फूलों के अर्क के 5–10 बूंद के सेवन से दिल की धड़कन दूर होती है, मस्तिष्क को बल मिलता है।

**खांसी :** 20–25 ग्राम ताजा फूलों को रात भर आधा किलो पानी में भिगोकर रखें प्रातःकाल 10–20 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम 3–6 दिन तक उस पानी को बच्चे को पिलाने से खांसी मिट जाती है।

**कब्जियत :** बच्चों का कब्ज दूर करने के लिए इसके बीजों की मींगी की बत्ती, पुराने घी के साथ बनाकर, बत्ती को गुदा में रखने से 15 मिनट में मल की कठोर गांठे दस्त के साथ निकल जाती हैं।

1. बकुलस्तुवरोऽनुष्णः कटुपाकरसो गुरुः।
कफपित्तविषश्वित्रकृमिदन्तगदापहः।। (भाव प्रकाश)

2. तत्फलं मधुरं स्निग्धं कषायं विशदं हिमम्।
कफपित्तहरं ह्रद्यं दन्त्यं ग्राहि च वातलम्।। (कै०नि०)

# मूली



| | | |
|---|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : | *Raphanus sativus* L. |
| कुलनाम | : | Brassicaceae |
| अंग्रेजी नाम | : | Radish |
| संस्कृत | : | चाणक्यमूलक, भूमिकक्षार, दीर्घकन्द |
| हिन्दी | : | मूला, मूली |
| गुजराती | : | मूला |
| मराठी | : | मुड़ा |
| बंगाली | : | मूला |
| पंजाबी | : | मूली |
| अरबी | : | फजलहुज़ल |

## परिचय

मूली सम्पूर्ण भारतवर्ष में तरकारी के रुप में खाई जाती है। इसके बीज और जड़ से सफेद रंग का तेल निकाला जाता है।

## बाह्य–स्वरूप

मूली का कन्द गाजर के समान परन्तु सफेद होता है। पत्ते नवीन सरसों के पत्तों के समान, फूल–सफेद सरसों के फूलों के आकार के और फल भी सरसों ही के समान किन्तु उससे कुछ मोटा और लगभग 1–2 इंच लम्बा होता है। बीज सरसों से बड़े होते हैं।

## रासायनिक संघटन

इसके बीजों में उड़नशील तेल होता है। कन्द में आर्सेनिक 0.1 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम में रहता है। मूल तथा बीज में स्थिर तेल भी पाया जाता है।

Scanned by CamScanner

## गुण–धर्म

दीपन, कृमिघ्न, वातहर अर्बुद अर्श और सब प्रकार की सूजन में मूली उपयोगी है। हृदय रोग, हिचकी, कुष्ठ, विसूचिका अैर नष्टार्तव में यह उपयोगी है। कच्ची मूली कटु, तिक्त, उष्ण, रूचिकारक, दीपन, हृद्य, तीक्ष्ण, पाचन, सारक, मधुर, ग्राही बल्य तथा मूत्रविकार, अर्श गुल्म, क्षय, श्वास, कास, नेत्र रोग, नाभिशूल, कफ, वात, पित्त और रुधिर के विकारों को दूर करती है। पुरानी मूली उष्ण वीर्य, शोथ, दाह, पित्त और रुधिर के विकारों को उत्पन्न करती है। पकी हुई मूली चरपरी, गरम और अग्निवर्धक है। मूली की फली किंचित गरम और कफ–वात नाशक होती है।

## औषधीय प्रयोग

कंठशुद्धि : मूली के 5–10 ग्राम बीजों को पीसकर उष्ण जल के साथ दिन में 3–4 बार फंकी लेने से गला साफ होता है।

कर्णविकार :

1. मूली के पानी को तिल के तेल में जलाकर कान में 2–2 बूंद डालने से कर्णशूल मिटता है।
2. मूली का क्षार 3 ग्राम, शहद 20 ग्राम, दोनों को मिलाकर इसमें बत्ती भिगोकर कान में रखने से पूय आना बन्द हो जाता है।
3. मूली के पत्तों से 30 ग्राम तेल सिद्ध करके इसकी 2–4 बूदें कान में टपकाने से कान की पीड़ा मिटती है।

आंख का जाल : मूली का पानी, आंख का जाला व धुंध को दूर करता है।

श्वास : मूली का 500 मिलीग्राम से 2 ग्राम क्षार 1 चम्मच शहद में मिलाकर दिन में 3–4 बार चाटने से श्वांस रोग में आराम होता है।

हिचकी व श्वास : मूली का यूष पीयें। सूखी मूली का क्वाथ 50 से 100 ग्राम तक एक–एक घंटे पर पिलावें।

वातजकास : मूली का शाक खायें।

पाचन : मूली का प्रयोग भोजनोपरांत करना चाहिये, भोजन से पहले यह पाचन में भारी, और भोजन के बाद भोजन को पचाती है।

अम्लपित्त : कोमल मूली को मिश्री मिलाकर खायें अथवा पत्तों के 10–20 ग्राम रस में मिश्री मिलाकर नियमित प्रयोग करना चाहिए।

उदरशूल : मूली के 25 मिलीग्राम स्वरस में आवश्यकतानुसार नमक और तीन–चार काली मिर्च का चूर्ण डालकर 3–4 बार पिलाने से उदरशूल में लाभ होता है।

कामला :

1. मूली के ताजे पत्तों को जल के साथ पीसकर उबाल लें दूध की भांति झाग ऊपर आ जाता है। इसको छानकर दिन में तीन बार पीने से कामला रोग मिटता है।
2. मूली स्वरस पत्तों सहित निकालें, दिन में तीन बार 20–20 ग्राम पीने से पाण्डु रोग में लाभ होता है।
3. 70 ग्राम मूली स्वरस में 40 ग्राम शक्कर मिलाकर पीना लाभ करता है।
4. पत्र स्वरस 60 ग्राम व खाड़ 15 ग्राम मिलाकर पीयें।
5. मूली की सब्जी का सेवन करने से सभी पीलिया और कामला रोग मिटता है।

जलोदर : मूली का रस 60 ग्राम सुबह के वक्त लेना जलोदर रोग में लाभदायक है।

यकृत प्लीहा रोग : मूली की चार फांक करके चीनी के बरतन में छह ग्राम पिसा नौसादर छिड़क कर रात को ओस में रखकर सुबह जो पानी निकले उसको पीकर ऊपर से मूली की फांके खालें, सात दिन में रोग कट जाता है।

Scanned by CamScanner

**मूली के बीज** : एक ग्राम सुबह शाम खाने से जिगर तिल्ली के रोग कटते हैं।

**रक्तार्श**

1. मूली के कन्दों का ऊपर का सफेद मोटा छिलका उतारकर तथा पत्तो को अलग कर रस निकाले, इसमें छह ग्राम घी मिलाकर नित्य सुबह–सुबह सेवन करने से रक्तार्श दूर हो जाता है व रक्तार्श में लाभ होता है।
2. फिटकरी 10 ग्राम को मूली की शाखों का रस एक किलोग्राम में उबाले, गाढ़ा होने पर बेर के समान गोलियां बना लें। एक गोली मक्खन में लपेटकर निगलवा देवे। ऊपर से 125 ग्राम दही पिला दें, रक्तार्श पर उत्तम योग है।

**मूत्रकृच्छ विकार** :

1. मूत्रकृच्छ की खराबी से यदि पेशाब बनना बंद हो जाये तो मूली का 20–40 ग्राम रस दिन में दो–तीन बार पीने से फिर से बनने लगता है।
2. मूत्राघात रोग में मूली खाने से बंद पेशाब फिर से जारी हो जाता है।
3. मूली के पत्तो के 10–20 ग्राम रस में 1–2 ग्राम कलमी शोरा मिलाकर पिला देने से मूत्र साफ आ जाता है।
4. गुर्दे के दर्द में कलमी शोरा 10 ग्राम, 120 ग्राम मूली के रस में घोंटकर रस सुखा दें, गोलियां बनाकर 1–2 गोली दिन में दो बार सेवन करें।

**पथरी** :

1. मूली की शाखों का रस 100 ग्राम निकाल के दिन में 3 बार पीने से पथरी के टुकड़े हो जाते हैं।
2. मूली के पत्तों के 10 ग्राम रस में 3 ग्राम अजमोद मिलाकर दिन में तीन बार पीने से पथरी गल जाती है।
3. मूली में गड्ढा कर उसमें शलगम के बीज डालकर गुंथा हुआ आटा ऊपर लपेटकर अंगारों पर सेंक लें, जब भरता हो जाये या पक जाये तब निकाल कर आटे को अलग करके खा लें। इससे पथरी के टुकड़े–टुकड़े होकर निकल जाते हैं।
4. मूली के बीजों को 1 से 6 ग्राम तक दिन में तीन से चार बार लेने से मूत्राशय की पथरी गल जाती है।

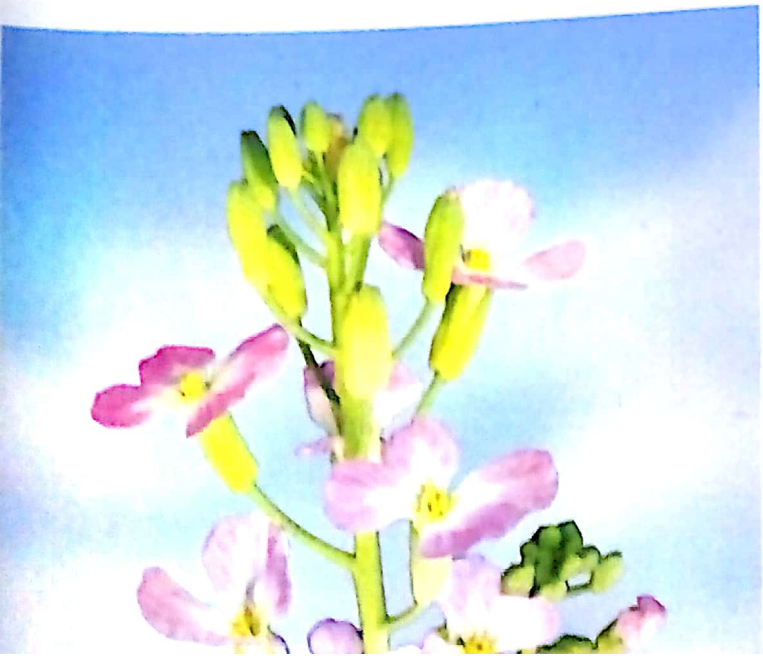

**अतिसार** : कोमल मूली के 40–60 ग्राम क्वाथ में 1–2 ग्राम पीपर का चूर्ण मिलाकर पिलावें।

**इन्द्रिय शैथिल्य** : मूली के बीजों को तेल में औटाकर उस तेल की कामेन्द्रिय पर मालिश करने से कामेन्द्रिय की शिथिलता दूर होकर उसमें उत्तेजना पैदा होती है।

**मासिक धर्म** : इसके बीजों के चूर्ण को 3 ग्राम की मात्रा में देने से मासिक धर्म की रूकावट मिटकर मासिक धर्म साफ होता है।

**सुजाक** : मूली की चार फांके करके उन पर भूनी फिटकरी का चूर्ण छह ग्राम छिडक कर रात्रि में ओस में रख देवें। सुबह वे फांके खाकर ऊपर से जो पानी निकला है, इसे पी लेवें। इससे सुजाक में लाभ होता है और पथरी गल जाती है।

**बवासीर** :

1. बवासीर और उदरशूल को दूर करने के लिये यह एक मशहूर औषधि है। बवासीर में इस की सब्जी बनाकर खाने से आराम मिलता हैं।
2. मूली का 20 ग्राम रस निकालकर उसमें 50 ग्राम गाय का घी मिलाकर सेवन करने से कुछ ही दिनों में बवासीर नष्ट हो जाता है।
3. मूली के पत्तों को छाया में सुखाकर, पीसकर समान मात्रा में शक्कर मिलाकर 40 दिन तक 25 से 50 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से बवासीर में लाभ होता है।
4. सूखी मूली की पुल्टिस करके मस्से पर सेक करना चाहिए।
5. अर्श में सूखी मूली का 20–50 ग्राम यूष, पानी अथवा बकरी के मांस यूष में मिलाकर पियें।

**सूजन** :

1. 5 ग्राम तिलों के साथ मूली के एक से दो ग्राम बीजों का सेवन दिन में दो–तीन बार करने से सब प्रकार की सूजन मिट जाती है।
2. इसके ताजे पत्तों का रस मूत्रल और मृदु विरेचक होता है।

**लकवा** : मूली का 20–40 मिलीलीटर तेल लकवा रोग में दिन में तीन बार पीने से लाभ होता है।

**ग्रन्थि विसर्प में** : सूखी मूली की लुग्दी को कुछ गरम करके लेप करें।

**सिध्म कुष्ठ** : मूली के 10–20 ग्राम बीज बहेड़ा के पत्तों के रस में पीसकर लगाने से लाभ होता है।

**दाद** : मूली के बीजों को नींबू के रस में पीसकर लगाने से दाद में लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

# 89 मुलेठी जेष्टमध

| | | |
|---|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : | *Glycyrrhiza glabra* L. |
| कुलनाम | : | Papilionaceae |
| अंग्रेजी नाम | : | Liquorice root |
| संस्कृत | : | मधुयष्टिका, यष्टीमधु, मधुक |
| हिन्दी | : | मुलेठी |
| गुजराती | : | जेठीमध, |
| बंगाली | : | यष्टिमधु |
| पंजाबी | : | मुलहटी |
| फारसी | : | बिखेमहक |
| अरबी | : | अस्लुस्सूस |
| तैलगु | : | यष्टिमधुकम् |
| मराठी | : | जेष्टिमध |

## परिचय

मुलेठी से सब परिचित हैं। भारतवर्ष में इसका उत्पादन कम ही होता है। यह अधिकांश रूप से विदेशों से आयातित की जाती है। मुलेठी की जड़ एवं सत् मुलेठी सर्वत्र बाजारों में पंसारियों के यहाँ मिलती है।

## रासायनिक संघटन

मुलेठी में ग्लिसिराइजिन नामक मधुर सत्व तथा शर्करा, सुक्रोज एवं डेक्स्ट्रोज, स्टार्च, प्रोटीन, बसा रेजिन एवं ऐस्पेरिगिन आदि तत्व पाये जाते है।

## गुण–धर्म

मुलेठी वात पित्तशामक, बाह्यलेप – वर्ण्य, कंडूघ्न, चर्मरोग नाशक, केश्य, शोथहर है। आंतरिक प्रयोग में वातानुलोमन, मृदुरेचन, शोणित स्थापन। मूत्रल, मूत्र विरंजनीय एवं मूत्रमार्ग स्नेहन। कफ निःस्सारक एवं कंठ्य। चक्षुष्य। शुक्रवर्धक, जीवनीय, रसायन एवं बल्य।' ज्वरघ्न, मुलेठी, नागरमोथा, हरड़ ये सब आम अतिसार

Scanned by CamScanner

नाशक एवं दोषों का पाचन करने वाले है।[2] मुलेठी, पाठा, वंशी कटेरी ये सब पित्त वायुनाशक, कफ अरूचि, हृदय रोग, मूत्रकृच्छ की पीड़ा को दूर करते है।[3] मुलेठी, गिलोय ये सब पित्त रक्त वायु के नाशक है, वृंहण, वृष्य हैं, दूध एवं कफ, केशवर्धक हैं।[4] मुलेठी, सारिवा, लालचन्दन, ये सब पित्त ज्वरनाशक तथा खासकर दाह को नष्ट करने वाले है।[5]

## औषधीय प्रयोग

शिरोवेदना : किसी भी प्रकार की शिरोवेदना में मुलेठी का चूर्ण एक भाग, इसका चौथाई भाग कलिहारी का चूर्ण तथा थोडा सा सरसों का तेल मिलाकर नासिका में नसवार की तरह सूंघने से लाभ होता है।

नेत्र : मुलेठी के क्वाथ से नेत्रों को धोने से नेत्रों के रोग दूर होते है। इसकी जड के चूर्ण में बराबर मात्रा में सौंफ का चूर्ण मिलाकर एक चम्मच प्रातः–सायं खाने से आखों की जलन मिटती है तथा नेत्र ज्योति बढ़ती है।

नेत्राभिष्यन्दः मुलेठी को पानी में पीसकर, उसमें रुई का फोहा भिगोकर नेत्रों पर बांधने से नेत्रों की लालिमा मिटती है।

मुंह के छालेः मुलेठी की जड़ का टुकड़ा शहद लगाकर चूसते रहने से लाभ होता है।

स्वरभेदः स्वर भंग में मुलेठी को मुंह मे रखकर चूसने से लाभ होता है।

वर्ण्यः मुलेठी को पानी में पीसकर शरीर पर लेप करने से शरीर की रंगत निखरती है।

केश्यः

1. मुलेठी के क्वाथ से बाल धोने से बाल बढ़ते हैं।
2. मुलेठी एवं तिल को भैंस के दूध में पीसकर सिर पर लेप करने से बालों का झड़ना बन्द हो जाता है।

अपस्मारः मुलेठी के 1 चम्मच महीन चूर्ण को घी में मिलाकर दिन में 3 बार चटाने से लाभ होता है।

स्तन्यालपता : 2 चम्मच मुलेठी का चूर्ण और 3 चम्मच शतावर का चूर्ण एक कप दूध में उबालें, जब दूध आधा रह जाये तो आग पर से उतार लें। इसमें से आधा सुबह और आधा शाम को एक कप दूध के साथ सेवन करें। कुछ दिनों में ही दूध अधिक आने लगेगा।

तृषाः मुलेठी को चूसने से प्यास मिटती है।

हृदयरोगः मुलेठी तथा कुटकी का चूर्ण जल के साथ सेवन करने से लाभ होता हैं।

कासः खांसी में मुलेठी का टुकड़ा मुंह में रखकर चूसने से राहत मिलती है।

शुष्क कासः सूखी खांसी में कफ पैदा करने से लिये इसकी 1 चम्मच मात्रा को मधु के साथ दिन में 3 बार चटाना चाहिये। इसका 20–25 ग्राम क्वाथ प्रातः–सायं पीने से श्वास नलिका साफ हो जाती हैं।

अल्सरः उदर और आंत के घाव में इसकी जड़ का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में एक कप दूध के साथ दिन से 3 बार सेवन

Scanned by CamScanner

करते रहने से अल्सर कुछ ही हफ्तों में भर जायेगें। मिर्च मसालों से परहेज रखें।

उदरशूल : पेट और आंतों की ऐंठन व क्षोभ से उत्पन्न दर्द में जड़ का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में शहद के साथ दिन में 3 बार सेवन करें।

हिचकी : मुलेठी को चूसने से हिचकी दूर होती है।

रक्तपित्त जन्य वमन :

1. मुलेठी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, मैनफल, समान भाग लेकर चूर्ण करें। इस चूर्ण के 1 चम्मच को 3–5 ग्राम मधु के साथ मिलाकर दिन में 3 से 4 बार सेवन करने से रक्तपित्त की वमन मिटती है।
2. 3–5 ग्राम मुलेठी का नियमित प्रातः–सायं प्रयोग करने से रक्तपित्त शान्त होता है, रक्त विकार और रक्ताल्पता मिटती है।

रक्तवमन :

1. रक्तवमन में मुलेठी तथा चन्दन को अच्छी तरह दूध में पीस कर 1–2 चम्मच की मात्रा में पिलाने से उल्टी में रूधिर आना बन्द हो जाता है।
2. एक चम्मच मुलेठी जड़ का चूर्ण शहद के साथ सुबह–शाम लेने से रक्त वमन में लाभ होता है।

उदराध्मान : 2–5 ग्राम मुलेठी चूर्ण जल और मिश्री के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

मूत्रदाह : मुलेठी का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में एक कप दूध के साथ लें।

कामला : पाण्डु रोग में एक चम्मच मुलेठी चूर्ण मधु के साथ मिलाकर, या इसका क्वाथ पीने से लाभ होता है।

वातरक्त : वातरक्त में मुलेठी तथा गंभारी से सिद्ध किये हुये तेल की मालिश करने से लाभ होता है।

दौर्बल्य : एक चम्मच मुलेठी का चूर्ण आधा चम्मच शहद और एक चम्मच घी मिलाकर एक कप दूध के साथ सुबह शाम रोजाना 5–6 हफ्ते तक सेवन करने से बल बढ़ता है।

गर्भशोष : गर्भस्थ शिशु सूखता जा रहा हो तो ऐसी अवस्था में गंभारी फल, मुलेठी एवं मिश्री समभाग 15–20 ग्राम मात्रा को प्रातः–सायं दूध में उबालकर नियमित गर्भवती महिला को पिलाना चाहिये।

व्रण वेदना : शस्त्र के घाव के कारण उत्पन्न हुई तीव्र वेदना रोगी को कष्ट देती रहती है। यह वेदना मुलेठी के चूर्ण को घी में मिलाकर थोड़ा गरम करके लगाने से शीघ्र शान्त होती है।[2]

दाहः लाल चन्दन के साथ मुलेठी घिस के लगाने से दाह मिटती है।

फोड़ेः फोड़ों पर इसका लेप लगाने से वे जल्दी पककर फूट जाते है।

1. यष्टी हिमा गुरुः स्वाद्वी, चक्षुष्या बलवर्णकृत्।
सुस्निग्धा शुक्रला केश्या स्वर्या पित्तानिलास्रजित्।।
व्रणशोथविषच्छर्दि तृष्णाग्लानिक्षयापहा। (भाव प्रकाश)

2. या वेदना शस्त्रनिपातजाता तीव्रा शरीरं प्रदुनोतिजन्तोः।
घृतेन सा शान्तिमुपैति सिक्ता कोष्णेन यष्टीमधुकान्वितेन।।
(सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

# नागरमोथा

१०

| | | |
|---|---|---|
| वैज्ञानिक नाम | : | Cyperus rotundus L. |
| कुलनाम | : | Cyperaceae |
| अंग्रेजी नाम | : | Nut grass |
| संस्कृत | : | मुस्तक, चारिन, कचरुहा |
| हिन्दी | : | नागरमोथा |
| गुजराती | : | मोथ, नागरमोथ |
| बंगाली | : | मुथा, नाग्मुता |
| तमिल | : | मुथाकच, कोरइ |
| तेलगु | : | तुंगमुस्ते, नागरमुस्तेलु |
| द्राविडी | : | कोरककइंग |
| मराठी | : | मोथ |
| कन्नड | : | कोन्नारि |
| अरबी | : | सोअद् कूफी |

## परिचय

नागरमोथा समस्त भारत के जलीय तथा आर्द्र प्रदेशों में 6 हजार फुट की ऊँचाई तक होता है। यह अधिकांशत: नालों और नदियों के किनारे नमी वाली भूमि में पैदा होता है। पुष्प जुलाई में तथा फल दिसम्बर में लगते हैं।

## वाहा–स्वरूप

इसकी बहुवर्षीय, तृणजातीय, छोटी सी झाड़ी 1–3 फुट तक ऊंची होती है। पत्र लम्बे पतले भूमिगत कांड से निकलते है। भूमिगत कांड में आधा इंच व्यास के अंडाकार सुगन्धित बाहर से पीत वर्ण के परन्तु अन्दर से श्वेत वर्ण के अनेक कन्द लगे रहते हैं।

## रासायनिक संघटन

इसके कन्द में एक सुगन्धित तेल और एक सुस्वादु तेल होता है। इसके अलावा प्रोटीन स्टार्च और अन्य कार्बोहाइड्रेट भी होते हैं।

## गुण–धर्म

नागरमोथा, चरपरा, शीतल, कड़ुआ, करौला, हल्का रूक्ष और

Scanned by CamScanner

कफ–पित्त–रूधिर विकार, तृषा, ज्वर, अरुचि तथा कृमिनाशक है।[1,2] इसका लेप शोथहर तथा स्तन्यजनन है। यह चर्मरोग नाशक, ज्वरघ्न, विषघ्न, बल्य, गर्भाशय संकोचक, स्तन्यशोधन और मूत्रल है। यह मेध्य और नाड़ियों के लिये बल्य है। मुस्ता संग्राहक तथा दीपन पाचन द्रव्यों में सर्वोत्तम माना गया है।[3]

## औषधीय प्रयोग

मिर्गी : इसको उत्तर दिशा की तरफ से पुण्य नक्षत्र में अच्छे दिन में उखाड़ कर ऐक रंग की गाय के दूध से पिलाने से मिर्गी रोग में लाभ मिलता है।

स्त्री दूध शुद्धि : इसको जल में उबालकर पिलाने से स्त्रियों का दूध बढ़ता है और दूध शुद्ध होता है।

क्षयज : मोथा, पिप्पली, मुनक्का तथा बड़ी कटेरी के अच्छे पके फलों को बराबर–बराबर मात्रा में लेकर भली प्रकार घोटकर घी और मधु के साथ चाटने से क्षयकास शान्त होता है।[4]

तृषा : मोथा तृषानाशक है। जिस ज्वर में बार–बार प्यास लगती है उसमें नागरमोथा, पित्तापापड़ा, उशीर (खस), लाल चन्दन, सुगन्ध वाला सौंठ इन द्रव्यों को डालकर क्वाथ किये जल को शीतल करके रोगी को प्यास तथा ज्वर की शान्ति के लिये पिलाना चाहिये।[6]

अग्निवर्धक : इसकी जड़ अग्निवर्धक और हृदय के लिए हितकारी है।

उदर कृमि : इसकी चूर्ण की अधिक मात्रा लगभग 10–20 ग्राम देने से पेट के कीड़े मरते हैं।

आम पाचन : नागरमोथा, सौंठ, अतीस इनका क्वाथ आम का पाचन करता है, अथवा नागरमोथा, अतीस, हरड़ चूर्ण अथवा सौंठ का चूर्ण गर्म पानी के साथ सेवन करने से आम का पाचन होता है।[10]

अरूचि ज्वर : नागरमोथा 10 ग्राम तथा पित्तापापड़ा 10 ग्राम दोनों का क्वाथ बनाकर प्रातः–सायं भोजन से 1 घण्टा पहले पीने से ज्वर का नाश होता है। अग्नि प्रदीप्त होती है। तृषा तथा भोजन के प्रति अरूचि का नाश होता है।[6]

वमन : नागरमोथा, इन्द्रजौ, मैनफल तथा मुलेठी इन सब को समान मात्रा में लेकर कूट पीसकर कपड़छन करने के बाद चूर्ण में मधु मिलाकर सेवन करने से वमन होता है।[7]

दस्त आंव : नागरमोथा के 1 भाग में 3 भाग पानी डालकर पकायें, जब केवल दूध मात्र शेष रह जाये तो इस दूध के 200 मि.ली. सुबह, दोपहर तथा शाम को सेवन से आंव के दस्त बंद होते हैं।

अतिसार : संकोचक होने के कारण इसकी जड़ का प्रयोग प्रवाहिका तथा अतिसार में लाभदायक है।[11]

हलीमक : हलीमक को नष्ट करने के लिये नागरमोथा चूर्ण 3–6 ग्राम में 125 मिलीग्राम लौह भस्म मिश्रित कर फंकी लेवे, ऊपर से खैर सार का काढ़ा पीना चाहिये।

मासिक धर्म : नागरमोथा को पीसकर गुड़ मिलाकर गोलियां बनाकर खाने से स्त्रियों का मासिक धर्म ठीक होने लगता है।

सुजाक : मूत्रल होने के कारण सुजाक के रोग में इसका क्वाथ लाभदायक होता है।

उपदंश : उसवे के साथ इसको जोश देकर पीने से उपदंश में लाभ होता है।

प्रमेह : नागरमोथा, दारूहल्दी, देवदारू, त्रिफला इन चारों पदार्थों को समान मात्रा में लेकर इनका क्वाथ बनाकर प्रमेह के रोगी प्रातः–सायं देना चाहिए।[9]

वातरक्त : नागरमोथा, हल्दी, आंवला इन तीनों का क्वाथ बनाकर शीतल होने पर मधु मिश्रित कर सेवन करने से वात रक्त रोग से मुक्ति प्राप्त होती है।

रक्तपित्त : नागरमोथा, सिंघाड़ा, धान का लावा, खजूर, कमल, केशर को समान भाग लेकर 3 ग्राम चूर्ण की मात्रा को मधु के साथ रक्त पित्त के रोगी को दिन में तीन से चार बार चटाने से लाभ होता है।[8]

ज्वर :

1. नागरमोथा और गिलोय का क्वाथ पिलाने से ज्वर छूट जाता है।
2. नागरमोथा और पित्तपापड़े का क्वाथ या फांट 20–40 ग्राम की मात्रा में पिलाने से शीत ज्वर छूटता है और पाचक शक्ति बढ़ती है।
3. नागरमोथा, सौंठ तथा चिरायता 10–10 ग्राम लेकर क्वाथ बना लेना चाहिये। यह क्वाथ कफ, वात, आम तथा ज्वर को नष्ट करता है। तथा पाचन क्रिया को बढ़ाता है।

पिड़िका : नागरमोथा, मुलेठी, कैथ की पत्ती, लाल चंदन को समान भाग लेकर पीस कर लेप लगाने से पिड़िकाएं शांत हो जाती है।

जोंक : नागरमोथा के कन्द को मुंह में रखने से अगर कंठ में जोंक चिपक गई हो तो निकल जाती है।

व्रण : फैलने वाले व्रणों पर इसके चूर्ण को लगाने से व्रण फैलते नहीं। इसकी ताजी जड़ को घिसकर गाय का घी मिलाकर घाव पर लगाने से घाव ठीक हो जाता है।

स्वेदजनन : इसकी मूल और कंद दोनों के क्वाथ के सेवन से पसीना एवं मूत्र आता है तथा मुख से लार गिरना बंद हो जाता है।

अन्य रोग :

1. वायबिडंग, नागरमोथा, ये दोनों 75–75 ग्राम लेकर चूर्ण बना लें, इसमें दुगनी मात्रा में मंडूर लेकर आठ गुने गोमूत्र में पकाएं, जब रस गाढ़ा हो जाये तो 2 चम्मच की मात्रा मट्ठे के साथ सुबह–शाम खाने से पांडुरोग, मंदाग्नि, अरूचि, बवासीर, संग्रहणी, कृमि, प्लीहा, उदर रोग, गलरोग, सब मिट जाते हैं।
2. शुंठी, काली मिर्च, पीपल, हरड़, बेहड़ा, आमला, नागरमोथा

Scanned by CamScanner

बायविडंग, चंदन, चित्रक, दारूहल्दी, सोना माखी, पीपलामूल, देवदारू, सभी की 50–50 ग्राम मात्रा लेकर इनका अलग–अलग महीन चूर्ण करें, इन सबके बराबर दुगनी मात्रा में महीन शुद्ध मंडूर लेकर पहले मंडूर को आठ गुने गोमूत्र में पकाकर फिर सब औषधियां डालकर गूलर के फल जितनी गोलियां बनायें, रोगानुसार योग्य मात्रा में रोगी को दें व डकार बंद हो जाने पर पथ्य देना चाहिए। यह मंडूरवटी पांडुरोगी को प्राण देने वाली है। कुष्ठ, अजीर्ण, शोथ, स्तंभ, कफ के तमाम रोग, बवासीर, कामला, मेद और प्लीहा का भी नाश करती है।[12]

3. अदरक और नागरमोथा को पीसकर मधु के साथ 250 मिलीग्राम चटाने से आम अतिसार मिटता है।

4. ताजे नागरमोथा को पीसकर स्त्री के स्तनों पर लेप करने से स्तन्य दुग्ध में वृद्धि होती है।

5. तक्र के साथ नागरमोथा के चूर्ण की फंकी देने से मूत्रवृद्धि होती है।

स्वानुभूत प्रयोग : राजस्थान में भरतपुर जिला में बयाना एक जगह है, वहां हम लोग एक योग शिविर में गये हुए थे वहां पता चला कि यहां एक व्यक्ति घुटने के दर्द का कैप्सूल देता है और उससे रोगी ठीक हो जाता है। उनसे सम्पर्क किया तो पता चला कि वह केवल नागरमोथा मूल कैप्सूल में भर कर देते थे। हमने जब यहां रोगियों पर यह प्रयोग किया तो पाया कि उससे तुरन्त आराम मिलता है।

1. मुस्तं हिमं कटु ग्राहि तिक्तं दीपनपाचनम्।
कषायं कफपित्तास्रतृड्ज्वरारूचिजन्तुहित्।। (भाव प्रकाश)

2. मुस्ता तिक्तकषायातिशिशिरा श्लेष्मरक्तजित्।
पित्त ज्वरातिसारघ्नी तृष्णाकृमिविनाशिनी।। (ध०नि०)

3. मुस्ता संग्राहकदीपनीयपाचनीयानाम्। (चरक)

4. क्वाथश्च मुस्तककृतः समधुः सुशीतः पीतः
प्रवृद्ध– मतिसारगदं निहन्ति।। (वंगसेन)

5. श्वेत वर्षाभुवो मूलं वरूणकस्य च।
जलेन क्वथितं पीतमपक्वं विद्रधिं जयेत्।। (भैषज्य रत्नावली)

6. मुस्तपर्पटकोशीरचंदनोदीच्यनागरैः।
शृतशीतं जल दद्यात् पिपसाज्वर शांतये।। (चरक)

7. सनागरं पर्यटकं पिबेद् वा सदुरालभम्।। (चरक)

8. शृंगार काना लाजानां मुस्तखर्जूरयोरपि।
लित्थाच्चूर्णानि मधुनां पद्यानां केसरस्य च।। (चरक)

9. दार्वी सुराह्वां त्रिफलां समुस्तां कषाय मुत्क्वाथ्य पिवेत प्रमेहि।
क्षौद्रेण युक्तामथवा हरिद्रां पिवेद् रसेनामलकी फलानाम्।। (चरक)

10. नागराति विषा मुस्त क्वाथः स्यादाम् पाचनः।
मुस्तात कटकः पथ्या वा नागरचोष्णा–वारिणा।। (चरक)

11. बिडंग मुस्त युक्ता च भागा स्त्रिपल सिम्मिता।।
दावंत्येतानि चूर्णानि भंडूरं द्विगुणां तत।
पक्वा चाष्ट गुणों मूत्रे धनीक्षृते तद्धुरेत।
ततो उक्ष मात्रान् बटकान् पिबेत्त केन तत्रश्रुक्र।
पांडुरोग जयत्युग्न मंदाग्नित्वमरोचकम।।
अशीर्स ग्रहणी दोषान् उरूस्तंभ मथापिबा।
कृमिप्लीहान मुदरं गल रोग च नाशयेत।
मंडूर बज्रनामोऽयं रोगानीक प्रणाशनः।।

12. त्रयूषणां त्रिफला मुस्तं बिडंगं चव्य चित्रकम्
दार्वीत्वक माक्षिको धातु ग्रंथिकं देवदारू चं।।
एषां द्विपालिकाना भागान चूर्ण कृत्वा पृथक–पृथक।
मंडूर द्विगुणां चूर्णात शुद्धभजन सन्निमम् ।।
मूत्रे चाष्ट गुणों पक्वा तस्मिंतु, प्रक्षिपेत्तत।।
उडुंम्बरसमा कुर्य्या हटकास्तां यथाग्नि तु।।
उपयुंजीव तक्रेणा सात्मे जीर्णो तु भोजनं
मंडूर बाटका होते प्रशादा पांडुरोगिणाम्।।
कुष्ठान्य जीर्णकं शोथ मुरूस्तंम्य कफामयान्
अर्शीसि कामलां भेदं प्लीहान शमयंति च।।
(भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner